शहीद गाथा
सुरजीत सिंह जोबन

शहीद गाथा

प्रकाशक : अहिन्दी भाषी हिन्दी लेखक संघ
दिल्ली–110035

शहीद गाथा

संस्करण - 2019

प्रकाशक और वितरक :
अहिन्दी भाषी हिन्दी लेखक संघ
दिल्ली-110035

मूल्य : 250/-

SHAHEED GATHA
by : Surjeet Singh Joban
Price : Rs. 250.00

अपने स्वर्गवासी पिता ज्ञानी अमर सिंह जोबन
जो स्वयं स्वाधीनता सेनानी भी थे
और स्वर्गवासी माता अमर कौर जी जिन्होंने
अमर शहीदों का इतिहास सुना-सुनाकर
मुझे इस योग्य बनाया कि मैं शहीदों
के इतिहास पर अपनी कलम चला सकूं,
उनका कोटि-कोटि धन्यवाद
व कोटि-कोटि नमन।

-सुरजीत सिंह जोबन

आत्मकथ्य

जहां देश की आजादी के लिए शहीदों को फांसियां दी जाती है, उन्हें तोपों से उड़ाया जाता है और जहां स्वतन्त्रता के मतवालों का रक्त गिरता है उस स्थान पर कालान्तर में याद में मेले सजते हैं, स्मारक बनते हैं और वहां की पवित्र माटी को मस्तक पर लगाने से गर्व की अनुभूति होती है। सिर शान से ऊंचा हो जाता है। अंग्रेजीसाम्राज्य से जो टकराता था उसके पास साधनों की कमी होती थी पर उनके पास फौलादी हिम्मत होती थी दृढ़ता होती थी कि वह साधन सम्पन्न और शक्तिशाली साम्राज्य से टकरा जाते थे। तब शासन का दमनचक्र बुरी तरह से चलता। दमनचक्र चलाने वाले बड़ी संख्या में होते हैं और जिनका दमन किया जाता है ये लोग संख्या बल में बहुत कम होते थे पर फिर भी डरते नहीं थे। ये आजादी के मतवाले मौत को एक उत्सव की भांति मानते थे। और शासन इसी बहाने से बाकी जनता को आतंकित करने के सभी उपाय अपनाता रहता था।

शासन को ये फिक्र है, देखें नई तर्जे जफा क्या है।

और वीरों को ये शौक है देखें जुल्म की इन्तहा क्या है।।

17-18 जनवरी के दिनों में ठण्ड भी बहुत पड़ती है साथ में ही इन दिनों में बारिश भी होती है। जो ठण्ड को और भी बढ़ा देती है। वैसे भी जनवरी माह की सर्दी भंयकर ही मानी जाती है। शासन के सभी रक्षकों ने गर्म कपड़े पहन रखे थे। वहीं शासन के इन बागियों के पास सर्दी से बचाव के लिए गर्म कपड़े भी नहीं थे पर इनकी फौलादी हिम्मत और अपने गुरु का आर्शीवाद इनकी सर्दी और भय से रक्षा करता है। इन सभी के चेहरे गुलाब के फूलों की भांति खिले हुए थे। सभी को शहादत का जाम पीने की मस्ती थी और जल्दी थी। किसी के चेहरे पर शिकन तक नहीं थी। किसी शायर ने लिखा भी है -

वतन की राह में वतन के नौजवां शहीद हो।

पुकारते है ये जमीं ये आसमां शहीद हो।।

सरकारी दस्तावेजों में इन बागियों की संख्या 120 बताई जाती है पर शासन की ओर

ऐसा विवरण भी मिलता है कि तोपों से उड़ने वाले एक ही परिवार के तीन-तीन या दो-दो सदस्य भी थे। इतना जुल्म होने के बावजूद इन परिवारों ने उफ तक नहीं की। इन सभी का न घर-घाट रहा न कोई सम्पति रही। सरकारी कुर्की के समय घर की कोई वस्तु भी नहीं छोड़ी गई। उस परिवार के अलावा उनके सम्बन्धियों को भी नहीं छोड़ा गया। उन पर भी मनचाहा जुल्म किया गया।

इतना होने पर ये सभी सतगुरु राम सिंह जी के सत्याधारित नियमों व सिद्धान्तों का पालन करते रहे। सतगुरु जी के उपदेशों को प्राणप्रण से निभाया। स्वदेशी और बहिष्कार के कार्यक्रम को पूरी शक्ति से निभाया, शासन का हर स्तर पर असहयोग किया। ये सभी लोग किसी ऊंचे राजघराने से सम्बन्धित नहीं थे, कुछ तो अभी यौवन की दहलीज भी पार नहीं कर सके थे। मातृभूमि की आजादी के लिए बलिदान होने के सिवाय उनका कोई उद्देश्य नहीं था। उन्हें अपने गुरु पर पूरा विश्वास था इसीलिए शासन के प्रत्येक दमनचक्र व जुल्म को सहर्ष मुस्करा कर सहने को तैयार थे।

अंग्रेजी साम्राज्यवाद ने दमन का नया ढंग अपनाया। देश की आजादी के दीवानों को अण्डमान निकोबार में निर्वासित करके देश के लोगों, देश की हवा, देश की मिट्टी से काटने का प्रयास किया था। जो कोई भी वहां अण्डमान द्वीपसमूह में निर्वासित किया गया वह जीवित लौट कर देश वापिस नहीं आ पाया। शायद इसीलिए इसे कालापानी भी कहा जाता है। वहां सबसे बदनाम जेल थी, सेलुलर जेल। यानिकि छोटे छोटे कमरों वाली जेल जो मुश्किल से लम्बाई 7 फुट और चौड़ाई 5 फुट के कमरों की होती थी। अंग्रेजी दमन और आंतक की ये जीती जागती मिसाल आज वर्तमान में भारतीयों के लिए किसी तीर्थ से कम नहीं है। ये कालापानी चेन्ने से 1600 किलोमीटर और कोलकता से भी शायद इतनी ही दूर बंगाल की खाड़ी में स्थित है। ये पोर्ट ब्लेयर नाम का द्वीप भारतीयों के लिए किसी तीर्थ से कम महत्वपूर्ण नहीं है। गेट पर एक शहीद ज्योति सदैव जलती रहती है। गेट के बाहर कुछ महानवीरों की कांस्य प्रतिमाएं भी आकर्षित करती हैं। शीश उनके सम्मुख बरबस झुक जाता है। ये सभी अंग्रेजी अमानवीय जुल्म के सम्मुख शहीद हो गए थे।

हमने देखा कि अंग्रेजी शासकों, अधिकारियों के घर, गिरजाघर, क्लब, घोबीघाट तथा अन्य स्थान खण्डहर में बदल गए हैं पर सेलुलर जेल पर भारतीय तिरंगा शान से लहरा रहा है।

पंजाब के मलेरकोटले की ये शहीदी घटना नहीं बल्कि इसे जघन्य हत्याकाण्ड

जांच पड़ताल के कोटला के परेड मैदान में देशी रियासतों से तोपें मंगवाकर उन्हें उड़ा दिया। चौकसी के लिए फौजी गार्ड घोड़ों पर पहरा दे रही थी। इस जघन्य हत्याकाण्ड का एक ही मकसद था कि ब्रिटिश सरकार के खिलाफ जाने वालों पर भय बनाया जा सके।

कोटले के मैदान में जो हुआ वह हैरान करने वाला ही था। 1857 की क्रांति के दौरान स्वतंत्रता सेनानियों को तोपों से बांध-बांधकर उड़ाया गया। पर यहां कूका सिंहों ने अपने सतगुरु जी की असहयोग नीति को पूर्णतया अपनाते हुए तोपों से बंध ाकर उड़ना स्वीकार नहीं किया बल्कि तोपों के सम्मुख छाती ठोक कर खड़े होकर शहीद होना स्वीकार किया। भारतीय स्वतन्त्रता अन्दोलन के इतिहास में इसका कोई दूसरा उदाहरण नहीं मिलता। अंग्रेजी सरकार की फौजी टुकड़ी और तोपों को देखकर इनकी आवाज में कम्पन नहीं आई बल्कि ये सब देखकर उन वीरों की फौलादी हिम्मत को और अधिक मजबूती मिली तभी तो वे सिंहों की भांति दहाड़ते हुए नृत्य करते हुए तोपों के सम्मुख आ कर खड़े हो जाते और अंग्रेजी सरकार का मजाक उड़ाते हुए तोपों से पुर्जा-पुर्जा उड़ते हुए और अंग्रेजी कानून को ठेंगा दिखाते रहे।

कहा जाता है कि ईसा मसीह की कुर्बानी के लगभग 400 वर्ष बाद उनके कुछ चाहने वालों ने उनको पहली बार याद किया था लेकिन उन्हीं के पैरोंकारों ने आज फिर कोटला के मैदान में आजादी के लिए लड़ने वालों को मानवता से गिरकर, सत्ता का आंतक दिखा कर, भंयकर सजा देकर ईसा मसीह पर हुए जुल्मों को दोहराने की कोशिश की लेकिन इस घटना ने उनका सिर को ऊंचा नहीं किया बल्कि झुका दिया और वहीं इस कांड के बाद शहीदों की आन-बान और शान बहुत बढ़ गई। आज इतिहास में सजा देने वालों का नाम नफरत के साथ पढ़ा जाता है और इन वीरों का नाम बड़े सम्मान और गर्व के साथ लिया जाता है। सजा देने वालों के नाम इतिहास के किसी कोने में सिमटकर रह गए और तोपों से पुर्जा-पुर्जा उड़ने वाले की याद में शहीदी स्मारक बनाए गए। इन वीरों की याद में आज मेले लगते हैं। सरकारी स्तर पर भी अनेक कार्यक्रम होतें हैं। लोग यहां आकर मस्तक झुकाते हैं, मन्नते मांगते हैं और इन वीरों पर गर्व करते हैं।

इसीं संदर्भ में अकाली नेता स. सिमरन जीत सिंह मान के दादा स. रूढ़ सिंह की बात याद आ जाती है जो अकाल तख्त का सरबराह (जत्थेदार) था और जिसने जलियांवाला बाग के कातिल जनरल डायर को अकाल तख्त पर बुला कर सिरोपाउ

प्रदेश में 50 गांव प्रदान किये गये। शायद इन्हीं लोगों की वजह से देश को आजाद होने में इतना समय लगा

शहीदों का खून बिखरने के पश्चात इस बंजर मैदान की धरती इतनी श्रृद्धामय हो गई, इतनी आस्था से भर गई कि इस स्थान पर आते ही सिर श्रृद्धापूर्वक झुक जाता है। आज इस स्थान पर 66 शहीदों की याद में भव्य स्मारक बना हुआ है। मेले लगते हैं, उत्सव मनाए जाते हैं सदाव्रत लंगर चलता है। इस पुस्तक के जरिये उन महान शहीदों को छोटी सी श्रृद्धाजंलि है।

सन्त महिन्द्र सिंह नामधारी का भी धन्यवाद न किया तो बात अधूरी रह जाएगी। वे बराबर मुझे लेखन के लिए प्रेरणा देते रहे हैं। छाया की भांति मेरे साथ खड़े रहे हैं। उनसे मुझे सदैव एक बड़े भाई का स्नेह मिलता है। वे चैरिटेबल हौम्योपैथिक डिस्पेन्सरियां चलाते हैं व अनथक सेवापंथी हैं।

सुरजीत सिंह जोबन

कूका विद्रोह का सच

भारत की आजादी की लडाई में पंजाब के कूका विद्रोह की एक महत्वपूर्ण भूमिका रही है लेकिन पंजाब के लगभग सभी सिख इतिहासकारों तथा अन्य भारतीय इतिहासकारों ने कूका विद्रोह की महती भूमिका के प्रति आंखें बंद कर के उस पर लिखने का प्रयास ही नहीं किया। अगर कुछ ने प्रयास किया भी है तो कूका विद्रोह को अपने चश्मे से देखने का प्रयास किया और अपनी मर्जी मुताबिक लिख कर इति कर दी। सच्चाई तो ये है कि कूका विद्रोह पंजाब का ऐसा विराट आयोजन था जिसके कारण अंग्रेजी साम्राज्यवाद इतनी बुरी तरह से कांप गया कि उसने अपने ही बनाए कानूनों को घता बताते हुए कूका विद्रोहियों को इतनी जघन्य और भंयकर सजा दे डाली जिस पर मानवता भी कांप उठी।

अधिकतर इतिहासकारों तथा लेखकों ने कूका विद्रोह की तह तक जाने का प्रयास न करते हुए ऊपरी सतह की जानकारी का प्रयोग करके कर्तव्य समाप्ति समझ ली। जब तक सागर के नीचे तक गोता नहीं लगाया जाएगा तब तक मोती या अन्य किसी रत्न की प्राप्ति कैसे हो सकती है। ये तो निर्विवाद सत्य है कि सत्ता प्राप्ति के बाद रणजीत सिंह का व्यवहार अन्तिम मुगल बादशाहों की भांति एय्याश तथा अनैतिक हो गया था। महाराजा रणजीत सिंह, ध्यान सिंह डोगरा और गुलाब सिंह डोगरा के हाथों की कठपुतली बनकर सिखी सिद्वान्तों को तिलान्जलि दे चुका था। ये दोनों डोगरे भाई, देखा जाए तो अंग्रेजों द्वारा किसी घिनौने षड़यत्र के तहत महाराजा रणजीत सिंह के पास भेजे गए थे और इन दोनों डोगरे भाईयों ने धीरे-धीरे धीमे जहर की भांति अपने काम को बाखूबी अंजाम दिया तथा एशिया के सबसे बड़े स्वतन्त्र सिख राज्य को ताश के पत्तों की भांति तहस-नहस कर दिया। इन दोनों भाईयों ने बड़ी घूर्ततापूर्वक भांति-भांति के षड़यंत्र रचकर पुराने स्वामीभक्त सिख सरदारों की हत्याएं करवाई, सिख राज्य के सभी शुभचिन्तकों को खालसा फौज द्वारा आक्रमण करके बेरहती व बेशर्मी से कत्ल करवा दिया। हैरानी होती है कि रणजीत सिंह जो इतने बड़े सिख राज्य का निर्माता था डोगरे भाईयों के षड़यंत्र का मोहरा बन गया, उनके षड़यंत्र को देख नहीं पाया तथा जिस कार्य को सम्पन्न करने के लिए डोगरे भाई लाहौर दरबार में आए थे उसे बाखूबी अंजाम दे दिया और किसी को पता भी नहीं चला। देखते-देखते लाहौर दरबार अंग्रेजी साम्राज्य का भाग बन गया तो अंग्रेजों ने अपने कानून भी लागू किये। पंचायती प्रबन्ध

के स्थान पर ताजीरात हिन्द को लागू किया गया। अंग्रेजी अदालतों का निर्माण किया। बड़े बड़े सिख सरदार अब इसी में अपना भला समझने लगे कि अंग्रेजों की जयनाद में हाथ बांध कर कबूतर उडाए जाएं। गुरु गोबिन्द सिंह जी के सिख जो प्रत्येक अन्याय के विरुद्ध छाती ठोक कर खड़े हो जाते थे वही गुलामी का सुरापान करके अंग्रेजों के गुणगान करने में लग गए।

महाराजा रणजीत सिंह के सिख राज्य की सबसे बड़ी खूबी थी आपसी साम्प्रदायिक भाईचारा यानिकि सभी धर्मो का सम्मान और अपने धर्म के प्रति पक्की आस्था। गऊ वध की सख्त मनाही थी । अंग्रेजों ने सबसे पहले इस आपसी भाईचारे को आपसी ईर्ष्या द्वेष में परिवर्तित करने के तरीके अपनाए। सरकार ने अमृतसर तथा अन्य गुरुद्वारों के पास गाय वध की दुकानें खुलवा दीं। ये भारतीय संस्कृति के रखवाले सिखी के सिद्वान्तों व आदर्शो पर खुला कुठाराघात था पर सिख चुपचाप यह सब देखते रहे। कसाईयों की दुकानें से चील और कौवे मांस के टुकड़े और हड्डियाँ उठाकर गुरुद्वारों के पवित्र सरोवर में डाल देते थे तब पूरी सिख कौम और उसके तथाकथित नेता चुप्पी साधे रहे। मानो उनके लिए कुछ हुआ ही नहीं था अंग्रेजी गुलामी की मीठी नींद का ऐसा नशा इन पर छाया हुआ था कि मौन रहना ही उन्होंने श्रेष्ठकर समझा। अगर ये लोग बोलते या विरोध करते तो जिन सुविधाओं व अधिकारों का वे उपयोग कर रहे थे उनके छिन जाने का भी डर था। ऐसे में गुरुद्वारों की पवित्रता नष्ट होती रही और ये सरदार मौन होकर देख कर चुप रह जाते या मुंह मोड़कर दूसरी तरफ निकल जाते। जैसे उन्होंने कुछ देखा ही नहीं है।

इतिहास का यह अटल सत्य है कि क्रांति की बात जब भी की गई है तो नीचे तबके के लोगों द्वारा की गई है। सुविधा सम्पन्न व अधिकार भोग रहे लोगों ने कभी स्वप्न में भी क्रांति की बात करनी तो दूर, सोची भी नहीं है। क्योंकि सुविधासम्पन्न लोगों को अपनी सुविधाओं और अधिकारों के छिन जाने की चिन्ता होती है और इस चिन्ता के होते ये लोग क्रांति की बात सोच भी नहीं सकते। तत्कालीन शासन से टकराने का स्वप्न भी नहीं ले सकते। अगर ऐसा करते तो उनकी सुविधाएं छिन जाती, अधिकार समाप्त हो जाते, शासन की क्रूरता उन पर और उनके परिवार को तहस-नहस कर देती। उनके घर बार कुर्क हो जाते, सम्पति छीन ली जाती।

ये भी कहा जाता है कि कूकों ने कसाइयों की हत्या करके ठीक नहीं किया। ये लोग तो रोटी के लिए गऊवध कर रहे थे।

गऊवध भारतीय संस्कृति और अस्मिता को सीधी चुनौती थी। गाय पुरातन समय से सम्मान व आस्था की पात्र रही है। कूकों ने कसाइयों की हत्या करके भारतीय अस्मिता की चुनौती को स्वीकार किया। कसाईयों की हत्या परोक्ष रूप से अंग्रेजी शासन को चुनौती थी। जब तथाकथित सिख सरदार अंग्रेजी गुलामी की निद्रा में मदहोश थे और गुरुद्वारों की पवित्रता नष्ट किये जाने से उनकी गैरत को कोई अन्तर नहीं पड़ता था। तब साधारण घरों से निकले कूकों ने कसाईयों की हत्या करके दो काम कर दिखाए। पहला अंग्रेजी शासन को चुनौती दे दी दूसरे गुरुद्वारों की पवित्रता के लिए स्वयं को समर्पित किया। तब गाय को माँ समान मानने वाले कौन सी गुफाओं में छिप गए थे और अन्याय का सामना करने वाले सिख खालसा किस तपसाधना में लीन हो गए थे या मौन साध गये थे ?

हालांकि कूका विद्रोह के नायक सतगुरु राम सिंह जी का इस घटनाक्रम से कोई सीधा वास्ता नहीं था पर कूका विद्रोह के इस नायक ने जो स्वयं साधारण घर से सम्बन्ध रखते थे ने ही र्स्वप्रथम भारतीयों, विशेषया पंजाबियों के गिरते स्वाभिमान को रोकने का सफल प्रयास किया। स्वाभिमानियों, सदव्यवहारियों का, अपनी संस्कृति से प्यार करने वालों, अंग्रेजी कानून को न मानने वालों का एक अहिसंक सम्प्रदाय खड़ा कर दिया जो वेशभूषा से सफेद कपड़े पहनने वाला सीधा सादा पंजाबी लगता था पर व्यवहार से आचार से, नैतिकता में, आचरण में अपनी व्याकरण स्वयं ही समेटे हुए था।

कूका विद्रोह की विराटता से आंखें मूंदने वालों को अपनी आंखें खोलकर इस विद्रोह की महानता को स्वीकार करना चाहिए। केवल ईर्ष्यावश या प्रतिबद्वता के कारण इस विद्रोह की महानता और विराटता को नजरअंदाज नहीं करना चाहिए। एक साधारण परिवार से निकले पूर्व फौजी ने विश्व के सबसे बड़े साम्राज्य के विरुद्व इतने बहुमुखी विद्रोह का आयोजन कर डाला कि सुनकर पढ़कर हैरानी होती है। अचरज होता है।

जितनी बहुपक्षीय प्रतिभा कूका विद्रोह के इस महानायक की थी उससे भी अधिक बहुपक्षीय कूका विद्रोह के विराट आयोजन की योजना थी। इस सत्य को इतिहासकारों को स्वीकार करने में पीड़ा नहीं होनी चाहिए। बल्कि खुले दिल से इसे स्वीकार करना चाहिए। कसाई वध पर आकर ही नजरों को बन्द कर लेना सत्य को स्वीकारना नहीं है।

जब अंग्रेजी साम्राज्यवाद विश्व के विभिन्न नये नये टापुओं में बस्तीवाद को

बढ़ावा दे रहा था, देश के अनपढ़, बेकार लोगों को इन टापुओं पर भेजकर नई बस्तियां बसा रहा था, साम्राज्यवाद को मजबूती दे रहा था, अपनी मातृभूमि से काटकर लोगों को अन्य स्थानों पर बसा रहा था तब ऐसे साम्राज्यवाद के विरुद्ध प्रत्येक वस्तु का प्रत्येक स्तर पर बहिष्कार की योजना को मूर्तरूप देना केवल और केवल कूका विद्रोह के महानायक के सर्वपक्षीय व्यक्तित्व का ही काम था। कितनी बारीकी और सफलता के साथ इस योजना को सफल रूप दिया। क्या यह सत्य इतिहासकारों को हजम नहीं होता?

तब विश्व से किसी नेता या धर्मगुरु या समाज सुधारक ने स्वप्न में ही इस विषय पर नहीं सोचा होगा। तब अमरीका गृहयुद्ध में फंसा हुआ था। लेखकों तथा इतिहासकारों को इस सत्य को स्वीकार करने में पीड़ा क्यों होती है कि कूका विद्रोह के आयोजन की योजना अति विराट तथा बहुमुखी थी कि कोई अन्य व्यक्ति ऐसा सोच भी नहीं सकता था?

अंग्रेजी भाषा और अंग्रेजी वेशभूषा की चमक दमक के आगे भारतीय बौने साबित हो रहे थे उस चमक में अपने आप को समेट लेना भारतीय व्यक्ति अपना सौभाग्य समझने लगे थे। अंग्रेजी भाषा के प्रति उनकी ललक ने भारतीय समाज के भीतर एक ऐसे वर्ग को स्थापित कर दिया जिनके लिए अंग्रेजी भाषा और अंग्रेजों से उपकारी अन्य कोई नहीं था। वे ये भूल गए थे कि लार्ड मैकाले ने बड़े गर्व के साथ ये उद्घोषणा की थी, कि जहां-जहां हमारी भाषा जाएगी ठीक वहां गुलामी के सभी बन्धन और मजबूत होंगे।

उस समय मिशनरी स्कूलों को खोलने की होड़ लगी हुई थी। ईसाई मिशनरियां एक दूसरे से बढ़-चढ़कर मिशनरी स्कूल खोल रहीं थी। इन स्कूलों को सरकारी सहायता भी दी जाती थी। ताकि ईसाई मत का अधिक से अधिक प्रचार-प्रसार हो सके। जितना ईसाई मत का प्रसार होगा, अंग्रेजी सरकार के उतने अधिक स्वामीभक्त मिलेंगे, सरकार को उतनी अधिक मजबूती मिलेगी।

ऐसे में भारतीय जनभाषाओं का, उनके स्कूलों का बुरा हाल हो रहा था। जिसको नौकरी चाहिए, जिसको सुविधाएं चाहिए उनका मुंह मिशनरी स्कूलों की ओर था। बड़े बड़े धनी सरदार भी अपने बच्चों को इन स्कूलों में दाखिल करवा रहे थे। ऐसे में धर्मशालाओं या पेड़ों के नीचे चल रहे देशी भाषा के स्कूल-बुरी तरह से पिछड़ रहे थे। कूका विद्रोह के महानायक ने देशी भाषाओं को संजीवनी प्रदान की। इस सत्य से कौन

इंकार कर सकता है। कूका संगठन में शामिल होने वाले सभी लोगों को अपनी भाषा, जन भाषा को जीवित रखने के आग्रह ही नहीं निर्देश भी दिये गए। पंजाब में गुरमुखी भाषा के ज्ञान पर जोर दिया गया इस सत्य से कौन इंकार कर सकता है कि अपनी भाषा में अपनी संस्कृति, अपनी सभ्यता की रक्षा की जा सकती है। अन्य दूसरी भाषा में ये काम नहीं किया जा सकता। क्योंकि अपनी मातृभाषा अपनत्व के साथ, दुलार के साथ रिश्तों की पहचान करवाती है उसे नाम देती है प्यार करना और सम्मान देना सिखाती है।

साधारण घर से निकले कूका विद्रोह के महानायक की दृष्टि ने इन बातों को समझ लिया था, इसे संगठन के अन्य लोगों को समझा दिया था तब इतिहासकारों को ये तथ्य समझ में क्यों नहीं आया? उनकी समझ पर कैसा पर्दा पड़ गया था। जो व्यक्ति अपने धर्म से कट गया, अपनी भाषा से कट गया, अपने संस्कारों से कट गया, उससे देशभक्ति की कैसे उम्मीद लगाई जा सकती है?

उस समय के सिख सरदारों में तो अंग्रेजी शासन के प्रति स्वामीभक्ति की दौड़ लगी हुई थी। कौन अंग्रेजों की जी हजूरी में कितना आगे बढ़ जाता है, यह उनका सबका मुख्य उद्देश्य रह गया था। सिख सिद्वान्तों को ताक पर रख दिया था। बड़े-बड़े सरदारों का काम अपने बड़प्पन का दिखावा, अपने अधिकार का दिखावा, पाखण्डों का प्रदर्शन करना ही रह गया था। बारातों पर भौंड़ा प्रदर्शन, खुला मांसाहार और सुरापान आम रिवाज सा बन गया था इसी के साथ बाहर से नर्तकियों को बुलाकर नृत्य करवा के बारातियों तथा अन्य मौजूद लोगों का मनोरंजन किया जाता था। ये नृत्य निम्न ढंग का होता था। इसी के साथ इन नाचने वालियों पर नोटों की बरसात करके सम्पन्नता का नग्न प्रदर्शन किया जाता था। कदाचित ये सभी तरह के प्रदर्शन सिख सिद्वान्तों के विरुद्व ही थे पर सुविधासम्पन्न इन सरदारों को इसकी कोई चिन्ता नहीं थी। उन्हें तो चिन्ता थी केवल अपने प्रदर्शन की। इससे पंजाब के जनमानस को सबसे बड़ा नुकसान हुआ।

अमीरों की देखा देखी अन्य लोग भी इस प्रदर्शन की नकल करने लगे। चाहे उन्हें इसके लिए धन जुटाने में अपनी जमीन, अपना मकान, अपने आभूषण ही क्यों न बेचने पड़े। समाज पतन की ओर जा रहा था, मूल्यों में भारी गिरावट आ रही थी नैतिकता का लोप हो रहा था पर इसकी किसी को चिन्ता नहीं थी। इसी कारण समाज में चोरी चकारी बढ़ रही थी। इस ओर किसी नेता का ध्यान नहीं था।

गुरुद्वारों पर कब्जा जमाए महन्त भी उसकी नहीं बल्कि अंग्रेजी शासन की

सलामती मांगते थे। वे सभी जानते थे कि जब तक शासन है तो वे हैं, नहीं तो उन्हें हटना पड़ेगा। गुरुद्वारों में आने वालों को प्रसाद देना या और कुछ देना उनकी इच्छा पर निर्भर करता था। इन सभी का ये मानना था कि अब आराम के दिन काटने का समय है, काफी समय युद्ध करते व्यतीत हो गया है। गुरु गोबिन्द सिंह जी का ये क्रान्तिकारी सिख पराधीनता की नींद को अच्छा समझने लगा था। इस पतन पर इतिहासकारों का मौन कितना अर्थपूर्ण है? क्या कूका विद्रोह पराधीनता की इस पतनशील निद्रा के विरुद्ध भी एक कारगर कदम नहीं था? कूका विद्रोह के महानायक की बहुमुखी दृष्टि ने यह भांप लिया। इसको लेखक किस रूप में देखने का यत्न करेंगे?

सीधी सादी आनन्द मर्यादा परम्परा का प्रारम्भ किया तथा इसी के साथ अर्न्तजातीय आनन्द कारज का श्रीगणेश भी किया गया। पुरातन रीतिनुसार अग्नि के समक्ष चार फेरे पढ़कर विवाह सम्पन्न किया गया। न बारात, न ढोल तमाशा, न नाच-गाना, न नर्तकियों के नृत्य, न मांसाहार न शराब का भोजन। दोनों परिवारों के लोगों को लंगर से प्रसाद ग्रहण करना पड़ता। न किसी पक्ष ने कुछ लिया न किसी पक्ष ने कुछ दिया। इस तरह के विवाह को आनन्द मर्यादा का नाम दिया गया यानि कि दोनों परिवारों के आनन्दमयी अनुभूति के क्षण।

तब विवाहों मे लेन-देन की प्रक्रिया भी होती थी, कई बार एक बेटी जाती थी दूसरे की बेटी ली जाती थी और दी इससे समाज के भीतर कोई स्वस्थ्य परम्परा नहीं पनप रही थी बल्कि एक गलत परम्परा चल रही थी जो कई बार सौदेबाजी पर आधारित होने के कारण तनाव व इर्ष्या का आधार बन गई थी। पर इस ओर किसी का ध्यान नहीं गया, गया भी होगा तो भी इस बिखराव की परवाह नहीं की गई।

कूका विद्रोह की प्रारम्भिक शुरुआत इस सौदेबाजी की परम्परा के विरुद्ध ही थी। उस समय पंजाब में लड़कियों को जन्म लेते ही मार डालने की एक घृणित परम्परा भी चल रही थी। शायद इसी कारण रामगढ़िया मिसल के नेता स. जस्सा सिह रामगढ़िया पर लड़की मारने का आरोप लगाकर दल खालसा से निष्कासित कर दिया गया था।

उस समय सिख सरदारों में ये एक रिवाज सा बन गया था कि लड़की को पैदा होते ही मार दिया जाता था और मृतका को घर के आंगन में ही गाड़ दिया जता था और इस घृणित कार्य के लिए एक नारी को रखा जाता था जिस को बुआ जी कहा जाता था और इस बुआ को मनमांगा धन भी दिया जाता था। इन विपरीत परिस्थितियों में कूका विद्रोह के महानायक ने भ्रूण हत्या के विरुद्ध बेटी बचाओ का शंखनाद किया और पूरे

जोर शोर से इस बात का प्रचार-प्रसार किया। यहीं बस नहीं किया बल्कि बेटियों को पढ़ाने पर भी जोर दिया। आपने लड़की की हत्या को गउवध के बराबर घोषित किया।

बाल विवाह के विरुद्ध प्रचार करते हुए सतगुरु जी ने लड़की की विवाह की आयु 18 वर्ष और लड़के की आयु 20 वर्ष करने का भी प्रचार किया, आदेश भी दिया। लड़कियों को पढ़ाने के विशेष आदेश दिये गये। उनका मानना था कि पढ़ी लिखी मां बच्चों का लालन-पालन भी सही ढंग से कर सकती है। इसी के साथ नारी जाति के उद्धार का एक और कदम उठाया और विधवा विवाह करवाये और अपने सिखों को विधवा विवाह करने व करवाने का आदेश दिया। सती प्रथा के विरुद्ध जोरदार वातावरण बनाया और सती प्रथा पंजाब में लगभग बंद करवा दी। सतगुरु जी ने प्रचारित किया कि जब पुरुष स्त्री की मृत्यु के बाद दूसरा विवाह कर सकता है तो समाज में स्त्री का विध ावा विवाह क्यों नहीं हो सकता ? उन्होंने स्त्री को खुशहाल बनाने, घर को पुन: गुलजार करने का अवसर देते हुए विधवा विवाह का प्रचार ही नहीं किया उसको चलन में भी लाए। इससे नारी को अन्धकार से निकल कर पुन: प्रकाश में रहकर सुख समृद्धि के लिए प्रेरित किया। ये काम एक असाधारण कार्य था।

अब समाज में पुन: खुशहाली का दौर लौट रहा था। और इस कारण समाज में लड़कियों की सौदेबाजी को रोकथाम मिली। नारी जाति को अमृतपान करवा कर पुरुष के समान बराबर खड़ा कर दिया। इससे अधिक सतगुरु जी के मार्ग दर्शन में नारी कुछ कदम आगे बढ़कर प्रचार-प्रचार में लग गई। इस से समाज में समरसता और बराबरी की हवा चल पड़ी। यह कार्य विश्व पटल पर अद्‌भुत और सराहनीय कदम था जिसके कारण पंजाब के वातावरण में परिवर्तन की हवा बह निकली। जो काम कानून बनाकर सफल नहीं हो सका उसे बिना कानून के ही साकार रूप देने में अद्‌भुत सफलता इस महानायक को मिली।

आनन्द मार्यदा एक साफ सुथरी और सीधी सादी परम्परा थी जिसने शीघ्र ही समाज में अपना स्थान बना लिया। विवाह और शादियों के पाखण्ड के नाम पर जमे हुए लोगों द्वारा इसका विरोध करना लाजमी था पर ये सामाजिक क्रान्ति और परिवर्तन के लिए एक बड़ा कदम था जो विराट राजनीतिक घरातल तक पहुंचने का एक उपाय ही था। इस बहुमुखी प्रतिभा के महानायक का राजनीतिक घरातल तक पहुंचने का यह भी एक पक्ष माना जा सकता है। सामाजिक दृष्टि से पतनशील और स्वार्थी लोग राजनीतिक घरातल की पकड़ में कमजोर साबित हो सकते थे। क्या इस अटल सत्य की ओर से आंखे मूंदने से इतिहास लेखक को सही माना जा सकता ? हमारी उस सम्प्रदाय या वर्ग

से ईर्ष्या हो सकती है, उस सम्प्रदाय या वर्ग या समूह से हमारी अनबन हो सकती है, आस्था के विपरीत चिन्तन हो सकता है पर इसे केन्द्र बना कर इतिहास को एक आंख से लिखने की जिद करके आने वाली पीढ़ियों को सही परिपेक्ष की सही जानकारी का तथ्यों पूर्ण इतिहास पेश न किया जाए तो एक तो यह भविष्य की पीढ़ियों के लिए पाप से कम नहीं होगा दूसरे हम भी इस पाप की भागीदारी से नहीं बच सकते। इस भांति का प्रतिबद्ध और एक आंख से इतिहास लिखने का गुनाह साम्यवादी लेखक करते आ रहे हैं। वे अपने विचारों के अनुरूप इतिहास को लिखते समय तथ्यों को तोड़ने का काम करते रहते हैं लेकिन उन लेखकों या इतिहासकारों को क्या नाम दिया जाए जो कूका विद्रोह की महानता को इसीलिए नजर अंदाज कर रहे हैं क्योंकि कूका विद्रोहियों की आस्था को अपने से विपरीत मानते हैं वे उन्हें सिख मानने से इंकार करते हैं जबकि सच्चाई इसके विपरीत है और यह भी अटल सत्य है आदि श्री ग्रंथ साहब की पोथी (पुस्तक) को छपवाने का सर्वप्रथम काम इसी महानायक ने किया था। क्योंकि लेखन व प्रतिलेख में कई बार त्रुटियां भी रह जाती थीं। कूका विद्रोह के महानायक ने सर्वप्रथम इन त्रुटियों को समाप्त करने की ओर सबसे पहले कदम उठाया। बाद में श्रद्वालुओं द्वारा इसी महानायक को सतगुरु राम सिंह जी कहा जाने लगा है।

विभिन्नता इस देश की आन-बान और शान है और इसी विशेषता के कारण भारत का विश्व में विशेष स्थान है। सबको अपने अपने ढंग से अपने अपने ईष्ट को मानने का अधिकार है। सबको गुरुओं में आस्था होती है। कबीर साहब के समय भी एक लम्बी गुरु परम्परा थी पर गुरुमंत्र की प्राप्ति स्वामी रामानन्द जी से ही हुई। उस समय जैन परम्परा थी, सन्यासी परम्परा थी, उदासी परम्परा भी थी। लेकिन लगभग सभी सिख जत्थेदारों (कुछ एक को छोड़कर) की ओर से पूरी तरह से अंग्रेजी साम्राज्य की वफादारी थी। उसके पोषण को पूरी तरह हर ढंग से पूरा किया जा रहा था।

गुरुद्वारों में अंग्रेजी शासन के स्वामीभक्त लोग महन्त बनकर अपने और अपने आका के हितों की पूर्ति कर रहा था। देशी रियासतों का तो इससे भी बुरा हाल था। देश तथा पंजाब की सारी सिख रियासतें तो प्रारम्भ से ही अंग्रेजी साम्राज्यवाद के साथ खड़ी थी।

ये सभी सिख रियासतें गुरुघर की कृपा से ही अस्तित्त्व में आई थीं पर इन रियासतों ने कभी भी सिखों का या सिख सिद्वान्तों का पालन नहीं किया था। पंजाब में रणजीत सिंह के अस्तित्व में आने से पूर्व तथा उसके बाद भी इन रियासतों ने एशिया की सबसे बड़ी सिख रियासत तथा रणजीत सिंह का कभी साथ नहीं दिया। क्या ये बात

पंजाब के इतिहासकारों की नजर में नहीं आती। इन सिख रियासतों ने 1857 की क्रांति को अपने सैनिकों के बूटों के नीचे जितनी बुरी तरह से कुचला था, रौंदा था उस पर उनको शर्म भी नहीं आई। कई अंग्रेज इतिहासकारों ने यह स्पष्ट माना था कि अगर पंजाब की इन सिख रियासतों ने 1857 की क्रांति में विद्रोही सैनिकों का साथ दिया होता तो अंग्रेजों की हड्डियों धूप में सूख रही होती।

कूका विद्रोह के महानायक ने क्रांति की इस कमजोरी को देखा उस पर चिन्तन किया और इस दुर्बलता को दूर करने की ओर विशेष ध्यान दिया। इसीलिए इस महानायक ने नेपाल, हैदराबाद कश्मीर आदि की ओर ध्यान दिया और इस बात को लेकर आंखें चौंधिया जाती है कि पंजाब के एक साधारण घर में जन्मे इस महानायक ने इस दुर्बलता के प्रति अपनी पूर्ण चेतनता दिखाई। यह भी हो सकता है कि 1857 के क्रान्ति नायकों के साथ भी कूका विद्रोह के महानायक ने सम्बन्ध भी बनाए हों जो शायद पूरी तरह परिपक्व नहीं हो सके।

इस महानायक के साथ एक पूरा मन्त्रिमण्डल (पंजाबी भाषा में सूबे) था जिनको उनके काम सौंपें गये थे जैसे सूबा साहिब सिंह जो प्रमुख सूबा भी था और ये कहने में संकोच नहीं होना चाहिए कि सतगुरु जी का राजनीतिक उत्तराधिकारी माना जा सकता था। छोटे-मोटे झगड़ों को निपटाने के लिए कुछ सहायकों की नियुक्ति की गई थी। अंग्रेजी अदालतों तथा न्याय प्रक्रिया की चींटी जैसी चाल के कारण सतगुरु जी की पंचायती न्याय प्रक्रिया शीघ्र ही ऐसी कारगार साबित हुई कि साम्राज्यवादी न्यायपालक कांप उठे।

सबसे बड़ी बात तो यह मानी जाती है कि मलेरकोटला में जिन कूका विद्रोहियों को तोपों से उड़ाया गया था उन्हें तोपों से बांध कर नहीं उड़ाया गया बल्कि इन विद्रोहियों ने जिन्दादिली की वो मिसाल पेश थी कि स्वयं अंग्रेज अधिकारी तथा देशी रियासतों के जी हजूर हाथ बांधे लोग भी कांप गए थे। पर देशी रियासतों ने क्या किया? उनके सामने 1857 की क्रांति के बाद ये एक और अवसर था जब वे अपनी वफादारी को पुनः साबित कर सकें। छोटी भी सहायता मांगने पर इन देशी सिख रियासतों के राजाओं ने अपनी-अपनी तोपें तो भेजी ही साथ ही अपने सैनिक भी भेजे। क्या निहत्थे कूका विद्रोहियों से पुन लड़ाई की कोई आशंका थी। जबकि इन विद्रोहियों ने आत्मसमर्पण कर दिया तब किसी भांति की कोई भी आशंका निर्मूल दिखती थी। 1857 की क्रांति को असफल करने के लिए अपनी सैनिक सहायता देने के फलस्वरूप इन देशी राजाओं को सेना बढ़ाने की आज्ञा मिली, अधिक तोपों की सलामी की आज्ञा मिली और विद्रोही

राजाओं/नवाबों की जब्त जागीरें ईनाम में दी गई, साथ ही इनको रानी विक्टोरिया की ओर से 'ब्रिटिश नाईटहुड' का खिताब भी मिला। कूका विद्रोहियों के विरुद्ध तोपें भेजने और सहायता करने के लिए पटियाला, नाभा, जींद, कपूरथला और संगरूर आदि के राजाओं को ईनाम भी दिये गए।

कूका विद्रोहियों की वीरता साहस और उनके महानायक सतगुरु राम सिंह जी की प्रशंसा में कुछ शब्द लिखने के स्थान पर इर्ष्यावश लिखा जाना कहां की न्याय है। कूका विद्रोह का सच तो यह है कि अपने महानायक के नेतृत्व में राजनीतिक, समाजिक, सांस्कृतिक, अचार-विचार और धार्मिक भक्ति की ऐसी चिंगारी जली जो कभी बुझ नहीं पाई।

कूका विद्रोह पूर्णतया राजनीतिक था। बहिष्कार, स्वदेशी, पंचायती प्रबन्ध, सत्याग्रह और सबसे प्रथम आचार-व्यवहार, नियम, सिद्वान्तों नें कूका विद्रोहियों को इतना पक्का कर दिया था कि कोई भी कूका फिर कभी अंग्रेजी साम्राज्य का वफादार नहीं बन सका। अपने समर्थकों के भीतर ये सिद्वान्त इस तरह बैठ गया था कि कूका सिखों ने पूरी तरह से अपने गुरु की शिक्षाओं का पालन करते हुए फांसी के फंदे चूम लिये, तोपों के सम्मुख खड़े होकर पुर्जा-पुर्जा उड़ना स्वीकार किया। इन सिखों ने अपने गुरु साहिबान और सिखों की शहीदी परम्परा को और पक्का किया। अगर पूरी निष्पक्षता से कूका विद्रोह को सही परिपेक्ष में लिखा जाता तो सभी को समझ में आ जाता कि कूका विद्रोह अपने में अद्वितीय और सिरमौर रहा है। और पूरे विश्व में आजादी के लिए इतना बहुमुखी विराट आयोजन न कभी हुआ है ना ही होने की संभावना हो सकती है।

शहीद गाथा

नमन उन्हें बारम्बार हमारा।
कुर्बान हो गए सब कुछ देकर।।
चढ़े फांसी शौक से हंसकर,
घाव सभी सह गए हंसकर,
घर-बार लुटाए जिन्होंने हंसकर।
नमन उन्हें बारम्बार हमारा।।
तोप से बंधना स्वीकार नहीं है,
ये मौत हमको दरकार नहीं है।
जुल्म के सम्मुख पुकार नहीं है,
अपनी तो ललकार यही है।
नमन उन्हें बारम्बार हमारा।।
सीना ठोककर खड़े हो गए,
मौत को ब्याह लिया हंसकर।
शत्रु देखें सांस रोककर
उड़े परखचे गगन में होकर।
नमन उन्हें बारम्बार हमारा।।
जो खाके वतन में ही मिल गए,
चिराग बनकर जो जल गए।
अंग्रेजी शासन को बदल गए,
खुश्बू-ए-फूल से खिल गए।
नमन उन्हें बारम्बार हमारा ।।

रात का अन्धेरा गहरा होता जा रहा था। कमरे के सामने एक आले में मिट्टी का दीया जल रहा था। पारो चूल्हे पर रोटी बना रही थी। मिट्टी के बर्तन में दाल बन चुकी थी। चार साल का लड़का और सात साल की लड़की के साथ गुरनाम सिंह चुपचाप रोटी खा रहा था। बस बच्चों को देख रहा था। उसके मन में दोनों बच्चों के लिए बहुत स्नेह है उसकी शादी को दस साल हो गए हैं इस बीच उसके पिताजी जो खालसा फौज के भंग होने के बाद घर पर ही छोटा मोटा काम किया करते थे। उन्हें भी खालसा फौज के भंग किये जाने का बड़ा अफसोस था। अंग्रेजों के प्रति उसके मन में बहुत नफरत थी वह कई बार इस नफरत को

बच्चों व परिवार के बीच दिखा भी चुका था। वह एक बार गिर पड़ा तबसे उसकी सेहत गिरती चली गई और दो साल पहले रात को ऐसे सोए थे कि सुबह उठ ही नहीं सके।

पिता का गुरनाम को बहुत सहारा था उसकी गैर मौजूदगी में पिता पूरे परिवार को संभालता था। लड़की गौरा से उनका विशेष स्नेह था। रंग गौरा होने के कारण पिताजी उसको गौरा ही पुकारा करते थे। गौरा भी पिताजी का विशेष ध्यान रखती थी।

अपने पिता की मौत के बाद गुरनाम सिंह कई दिन तो गुमसुम ही रहा। उसका छोटा सा घर था और छोटा सा परिवार जिसमें बहुत खुश थे।

दूसरे कमरे में पिताजी की चारपाई बिछी रहती थी। पत्नी को आदेश था कि चारपाई जैसे बिछी हुई थी वैसे ही पड़ी रहे। पत्नी सफाई करती और चादर झाड़कर फिर बिछा देती और हर सप्ताह चादर बदल देती।

उसके सामने मलेरकोटला के बंजर मैदान का नजारा आ गया नामधारी सिंहों ने शहादत के मामले में सबको पीछे छोड़ा था ऐसी शाहदत किसी में भी परिर्वतन ला सकती है।

उसके पिता बताया करते थे कि महाराजा की देखा देखी उनके सरदारों की मुजरों और नाच-रंग के बीच रात बीतती थी और आधा दिन बीत जाने के बाद ही उनकी नींद खुलती थी। जम्मु के डोगरे सरदारों और उनके चहेते ब्राह्मण वर्ग ने ये छोटा रास्ता पकड़ लिया था जिस कारण रणजीत सिंह में वे सभी बुराईयां बुरी तरह घर कर गई थी जिनके कारण मुगलसत्ता का पतन हुआ था।

धर्मनिष्ठा और सिद्वान्तों का पालन करने वालों को रणजीत सिंह से जान बूझ कर दूर किया जा रहा था।

मुगल सम्राटों की भांति रणजीत सिंह को भी शायद ये पता न होगा कि उसके महलों में कितनी रानियां और कितनी रखैलें होंगी। आलम तो यहां तक था कि जब रणजीत सिंह अपने पोते कुंवर नौनिहाल सिंह की शादी सरदार शाम सिंह अटारी वाले की बेटी से करने अटारी बारात लेकर आया तो अपने पोते की शादी के साथ 17-18 साल की जिन्दा नाम की नवयुवती को भी ब्याह ले गया जो शायद उसके महल में 22वीं रानी होगी।

सिखी सिद्वांतों का कैसा जनाजा रणजीत सिंह निकाल रहा था कि 57-58 वर्ष की आयु में 17-18 साल की लड़की से शादी कर ली जो शायद बाद में पूरे सिख राज्य की तथाकथित तबाही का कारण भी बनी।

शराब, अफीम के नशे के साथ मुजरों में वह ऐसा डूबा कि रखैल मोरां जो की एक नर्तकी थी और मुजरा करती थी, के लिए उसने अपने किले में एक मस्जिद भी बनवाई और दूसरी रखैल बेगम के लिए रावी नदी पर जाने के लिए एक पुल का निर्माण भी करवाया जो अभी तक कंजरी पुल के नाम से जाना जाता है।

सरदार शाम सिंह अटारी वाले से इस सम्बन्ध को दरबार में बहुत से दरबारी जो सिवाय चापलूसी के कुछ नहीं करते थे ये सम्बन्ध नागवार लगे और इसे तोड़ने में वे जी जान से साजिशें बनाने में लग गए।

गुरनाम को भैणी में होने वाले कीर्तन दीवान की कोई खबर नहीं थी पर इसका समाचार महाराजा पटियाला के पास जासूसी करने वालों ने पहुंचा दिया।

यों तो नामधारी सिखों पर अंग्रेजी सरकार की गिद्धदृष्टि लगी हुई थी उनकी प्रत्येक गतिविधियों की निगरानी के लिए अंग्रेजी सरकार ने तथा पटियाला के महाराजा ने भी अपने गुप्तचर छोड़ रखे थे।

X X X

आज भैणी का यह कीर्तन दीवान सतगुरु जी की स्वर्गवासी धर्मपत्नी जस्सा कौर तथा अमृसर व अन्य शहीदों के लिए था जिनको माघी के इस अवसर पर श्रृद्धांजलि दी गई थी। नामधारी सिखों में सतगुरु राम सिंह जी के प्रति पूर्ण श्रद्धा व भक्ति थी। पंजाब के दूरस्थ स्थानों से भी नामधारी सिख इसमें शिरकत करने भैणी गांव में आए थे।

गुरवाणी का कीर्तन हो रहा था। सतगुरु राम सिंह जी कीर्तन करने वाले रागी सिखों के साथ थोड़ा हटकर चौकड़ी मारकर ध्यान में बैठे थे। उनके हाथों की ऊन की माला बराबर चल रही थी।

सिख आते सतगुरु जी को माथा टेकते और जहां भी जगह मिलती वहीं जाकर बैठ जाते। सतगुरु जी के आगे पीछे मुख्य सहायक (सूबे) बैठे हुए थे जिनके हाथों में ऊन की सफेद माला बराबर घूम रही थी। कभी कभार वे आने वालों पर नजर उठाकर देख लेते थे। जगह कम भी और आने वाले श्रृद्धालु जन बढ़ते जा रहे थे। भैणी गांव में इस भांति के श्रृद्धालुओं का संख्या बल कम ही देखने को मिला। आज संख्या बल सबसे अधिक दिखाई दे रहा था।

सभी सांस रोके इस उधेड़बुन में थे कि इस अवसर पर शायद सतगुरु जी कोई आदेश देंगे। अमृतसर से आने वाले सिखों के मन भरे हुए थे।

महाराजा रणजीत सिंह के सिख राज्य को जम्मू-कश्मीर के डोगरे भाईयों

ने दीमक की भांति कमजोर कर दिया था और अपनी साजिशों से पूरे राज्य को मिट्टी में मिला दिया। इन डोगरे और ब्राह्मणों ने साजिश कर के सिख कौम के श्रेष्ठ सेनापति सरदार हरि सिंह नलवा को जमरोद की लड़ाई में मरवा दिया और वहां से सहायता के भेजे गए पत्रों को उन्होंने छिपा दिया और सरदार हरि सिंह नलवा को सहायता नहीं पहुंचने दी। इसी तरह अकाली फूला सिंह शहीदों की मिसल के सरदार थे। मालूम नहीं वह क्यों रणजीत सिंह की शराब-खोरी और अय्याशी देखता रहे।

बुराई को देखकर आंखें बंद कर लेने से बुराई समाप्त नहीं हो जाती बल्कि बढ़ती जाती है। यही कुछ रणजीत सिंह के साथ हुआ। स्वाभिमानी होने के कारण अकाली फूला सिंह रूठकर आनन्दपुर साहब चले गये और डोगरों की मनमानी बढ़ती चली गई। वास्तव में डोगरे सरदार अंग्रेजों के जासूस ही कहे जाएंगे। जिस रणजीत सिंह की कृपाओं के कारण व पैर की जूती से उठकर राजा बना दिये गऐ, उसी रणजीत सिंह की असीम कृपाओं का फल धृणित षड्यत्रों के दम पर राज्य को तबाह कर के ही दिया। ज्यों-ज्यों रणजीत सिंह का राज्य बढ़ता गया, वह सत्ता की चमक में अय्याश और शराबी होता गया, सिद्धान्तहीन होता गया वह भीतर से कमजोर और दुर्बल होता गया।

जब सिद्धान्त आपके लिए कोई मायने नहीं रखते, नियमावली फिजूल की चीज बन जाती है तब-तब आपका पतन निश्चित है और इसे कोई टाल नहीं सकता। राज्य की स्थापना में कितना खून बहाना पड़ता है, कितना पसीना गिरता है कितनों की कुर्बानियां देनी पड़ती है पर उसे गिरने में ज्यादा समय नहीं लगता। यही कुछ रणजीत सिंह के साथ हुआ। जिस राज्य की स्थापना सिखों के खून से की गई उसे शराबखोरी, नशों की आदत और अय्याशी के साथ साजिशें ले डुबी।

अंग्रेजी शासन के दौरान कसाई मारने के आरोप में नजदीक या दूर बैठे सभी लोगों ने देखा कि कैसे डोगरों ने राजकुमारों का कत्ल करवाया, रानियों को जहर देकर मरवाया।

अभी कुछ माह पहले अमृतसर के रामबाग में सरेआम चार नामधारी सिखों को पेड़ से लटका दिया गया था। जिस वीरता के साथ उन वीरों ने फांसी की रेशमी डोरी अपने गलों में डाली थी और जिस तरह उन नामधारी वीरों ने अंग्रेज अधिकारियों को अपनी वीरतापूर्वक निर्भयता से चकित कर दिया था उसे देखकर अंग्रेज अधिकारी आशंकित हो गए थे। क्या ये समुद्र में ज्वारभाटा आने के पहले के संकेत थे? या एक और विद्रोह की तरफ इशारा कर रहे थे। वैसे तो अभी

श्रृद्धालु श्री हरिमंदिर साहब में रोजाना माथा टेकने आते थे और उन्हें ये भी पता था कि श्री हरिमन्दिर साहब की परिक्रमा के साथ मुसलमानों का एक कसाईखाना खुलवा दिया गया है जहां कसाई खुलेआम जानवरों को काटते थे। इस बहाने से अंग्रेज सरकार भारत की साम्प्रदायिक सद्‌भाव की सैकड़ों वर्ष पुरानी विरासत को तोड़ना चाहते थे। कसाईखाने खुलवाना इस सद्‌भाव को तोड़ने की कुटिल साजिश थी। माथा टेकने वाला हर श्रृद्धालु इस बात को जानता तो था पर उसमें इतनी हिम्मत और साहस नहीं था कि वह इस बात का सरकार से प्रतिकार कर सके, इसका विरोध ा कर सके।

गुरु गोबिंद सिंह जी का वह सिख जो अत्याचार के सम्मुख सीना तानकर खड़ा हो जाता था, जुल्म का विरोध करना अपना अधिकार समझता था वह स्वयं की आंखें बन्दकर माथा टेककर चुपचाप चला जाता था। नामधारी संगत के दिल में उन नामधारी सिखों को फांसी देने का भारी विरोध था। अंग्रेजी सरकार के प्रति भारी ईर्ष्या भी थी। वे सभी देख रहे थे और सतगुरु जी पालथी मारे चुपचाप सिमरन कर रहे थे।

सिखों की असंख्य शहीदियों के बल पर स्थापित हुई ये सिख सल्तनत जब निजी जागीर बन गई तभी उसके विघटन की शुरुआत हो गई थी।

रणजीत सिंह ने अपने बेटों को इस योग्य ही नहीं बनाया कि वे डोगरों की साजिशों को समझ सके, उनका मुकाबला कर सके। बड़े लड़के खड़क सिंह को डोगरों ने जहर देकर मरवा दिया। छोटे लड़के शेर सिंह को अपने ही चचेरे भाईयों से कत्ल करवा दिया। ऐसा लगता था कि जैसे ये डोगरे सरदार इस तथाकथित सिख राज्य के माईबाप हों और जैसे वे चाहेंगे वही होगा। इन डोगरों ने राजकुमारों को मरवाया। सिद्धान्तों पर विश्वास करने वालों का धीरे-धीरे सफाया करवाते रहे और जो काम अंग्रेज करवाना चाहते थे वहीं काम डोगरे करवा रहे थे। अमृतसर से लेकर अफगान सीमा तक ये विशालकाय राज्य ताश के पतों की तरह से ढह गया।

X X X

गुरनाम सिंह के रिश्तेदार सेना में थे। रणजीत सिंह के मरने के बाद सिखों का कोई नेता नहीं, कोई मुखिया नहीं रहा जो इस योग्य थे उनको साजिशें करके मरवा दिया। जो नेता बनता वह हितों के साधन में लग जाता।

साजिशकर्ता कब किसे सिंहासन पर बिठाते थे कब उसे जेल में डाल देते और कब मरवा देते बस यही सब लाहौर दरबार में चल रहा था। उसके चाचा बता

रहे थे कि उन दिनों लाहौर में ही थे जब शेर सिंह को सिंहासन पर बिठाया गया था। इससे पहिले डोगरों ने साजिश करके कुंवर नौनिहाल सिंह के सिर पर ज्योढ़ि गिरवाकर उसे मारने की साजिश की। जब वह नहीं मरा तो उसे भीतर ले गए ज्योढिं के दरवाजों को बन्द कर दिया और भीतर जख्मी कुंवर को डोगरों ने पत्थर मार-मार कर मार दिया और ये प्रचारित कर दिया कि ज्योढ़ि गिरने से उसकी मौत हो गई जिसने इस बात पर उंगली उठाई उसे सदा के लिए चुप करवा दिया गया।

भैणी गांव में एक सात्विक वातावरण चारों और व्याप्त था। रायकोट के नामधारी सिखों में भी सरकार के प्रति ईर्ष्या और नफरत थी। रायकोट यहां से दूर नहीं था। जहां एक तरफ रागी कीर्तन कर रहे थे। जन्म मरण के सत्य को गुरवाणी की व्याख्या करके समझा रहे थे। गुरु की महत्ता बता रहे थे, गुरु आज्ञा को हर हालत में स्वीकार करने का अर्थ बता रहे थे वहीं उपस्थित संगत में कहीं न कहीं असंतोष भी दिखाई दे रहा था एक कोने में धीरे-धीरे बातचीत हो रही थी। कहीं न कहीं इस बात के प्रतिकार को लेकर क्रोध प्रतिबिम्बित हो रहा था। अमृतसर और रायकोट की दो घटनाएं के कारण लंगर वाले स्थान पर विरोध के कुछ स्वर उठते दिखाई दे रहे थे।

जब कुछ लोग सतगुरु जी पर विश्वास रखने की बात करते तब विरोध का स्वर उठाने वाले चुप हो जाते थे। लेकिन उनके मुख के उठते गिरने वाली भाव भंगिंनाएं हृदय की बात बता ही जाती थी। जूते रखने वाली जगह पर कुछ लोगों का जमघट भी कुछ ऐसी ही बातें कर रहा था। कुछ नवयुवक अमृतसर घटना से बहुत व्यथित थे वे चाहते थे कि नामधारी सिखों को सजा देने वाले अंग्रेज अधि ाकारियों को भी ठोक दिया जाए यानि कि उन्हें सजा दी जानी चाहिए। उनके अनुसार फांसी पर चढ़ाए गए सभी लोग बेकसूर थे। उनकी नजर में अपराधी तो वे लोग थे जिन्होंने श्री हरिमन्दिर साहब की परिक्रमा के साथ कसाईघर खोलने की इजाजत देकर आपसी माहौल को बिगाड़ने और विषाक्त बनाने के प्रयत्न किये। सजा ऐसे ही लोगों को मिलनी चाहिए।

महाराजा रणजीत सिंह के राज्य में कोई भी अधिकारी इतना बड़ा जघन्य अपराध नहीं कर सकता था। श्री हरिमन्दिर साहब की परिक्रमा के साथ कसाईखाना खोले जाने के बाद हिन्दू-सिखों दोनों के हृदय बैचेन थे। अंग्रेजों के प्रति घृणा से भरे हुए थे पर उनमें इतनी हिम्मत नहीं थी कि वे प्रतिकार में सिर उठा कर विरोध ा कर सके या आलोचना कर सके। अंग्रेजों के अत्याचारों के विषय में उन्होंने सुना तो था कि कैसे दिल्ली, लखनऊ, कानपुर, झांसी में हिन्दुस्तानियों पर मनचाहे

अत्याचार किये थे। विद्रोह को इतने भयंकर तरीके के साथ कुचल दिया गया था कि शायद ही कोई दोबारा सिर उठाने की कोई हिम्मत कर पाता।

अंग्रेज भी ये समझ बैठे थे कि अब हिन्दुस्तानी पीढ़ियों तक सिर नहीं उठा सकेंगे, आजादी का सपना नहीं देख सकेंगे। अंग्रेजों ने किसी को नहीं छोड़ा कसूरवार और बेकसूर का अन्तर नहीं देखा गया। इतना समय ही कहां था। सतगुरु जी ने विशेष कार्ययोजना के अन्तर्गत जब गश्ती डाक का प्रबन्ध शुरु किया तब इनमें बहुत से सिख गश्ती डाक प्रबन्ध के हिस्सेदार बने थे। इन सभी सिखों का ये कर्तव्य था कि वे चाहे कोई भी काम कर रहे हों या किसी भी तरह से व्यस्त हो वह सतगुरु जी की गश्ती चिटठी या मौखिक संदेश पाते ही सारे काम छोड़कर उसी समय भाग उठता और निर्दिष्टि स्थान पर पहुंचा कर ही दम लेता।

इसी गश्ती डाक प्रबन्ध के कारण कम्पनी सरकार परेशान ही नहीं, बौखलाई हुई भी थी। जब अमृतसर में कसाईयों का वध किया गया और काफी समय तक कसाई वध का पता नहीं चल पाया तब अपने अधिकारियों को दिखाने और झेंप को मिटाने लिए बेकसूर लोगों को जेल की कोठरियों में डाल दिया और उनको अपराध मनवाने के लिए उन पर मनचाहे अत्याचार भी किये।

तब किसी ने इस सब के विरुद्ध कोई आवाज नहीं उठाई। सभी सिख सरदारों को सांप सूंघ गया था सभी गुलामी के नशे में बेसुध हो गए थे। सिख राज्य में सभी को अपने धर्मो को मानने की खुली आजादी थी। कोई किसी दूसरे धर्म में, पड़ोसी की पूजा पद्वति में, उसकी आस्था में रुकावट नहीं बन सकता था। किसी की परम्परा और मान्यता किसी के लिये बाधक नहीं थी। कोई गाय को पवित्र मानता है तो दूसरे को, इसमें कियर को कोई ऐतराज नहीं था। सिखों के गुरुद्वारों पर मुसलमानों को एतराज नहीं था और पांच वक्त का नमाजी होने पर किसी सिख को कोई ऐतराज नहीं था। मन्दिर की घंटियां, मस्जिद की अजान और गुरुद्वारे के कीर्तन से वायुमण्डल में एक मिश्रित सा आनन्द देने वाली वायु बहती थी।

रणजीत सिंह का राज सभी के लिए था। सभी की उसमें भागीदारी थी सभी उस भागीदारी को मानते थे। रणजीत सिंह के राज्य में गाय वध की सख्त मनाही थी। गाय हिन्दू धर्म में आस्था का केन्द्र रही है। वे गाय को गऊमाता मानते थे उसकी पूजा करते हैं। अंग्रेजों ने पहले पंजाब पर कब्जा करने के बाद इस सांझी विरासत को सबसे पहले तोड़ने की कोशिश की। सबसे पहली कोशिश श्री हरिमन्दिर साहब की परिक्रमा में कसाईखाना खोलकर मुसलमान कसाईयों को गउ वध की खुली छूट देकर दी। जो काम सरकार सीधे नहीं कर सकती थी उसे उसने

कसाईघर खुलवा कर कर दिया। इस काम से सरकार नफरत और ईर्ष्या फैलाने में सफल हो गई। देखते ही देखते पंजाब का खुशहाल और खुली हवा वाला राज्य आपसी नफरत की आग से भर उठा।

X X X

कीर्तन दीवान में जूते रखने वाली जगह पर कुछ इसी तरह की बातें हो रही थी। इसमें कुछ फांसी पाने वालों के रिश्तेदार थे तो कुछ उनके जानकार थे जब सतगुरु जी को अमृतसर में कसाई वध में नामधारी सिखों के शामिल होने का पता चला तो सतगुरु जी उन सभी बुलाकर ये आदेश दिया-''कि जो काम तुमने किया है, गऊ को कसाईयों से तुम ने बचाया है तो फिर इस छिपने-छिपाने का कोई कारण नहीं बनता।'' सिखों के पूछने पर सतगुरु जी ने केवल यही कहा - कि जो काम तुमने किया है उसकी सजा किसी दूसरे को क्यों मिले, ये सत्य की पहरेदारी थी सिद्वान्तों के प्रति निष्ठा थी। सभी सिखों की सतगुरु जी पर अगाध श्रद्वा थी। सतगुरु जी के हक्मानुसार सभी लोग अमृतसर पहुंचे और आत्मसमर्पण किया। ये सभी सिख कोई सम्पन्न परिवारों से नहीं थे पर सतगुरु जी के आदेशानुसार सिख सिद्वान्तों को सत्यपूर्वक अपनाने वाले पूर्णतया आचारशील सिख थे। कसाईघर खोलने का मामला वास्तव में आस्था के साथ मानवधिकारों का मामला था। सभी को अपने धर्म को मानने की स्वतन्त्रता थी पर अंग्रेज द्वारा यह धार्मिक स्वतन्त्रता का खुला उल्लघन नहीं तो क्या था? सिखों ने कसाईघर पर हमला कर निरीह गऊओं को छुड़ाकर कसाईयों का वध कर दिया। अभी तक अंग्रेजों के विरोध में विदेशी कपड़ों का बहिष्कार, अंग्रेजों की अदालतों का बहिष्कार तो शमिल था पर गऊहत्या विरोध नहीं था अंग्रेजों ने अदालतों को इसलिए भारत में प्रवेश करवाया ताकि भारत के लोग मुकदमों में फंसे रहे उनके समय की बर्बादी होती रहे। शायद इसी कारण भारतीय पुरातन न्याय व्यवस्था पंचायती व्यवस्था को नकार दिया। पंचायती व्यवस्था को पुनः चालू करना सरकार को चुनौती देने के बराबर था।

तभी सूबा लक्खा सिंह वहां से गुजरा तो इस दल ने उसे रोककर कहा कि क्या आज अमृतसर और रायकोट वाले शहीदों के बारे में कोई बात होगी या नहीं? सरकार के इस अन्याय के बारे में कोई बात होगी या नहीं। इस बात का सूबा लक्खा सिंह ने कोई उत्तर नहीं दिया और वहां से चला गया। माहौल अशान्त था। बात सूबा साहिब सिंह से होती हुए सतगुरु जी तक पहुंची। सतगुरु जी ने शान्त होकर बात को सुना और आकाश की ओर देखने लगे। आपके मुंह से यही निकला ''हे प्रभु जैसा आप चाहोगे वैसा ही होगा।'' हीरा सिंह सब से गर्म दिखाई दे रहा

था। लंगर स्थान के बाहर सरगर्मी चल रही थी।

अशान्त लोगों के दल की संख्या बढ़ती जा रही थी अब इसमें कुछ महिलाएं भी शामिल हो गई थीं साथ में कुछ बच्चे भी थे। धीरे-धीरे ये लोग बाहर निकलने लगे। अंग्रेजों के प्रति इनके हृदय घृणा से भरे हुए थे। सब से आगे हीरा सिंह चल रहा था उसके हाथ में एक तलवार थी। उसके साथ लहना सिंह चल रहा था पीछे दूसरे लोग चल रहे थे। खेतों के बीच में से होते हुए बड़ी तेजी से चलते हुए ये सभी खेतों से बाहर आ गये। खेतों से बाहर आकर ये सभी एक दूसरे को देखने लगे। उनके साथ बच्चे भी थे। जो इन सभी बातों से अनजान थे। माता खेम कौर और इन्द्र कौर के चेहरे चमक रहे थे। सर्दियों की कपंकपांती रातें थी। गर्म कपड़ों के नाम पर इन सभी के पास एक एक गर्म शाल व हाथ से बुने स्वेटर थे जो इन्होंने पहने हुए थे।

पंजाब में अंग्रेजी कब्जा होने के बाद उनका पहला काम अंग्रेजी अदालतें खोलने का था। उधर अंग्रेजी अदालतों के ढोंग में वकील, दलील और अपील के कारण मामले सुलझाने के स्थान पर उलझा दिये जाते थे। सतंगुरु जी ने इसीलिए पुरातन पंचायती न्याय प्रणाली को ही लागू कर दिया ताकि छोटे-मोटे झगड़ों के निर्णय तुरन्त हो सकें।

जब कोई मसला नहीं सुलझ पाता था तो उसको सतगुरु जी के समक्ष रखा जाता था सतगुरु जी का निर्णय सभी को मान्य होता था। सेना में सतगुरु जी के साथ अन्य बहुत से साथी थे। कुछ अब बिखर गये थे। कुछ प्रभुभक्ति में जुट गए और आश्रम वगैरा बनाकर एकान्तप्रिय हो गए।

आपके एक साथी भाई वीर सिंह नौरंगाबादी भी थे जो नौरंगाबाद में आश्रम चला रहे थे। उनके डेरे में कई हजार हथियारबन्द सिख रहते थे। डील-डोल और रहन-सहन से वे सतगुरु जी से समानता भी रखते थे। इन सबकी तुलना में व्यापक दृष्टि लेकर अंग्रेज विरोध में सतगुरु राम सिंह जी मैदान में उतरे। उनके पास व्यापक दृष्टि तो थी, संगठन की अजब की क्षमता थी। सिखों में आई बुराईयों को वे देख रहे थे। बुराई में फंसे व्यक्ति से किसी अच्छाई की उम्मीद नहीं लगाई जा सकती। बुराई के सामने अड़ने की क्षमता या अपराधी के सामने डटने की हिम्मत केवल वही व्यक्ति कर सकता है जिसका आचार व्यवहार सत्यनिष्ठ होगा जो बुराईयों से दूर होगा। सतगुरु जी ने सर्वप्रथम सिखों को सत्यनिष्ठा सिखाई, नियमावली, सिद्वान्त और आदर्श देकर उन पर मर मिटने का साहस और हिम्मत भी दी।

सतगुरु जी से आज्ञा पाकर, अंग्रेजों के सम्मुख स्वयं पेश होकर, अमृतसर में लहना सिंह, बीहला सिंह, हाकम सिंह और फतेह सिंह ने अपने हाथों से रस्सियां गले में डालीं और फांसी पर झूल गये। मौत का ऐसा खुला आंलिगन केवल और केवल सत्यनिष्ठ लोग ही कर सकते हैं।

हालांकि इस मार्ग पर चलने वालों को ये भी मालूम था कि उनकी जान तो जाएगी ही उनके चले जाने के बाद उनके घरवालों पर मुसीबतों का पहाड़ टूट पड़ेगा। उनके सम्बन्धियों को शासन तंत्र के कोप का शिकार भी होना पड़ेगा तथा परिवार को तंगहाली में दिन गुजारने पड़ेगे। जेलों की सीलनभर कोठरियों में जीवन के दिन गुजार कर शरीर को गलाना पड़ेगा आधी रोटी पर गुजारा करना पड़ेगा। कंकर मिली दाल खाने को मिलेगी। उनकी कोठरी में रोशनी तक मुहैया नहीं होगी। और इस बात की शिकायत भी नहीं की जा सकेगी। इनके परिवारों को पुलिस की निगरानी में रखा गया। कौन कब किस से मिलने जाता है या कौन कब मिलने आता है इस बात की पूरी निगरानी ही नहीं की जाती बल्कि उन मिलने वालों की जासूसी भी की जाती। जुर्माने की राशि वसूलने के लिए घरों की कुर्की की जाती और जायदादें बेच दी जाती। उनके नामोनिशां मिटा दिये जाते।

इतना होने के बावजूद स्वाभीमान की खातिर मरने वालों की कमी नहीं थी। अपने अधिकारों की खातिर अपना सब कुछ कुर्बान करने वालों की कमी नहीं थी। डर-खौफ इनके सामने पानी भरता दिखाई देता था अपने मनोबल को लेकर भंयकर शासनतन्त्र से भिड़ जाते। जो डर गए वे जीवन तो जीते थे पर उनका जीवन जानवरों से भी बदतर था। खतरों से खेलते हुए जीवन का आनन्द ही कुछ निराला होता है। और ये तूफान से टकराने की हिम्मत रखने वाले ही कर सकते थे। ऐसे ही लोग इतिहास की रचना करते है। जुल्म करने वाले का भी एक इतिहास तो होता है पर ये इतिहास पढ़ते समय कभी कभी मन ग्लानि से भर जाता है। कभी कभी ये सब पढ़कर मन घृणा से भर जाता है और सिर शर्म से झुक जाता है। इसके विपरीत इतिहास रचने वालों के प्रति सिर सदा ही श्रद्धा से झुक जाता है। तब हृदय अपने पूर्वजों के इस कृत्य पर सिर ऊंचा उठता दिखाई देता हुआ महसूस होता है क्योंकि किसी भी निरंकुश सत्ता का ललकारने की हिम्मत सभी में नहीं होती लोगों को तो इस सत्ता के सम्मुख झुकने में ही सुख की अनुभुति होती है। उनका जीवन शासन की जी हजूरी में ही गुजर जाता है वे कभी भी शासन के विरुद्ध बोलने की हिम्मत नहीं कर पाते। उन्हें तो जो मिल रहा है उसी में सुख का आनन्द प्रतीत होता दिखाई देता है।

पर उस हिम्मत को साधुवाद दिया जाए कि जिन्होंने जान हथेली पर रखकर शासन से भिड़ने की हिम्मत दिखाकर शासन को अंचभित कर दिया। इस वजह से चाहे उन्हें अपनी जान ही गंवानी पड़ी हो पर उनके इस कृत्य से इतिहास में उनका नाम अमर हो जाता है।

जैसे आज दिल्ली के चांदनी चौक में श्री गुरु तेग बहादुर साहिब के शहीदी स्थल गुरुद्वारा शीशगंज साहब में रोजाना हजारों व्यक्ति माथा टेकने आते हैं। श्रृद्वा से झुकते हैं और प्रार्थना भी करते हैं। सारा दिन वहां माथा टेकने वालों की भीड़ लगी रहती है, लंगर चलता रहता है, प्रसाद बंटता है गुरबाणी का प्रवाह और कथा कीर्तन चलता रहता है और दूसरी और अन्यायी औरंगजेब की कब्र पर अहमद नगर में कोई दीया भी नहीं जलाता है।

मन की संकल्पशक्ति के सम्मुख ये कंपकंपाती सर्दी कुछ भी मायने नहीं रखती थी। किसी के मन में कोई शंका नहीं थी। हीरा सिंह और लहना सिंह आपस में धीरे से वार्तालाप कर रहे थे।

मलेरकोटला की मुस्लिम रिसायत से भी अत्याचारों के समाचार आ रहे थे। हालांकि रियासत में उतराधिकारी का झगड़ा चल रहा था और अंग्रेज अधिकारी यहां जमा बैठा था। जब गुरु गोबिन्द सिंह जी के दोनों छोटे साहबजादे बाबा जोरावर सिंह और बाबा फतेह सिंह को नवाब सरहिन्द की ओर से दीवारों ने जीवित चिनवाए जाने का अन्यायी फतवे की सजा सुनाई तब उस समय मलेरकोटला के तत्कालीन नवाब ने इसका विरोध किया था जिसे सरहिन्द के नवाब ने नहीं माना था। पर तभी से मलेरकोटला के प्रति सिखों का रवैया सहानभूतिपूर्ण रहा है। लेकिन अब मलेरकोटला का रवैया अंग्रेजों के प्रति वफादारी पूर्ण था। जैसे पटियाला, नाभा, संगरूर आदि की रियासतों ने अंग्रेजों की गुलामी स्वीकार करके अपना सिंहासन बचा लिया।

मलेरकोटला के प्रति सिखों जैसा रवैया नामधारियों का नहीं रहा। सिखों को सत्ता मिलने के साथ ही सिखों की सोच, नियमावली और आचार व्यवहार में भी काफी अन्तर आ गया था। शासन से उपहार में सम्पति और जमीनें मिलने के बाद उनका रहन सहन बिल्कुल बदल गया था। बड़े सम्पन्न सरदारों में बहुपत्नी रिवाज बन गया था, रखैलों का भी नियम सा बन गया था। जब वे पटियाला नाभा के शासकों को देखते, रणजीत सिंह के विषय में सुनते तो वे भी बड़ी ऐंठ के साथ ऐसा करने में अपनी इज्जत समझते थे। ये तौर तरीके आम साधारण व्यक्ति से अपने को ऊँचा दिखाने के लिये भी अपनाए जाते थे। क्योंकि वे जनसाधारण और आम

जनता से अपने को ऊँचा मानते थे। ऐसा करने वाले को गुनाहगार नहीं बल्कि इज्जत की नजर से देखा जाता था। ये लोग शादियों में खुलकर वैभव का प्रदर्शन करते थे और दिखावे की शानो-शौकत मकान गिरवी रखकर या जमीन बेचकर दिखाई जाती थी।

शादियों में नाचने वाली बुलवाई जाती थी और सारी रात मुजरा होता रहता, पैसों की बरसात होती रहती थी। एक दूसरे को नीचा दिखाने और खुद को ऊँचा दिखाने की भरसक कोशिशें की जाती।

इस काम में नाचने वालियों की थैलियां नोटों से भर जाती। मांस और शराब का खुला सेवन होता था सैकड़ों बकरे काटकर मांस का भोजन बनाया जाता था। दावतों का दौर कई-कई दिन तक चलता था। गुरुओं की नियमावली और सिद्धान्तों को तिलांजलि दे दी गई थी। गुरुद्वारों पर काबिज महन्त अपनी मनमानी कर रहे थे, अपनी ही पूजा करवाते थे। वे भी बहुपत्नी रखते थे उनकी इच्छानुसार गुरुद्वारों के दरवाजे खुलते और बन्द होते थे। राजा की बुराई आम जनता में भी घर कर गई थी ऐसे में आम जनता इस बुराई में कहां तक बचती। बुराई जल्दी फैलती है उसका प्रभाव हवा की भांति फैलता है।

X X X

गुरनाम सिंह के खानदान के बहुत से लोग रणजीत सिंह की सेना में नौकर थे और कई मोर्चों पर इन सब ने वीरता भी दिखाई थी जिसकी एवज में कई बार ईनाम भी पाए थे। सेना की नौकरी उन दिनों एक अच्छी नौकरी समझी जाती थी और समाज में उसका मान सम्मान भी काफी होता था। गुरनाम सिंह के परदादा तो सिख मिसलों के पूरे संघर्ष में साथ रहे और जब कभी बात होती तो वे अपने घाव दिखाकर उस समय के संघर्ष के दिनों को बयान करते थे। शुरुआती दौर के रणजीत सिंह की वीरता के चर्चे सभी करते थे उसकी इज्जत करते थे और उस पर मर मिटने की चाह भी रखते थे। सेना में हरि सिंह नलवा, अकाली फूला सिंह, और अटारी वाले सरदार का बहुत सम्मान था। पर धीरे-धीरे इन सरदारों के सम्मान घटने के साथ-साथ रणजीत सिंह सिख सिद्धान्तों से पीछे हटता गया और लाहौर में सिद्धान्तनिष्ठ सिखों के स्थान पर चापलूसों की भर्ती ने सारा वातावरण भ्रष्ट कर दिया। जो सिख एक पत्नीनिष्ठ होता था, नारी का सम्मान करता थो वहीं सिख ध नसम्पदा के आते ही सिद्धान्त से गिर जाता। सिख सिद्धान्तों में नशों का, मांसाहार का निषेध है पर प्रभुता मिलते ही सिख सरदार शराब, अफीम की नशाखोरी में डूब गए। कई स्त्रियां रखने लगे। नर्तकियों पर धन लुटाने लगे। यहां तक की कई बड़े

सरदारों ने अपने घरों में नर्तकियों को रख लिया था। ये सभी नर्तकियां मुस्लिम होती थी जिन को केवल एक ही काम होता था कि कैसे इन सरदारों से घन ऐंठ कर अपना घर भरा जाए।

जब राजा ही शराबी कबाबी हो गया हो, नर्तकियों के पीछे पागल हो गया हो तब रईस सरदारों से क्या उम्मीद की जा सकती है। ब्याह शादियों पर जम कर अपनी रईसी का दिखावा किया जाता था। पूरे गांव को निमन्त्रित किया जाता था। कई-कई दिनों तक बरातियों को खाना खिलाया जाता। नर्तकियों का रगांरग नृत्य चलता रहता। ये काम करना हर अमीर सरदार के लिए जरूरी हो गया था।

एक दूसरे को नीचा दिखाने के लिए उस से बड़ा आयोजन किया जाता। नर्तकियों के नाचरंग पर एक-आध दिन और बढ़ा दिया जाता और नर्तकियों पर जिनते नोट या सिक्के दूसरे ने फेंकें थे उससे कहीं ज्यादा नोट फेंककर स्वयं को बड़ा दिखाया जाता था देखने वालों की वाह-वाह और तालियां ऐसे सरदारों का हौंसला बढ़ाती थी। रिश्तेदारों में अपने बड़पन का स्वांग बना रहे। यही हर बड़ा सरदार चाहता था। ऐसे में गरीब व्यक्ति की हालत तो बहुत पतली होती जा रही थी। उसे अपनी नाक बचाने के लिए कर्जा लेना पड़ता था और कई बार तो घर-जमीन तक गिरवी रखनी पड़ती थी। ऐसा भी देखने में आया कि कितनी बार कर्जा वापिस न कर पाने की स्थिति में घर-जमीन से हाथ धोना पड़ता था और व्यक्ति को बेघर होना पड़ जाता था। धीरे-धीरे सिख समाज में बुराईयों का फैलाव होता गया। इसी के साथ भांग, अफीम आदि नशों का भी प्रचलन खूब होने लगा। शराब का चलन तो अब आम सा हो गया था जहां शराब नहीं परोसी जाती थी उसे पिछड़ा और निम्न समझा जाता था।

गुरनाम सिंह उस दिन से अनमना और व्यथित सा रहने लगा जब से वह कोटला से वापस लौट कर आया है। पर वह अपने मन की व्यथा किसी को नहीं बताता था। पत्नी को बताता तो वह भी परेशान हो जाती।

सम्पन्न सरदार इस परम्परा को दोहराने में गर्व महसूस करते थे। पटियाला के राजा की अनेक रानियां, रणजीत सिंह की भी अनेक रानियां और रखैलें-इन सरदारों को भी ये सब अच्छा लगता था। उनके पास जमीन जायदाद है, धनसम्पति है फिर वे क्यों पीछे रहे। खुद को बड़ा क्यों न दिखाएं?

आम जनता ने भी ये देखा था कि महाराजा रणजीत सिंह की मृत्यु के उपरान्त उसकी चिता के साथ कई रानियां और कई दासियों को जबरन सती कर दिया गया था। कुछ इसी तरह की स्थिति रणजीत सिंह के बड़े पुत्र खड़ग सिंह की

मृत्यु के उपरान्त देखने में आई। तीसरे गुरु साहिब ने सती प्रथा का विरोध भी किया था।

सिख इस सती प्रथा का समर्थन नहीं करते पर सिखों में ही ये सब हो रहा था। पंजाब में अराजकता का माहौल था और ऐसे में कौन, किस को, सिद्धान्तों की बात समझाए। जिनके घर लड़के होते थे उनकी बड़ी पूंछ होती थी, उसकी कीमत डाली जाती थी। लड़के वालों की बहुत अकड़ होती थी। गुरुओं की धरती लड़कों को लेकर खरीद फरोख्त की धरती बन गई थी। इसके पीछे कई तरह के राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक कारण हो सकते हैं। राजनीतिक तौर पर पंजाब हमलावरों का, दिल्ली का मुख्य रास्ता रहा था। सिकन्दर से लेकर जिस हमलावर ने मुंह उठाया वह लुटेरे डाकुओं की फौज लेकर दिल्ली को चढ़ दौड़ा। रास्ते में पंजाब की उपजाऊ धरती पड़ती थी। जो भी मिला लूट लिया खुशहाल घरों को खण्डहर बना दिया। खून की नदियाँ बहा दी गई। कौन रोके कौन टोके पंजाब का अब तक कोई मालिक नहीं रहा, कोई रखवाला नहीं था जो उसकी देखभाल कर सके।

पंजाब लुटता रहा सब देखते रहे। पंजाब की खुशहाली मिटट्ी में मिलती रही हुक्मरान चापलूसी में जुटा रहा अपने स्वार्थों की पूर्ति में लगा रहा। फसलों को हमलावरों के घोड़ों की टापों तले रौंद दिया जाता, किसान खून के आसूं बहाकर रह जाता। असहाय इससे अधिक क्या कर सकता है।

दिल्ली और काबुल के बीच में पंजाब पड़ता था जो देश का सबसे खुशहाल प्रदेश था। काबुल से चले प्रत्येक हमलावर को दिल्ली पहुंचने से पहले पंजाब की खुशहाल धरती को रौंदता था। सिकन्दर के विश्व विजयी अभियान को पंजाब में पोरस ने ही रोका था। सिकन्दर की विश्वविजयी सेना के ऐसे दांत खट्टे किये कि उसके बाद सिकन्दर ने वापिस लौटना ही बेहतर समझा। दर्रा खैबर एक ऐसा रास्ता था जिसे रास्ते से कोई भी कभी भी मुंह उठाए पंजाब में घुस आता था। पंजाब में कोई ऐसी शक्ति मौजूद नहीं थी जो आंकान्ताओं का सामना कर सकती, प्रतिशोध में खड़ी हो सकती। सभी को अपने अपने हितों स्वार्थों की पड़ी थी।

नादिरशाह की भविष्यवाणी कुछ-कुछ अब्दाली के हमलों के दौरान चरित्तार्थ होती दिखाई देने लगी जब विभिन्न सिख मिसलों ने मिलकर अब्दाली को अपनी ताकत का एहसास करवा दिया। हालांकि अब्दाली ने सिखों की सेनाओं का बड़ा भारी नुकसान भी किया फिर भी अचरज तब हुआ तब इतने बड़े नरसंहार के बाद भी सिखों ने अब्दाली का अपनी ताकत बता दी। जब अब्दाली की समझ में

आ गया कि अब पंजाब किसी भी हमलावर का नहीं होगा बल्कि सिखों का होगा। पंजाब का मालिक कोई और हो या न हो आने वाले दिनों में असली मालिक अब सिख ही होंगे।

महाराजा रणजीत सिंह ने सिखों की समवेत शक्ति को लेकर ये सब कर दिखाया और हमलावरों के लिए दर्रा खैबर का रास्ता ही बन्द करवा दिया। इसके बाद सदैव के लिए पंजाब राज्य सुरिक्षत हो गया।

पंजाब निवासियों की दशा भेड़ बकरियों जैसी हो गई थी। ईरान से फौज लेकर हर ताकतवर भारत पर चढ़ आता। हमलावरों का कोई दीन ईमान तो होता नहीं। जो मिला लूट लिया। स्त्रीधन को बकरियों की भांति हांक कर ईरान, काबुल ले जाते जहां बाजारों में उनकी टका-टका बोली लगाई जाती।

गुरु गोबिन्द सिंह जी ने पंजाबियों की जीवन शैली और पहिरावा बदल दिया, खानपान बदल दिया। उनके डरपोक दिलों में हिम्मत भरी, जीने की लालसा जगाई इसके साथ खुद्दारी की अलख जगाई। पंजाब की मिट्टी ने करवट ली। जो लोग अन्याय के विरुद्ध खड़े नहीं हो सकते थे जो पीढ़ियों तक अन्याय के सम्मुख सिर झुका कर जीवन जी रहे थे। उनको जैसे ही अन्याय के विरुद्ध खड़ा होने का अवसर मिला, जीने का सम्बल मिला, उसने अन्याय के विरुद्ध छाती अड़ा दी।

वक्त बदला तो इन्हीं सिखों ने लुटेरे नदिरशाह की दिल्ली लूट कर जाती शाही फौज को सतलुज किनारे लूट लिया। बैलगाड़ियों पर भेड़ बकरियों की भांति ठूंसी गई भारतीय अस्मिता स्त्रीधन को छुड़ाकर उनके घरों में भिजवाया। सिखों के हाथों लुटेरे का माल लूट लिये जाने पर लाहौर में बैठकर नादिरशाह ने नवाब जकरिया खान से पूछा?

ये कौन है?
ये सिख हैं..... जवाब था
ये कहाँ रहते हैं?
जंगलों में रहते हैं।
क्या खाते पीते है?
जो मिल जाए वही खा लेते हैं।
सोते कहां हैं?
घोड़े की पीठ पर चलते चलते सो लेते हैं?
ये सुनकर नादिरशाह ने जकरिया खान से कहा था।
- आने वाले 50-60 वर्षो में यही सिख पंजाब के मालिक होंगे।''

– इनसे बचना है तो इनका नामोनिशां तक मिटा दो।''

हालांकि जकरिया खान ने सिखों का नाम मिटाने में कोई कसर नहीं छोड़ी। सिखों के सिरों के मोल लगाए गए, सिर लाने वाले को ईनाम भी दिये जाते। मुगलों की ओर से भारी अत्याचार किये गए। सिखों को अब अपनों को बचाने के लिए पहाड़ों की और जंगलों के शरणागत होना पड़ा। गुरु गोबिन्द सिंह के सिखों को अपने बचाव की, अपने अस्तित्व की लड़ाई लड़नी पड़ी। इसी कारण कभी वे अब्दाली की सेना से लड़ पड़े और बचाव में भंयकर नरसंहार भी करवाया जिसमें अब्दाली की खूंखार सेना ने बूढ़े सिखों, बच्चों औरतों का भंयकर कत्लेआम किया। जो 30 हजार से अधिक बताया जाता है। इतने नरसंहार होने के बाद भी सिखों ने अपनी हिम्मत नहीं हारी।

इतना होने के बावजूद सिखों ने विपरीत परिस्थितियों में भी हार नहीं मानी और संघर्ष में हमेशा अग्रणी रहे। अब्दाली के हमलों ने मुगल साम्राज्य को घराशायी कर दिया और ऐसे में सिखों का उभार लाजमी था। सिखों के दल बन गए और ये दल कुछ इलाकों के मालिक भी हो गए। राखी प्रबन्ध या सुरक्षा प्रबन्ध के कारण इन दलों को जनता से धन प्राप्त होता था। इस सुरक्षा प्रबन्धों के कारण और अपने निजी स्वार्थो के कारण मिसलें व इनके सरदार आपस में भी संघर्ष कर उठते थे जिसका नुकसान आम सिखों को उठाना पड़ता था।

वास्तव में इनकी स्थिति भी डाकू दलों जैसी ही थी जो एक दूसरे के क्षेत्र को हथियाने में ही लगे रहते थे।

कई बार कुछ मिसलें मिलकर दूसरी मिसल का पूरा क्षेत्र हथिया लेती थी। कई बार लूट के माल के बंटवारे के कारण ये मित्र दल भी दुश्मन बन जाते थे। इतना होने पर भी इनमें चरित्र का अभाव नहीं था। लूटते तो थे पर धन को ही लूटते थे औरतों को नहीं। नादिरशाह की भविष्यवाणी तब सच हुई जब सिखों की मिसलों ने दिल्ली विजेता अहमदशाह अब्दाली को पंजाब में जबर्दस्त टक्कर दी और भारी कत्लेआम होने के बाद भी अब्दाली को उसकी औकात बता दी और ये भी समझा दिया कि वास्तव में पंजाब के वही असली मालिक है। हमलावर असली मालिक नहीं हो सकते।

फिर महाराजा रणजीत सिंह के राज्य में सभी ओर खुशहाली थी। सभी मिल जुलकर रहते थे। सभी आपने धर्मो के अनुसार जी रहे थे साथ ही दूसरे ध र्म का सम्मान भी करते थे। पर अंग्रेजों की गिद्धदृष्टि से पंजाब कब तक बच पाता। रणजीत सिंह के कमजोर उत्तराधिकारियों तथा ध्यान सिंह डोगरा और गुलाब सिंह

डोगरा की घिनौनी, कुटिल साजिशों के कारण पंजाब का समृद्ध प्रदेश छिन्न-भिन्न हो गया। पंजाब का शाही खजाना लूट कर डोगरों ने जम्मू कश्मीर क्षेत्र अपने नाम करवा कर वहां के राजा बन गए। अब पंजाब के मालिक अंग्रेज हो गए थे और उनके कानून अब पंजाब में पूरी तरह लागू हो गए थे। ईसा मसीह के अनुयायिओं, इन कम्पनी व्यापारियों ने मनचाहे कानून बना कर भारत को मनचाहे ढंग से लूटना शुरु कर दिया। मराठों को टीपू सूल्तान से लड़वाया, फिर मराठों को बीजापुर से लड़वाया। कोई हारे कोई जीते फायदा तो अंग्रेजों का ही था।

X X X

उधर कूका दल ने कटानी मोड़ पर आकर देखा तो भैणी गांव दूर रह गया था। हीरा सिंह और लहिना सिंह ने अपने साथ आए साथियों की ओर देखा, स्थिति को भांपा और उन लोगों की ताकत को नापा। अब सवाल सामने था कि सभी के पास हथियार नहीं थे। सभी के पास तलवारें भी नहीं थी। कुछ के पास लाठियां ही थी। दल में शामिल नारियों के पास कुछ भी नहीं था। ये सभी लोग आचार व्यवहार के पक्के थे पर अब सामने सवाल था कि कोटला पर हमला करने चले हैं पर हथियार तो हैं नहीं और बिना हथियारों के मुकाबला कैसे किया जाएगा। इसके लिए हथियारों की भी जरुरत तो थी ही। ये सभी गुरु गोबिन्द सिंह के असूलों पर पूरी तरह से कायम थे पर जैसे ही महाराजा रणजीत सिंह का राज्य आया तो सिखी असूलों को दफन कर दिया गया। चारों तरफ आडम्बर व पाखण्ड ही दिखाई देने लगे थे। जो राज्य बहादुर और चरित्रवान सिखों की कुर्बानी के कारण स्थापित हुआ था उसकी स्थापना के बाद इन सभी चरित्रवान और सिद्वान्तनिष्ठ सिखों को या तो डोगरों के षडयन्त्रों के कारण मरना पड़ा या निर्वासन भुगतना पड़ा। लाहौर दरबार में डोगरों की आमद से सिख राज्य को ग्रहण लग गया। रणजीत सिंह की शराबखोरी और अय्याशी के कारण इन डोगरों ने साजिशों के वे गन्दे खेल खेले कि कई बार कलम लिखते हुए कांप जाती है। रणजीत सिंह इन डोगरों के विरुद्व एक शब्द भी सुनना नहीं चाहता था। ध्यानचन्द डोगरा तो दरबार में रणजीत सिंह के पैरों को अपनी गोद में लेकर वफादारी का ऐसा नाटक करता था कि रणजीत सिंह की एक आंख ये देख ही नहीं पाई। कहा तो यहां तक जाता है कि वह इस ध्यानचंद डोगरे के पुत्र हीराचन्द को जो बाद में मौका ताड़कर सिख बन गए थे, अपनी गोद में बिठाता था और अपने पुत्रों को मिलने के लिए घन्टों इंतजार करवाता था। कैसा राजा था जो अपने ही पुत्रों को मिलने के लिए घन्टों तक इंतजार करवाया करता था जब राजा का पूरा तंत्र और राज्य का संचालन अन्य लोग करें तब ऐसा ही होता

है।

चापलूसों की जय जयकार होने लगी, उनके हाथों में राज्य की शक्ति सिमटने लगी तब धीरे-धीरे सब कुछ उन्हीं डोगरों के हाथों में सिमटने लगा। कहने को तो यह खालसा दरबार कहलाता था पर न तो वहां खालसा पंथ की चलती थी ना ही खालसा नियमों की चलती थी। जिस राज्य में नर्तकियों और शराबखोरों की चलने लगी वहां सिद्वान्तों और नियमों की बात कौन करें। लाहौर के सबसे अधिक स्वामीभक्त सरदार शाम सिंह अटारी वाले को भी मरवा दिया गया। लाहौर का रास्ता गद्दारी और घिनौनी साजिशों के दम पर खोला गया। अंग्रेजों से लड़ाई सिख सेना जीत चुकी थी तभी गद्दारों ने अपना खेल खेला। लालचन्द ब्राहमण ने सभराओं की लड़ाई का सारा मानचित्र पहले ही अंग्रेजों को भिजवा दिया था।

अंग्रेजी सेना के तीन हमले नाकाम हो गए थे। ऐसी हालत में अगर सिख सेना उन पर हमला कर देती तो सिखों की विजय हो जाती। पर सिख सेना का सेनापति तेजराम उर्फ तेजा सिंह अपनी टुकड़ी के साथ लड़ाई का मैदान छोड़कर भाग खड़ा हुआ। भागता हुआ वह सतलुज नदी पर बनाया नावों का पुल भी तुड़वा गया ताकि सिख सेना को भागने का अवसर न मिल सके। अंग्रेजों को पुल तोड़ दिये जाने की सूचना मिलते ही अंग्रेजों ने सिख सेना पर जबर्दस्त हमला कर दिया।

सरदार शाम सिंह अटारी वाले के नेतृत्व में सिख सेना बहादुरी से लड़ी और सहायता के लिए गद्दार लाल सिंह को संदेश भिजवाया जिसने बारूद की जगह सरसों से भरी बोरियां सेना को भिजवा दीं। ऐसे में तोपें कैसे चलतीं। तलवारें कब तक अपना काम करती। सेना भाग नहीं सकती थी पुल तोड़ा जा चुका था सिपाही सतलुज में गिरकर डूबते गए। शाम सिंह अटारी वाले अन्तिम समय तक लड़ते हुए शहीद हो गए। उनके शरीर में लगे घाव गिने नहीं जा सकते थे। सिखों के दस हजार के लगभग सैनिक मारे गए। गद्दार जीत गए और स्वमीभक्त हार गए। वाह री सिखों की किस्मत गद्दार राजा बन गए सिख गुलाम बन गए। सिख राज्य का सूर्य तो उसी दिन डूबने लगा था जब रणजीत सिंह नशों का और नृतकियों का गुलाम बन गया था। ऐसे में संयम, अनुशासन कहां टिक पाएंगे?

सिख अंग्रेज लड़ाईयों में चाहे सिख सेना हार गई पर उसकी वीरता का भय अंग्रेजी सेना में व्याप्त हो गया। काश कि गद्दार अपना काम न कर पाते। चन्द सोने के सिक्कों की खातिर, अपनी सुख सुविधाओं की खातिर देश के स्वाभिमान को गिरवी न रख देते। कुछ ऐसा ही 1857 के गदर के समय मुगल सम्राट बहादुरशाह जफर के साथ किया गया था। जब उसके सम्बंधियों ने अपने छोटे-छोटे

स्वार्थो और धन लिप्सा के कारण मुगल सम्राट को हिमायूं के मकबरे से गिरफ्तार करवा दिया था। कुछ ऐसा ही सलूक अवध के नवाब वाजिद अली शाह के साथ भी हुआ। गद्दारों के कारण ही उसकी रुचि शासन से हटाकर नाच गाने की ओर मोड़ दी गई थी और बाद में अवध की गद्दी से उसको हटाकर अवध पर कब्जा कर लिया था। पंजाब की आजादी अंग्रेजों की आंखों में बुरी तरह चुभ रहीं थी वे मौके की तलाश में थे और रणजीत सिंह की मौत के बाद अंग्रेजों को ये मौका मिल गया और उन्होंने इसके लिए पैसा, शराब, धन सम्पदा पद अधिकार सभी कुछ खुलकर गद्दारों में बांटे। इसी वजह से अंग्रेजी शासन ने चापलूसों की एक नई रक्षापंक्ति अपने लिए खड़ी कर ली जिसका अंग्रेजी शासन, अंग्रेजी भाषा, अंग्रेजी कानून की पैरवी करना ही काम बन गया था। ये चापलूस खुद को साधारण जनता से अलग और उच्च समझते थे।

हीरा सिंह की इस टोली और आजादी के दीवानों की मस्ती भी देखने लायक थी। उनकी सोच व विचारधारा अलग ही थी। इन सबका मनोबल, सभी की हिम्मत मजबूत थी। सभी के चेहरों से दृढ़ता झलक रही थी। हथियारों का सवाल परेशानी का सबब था। कहां से हथियार लिये जाएं।

मलेरकोटला की मुसलमानी रियासत पर हमला निहत्थे तो नहीं किया जा सकता। दुश्मन की ताकत का कोई अनुमान नहीं था ऐसे में आमने सामने की लड़ाई में भारी नुकसान की आंशका हो सकती थी। हीरा सिंह ने लहिना सिंह व अन्य से विचार किया तो ये तय किया गया कुछ मील पर मलौद में बदन सिंह रहता है। वह नामधारियों से सहानुभूति भी रखता था। कई बार उसके घर में नामधारी आते जाते भी रहते थे। बातचीत में उसने एक दो बार कहा भी था कि कभी किसी सहायता की जरुरत पड़े तो वह करेगा। तब ये तय हुआ कि हथियारों के लिए मलौद के बदन सिंह से मिलकर हथियार मांगे जाएं। अब आगे भी मौत थी और पीछे भी मौत थी। सतगुरु राम सिंह जी के बहुत समझाने पर हीरा सिंह ने कहा था कि उन्हें गुरु तेग बहादुर जी सामने नजर आ रहे हैं। ऐसे में अब सिर देने से पीछे कैसे हटा जा सकता है। सतगुरु जी ये सुनकर चुप रह गए। आप समझ गए कि होनी होकर रहेगी, इसे टाला नहीं जा सकता। सूबा साहिब सिंह ने भी इन सब को समझाने की बहुत कोशिश की। सतगुरु जी के समझाने पर जब वे नहीं माने तो सतगुरु जी चुप हो गए। भगवान राम भी सामर्थ्यवान होते हुए होनी को टाल नहीं सके। भगवान कृष्ण को मथुरा छोड़कर द्वारका में जा कर बसना पड़ा। सतगुरु जी समयचक्र के

सम्मुख मौन हो गए।

लहना सिंह को तो उनके पड़ोसियों के सम्बधियों ने फेरू शहर और सभराओं की लड़ाई के बारे में विस्तार से बताया। फेरू शहर की लड़ाई अंग्रेजों के साथ सिखों की रणजीत सिंह के नेतृत्व के बिना दूसरी लड़ाई थी। इस लड़ाई से पहले ही लालचन्द मिसर और तेजराम अंग्रेजों के कैम्प में बैठकर इसका निर्णय कर चुके थे। इससे पहले खुद की लड़ाई भी सिख हार चुके थे। लड़ाई के समय सिखों के नेता लालचन्द, कन्हैयालाल, अयोध्या प्रसाद और अमरनाथ अपनी सैनिक टुकड़ियों के साथ बनी योजनानुसार मैदान से भाग खड़े हुए। इतना होने के बावजूद भी नेताहीन सिख सेना लड़ती रही। सभी का ध्येय सिख सेना का कत्लेआम करवाना था। ब्राह्मणों से सिख बने इन गद्दार लोगों का एक ही निशाना था कि जैसे भी हो सके सिख सेना को खत्म करवाया जाए।

इस लड़ाई के बाद इन दोनों ब्राहमणों का लाहौर दरबार में मुख्य अधिकारी बनने का सपना भी पूरा किया गया। इतना होने के बाद भी लड़ाई में 700-800 के करीब अंग्रेज सैनिक मारे गए पर सिख सैनिकों की संख्या हजारों में थी। सिख कौम और गुरु साहेबान के सिखों के बुरे दिन देखिए कि फेरू शहर की इस लड़ाई में पटियाला, नाभा, संगरूर आदि सिख रियासतों की सेना और सिख राजाओं ने अंग्रेजों का साथ देकर ईमानदार सिख सैनिकों को कत्ल करवाया।

इसी तरह सभराओं की लड़ाई भी गद्दारी के कारण हारी गई। हालांकि इस लड़ाई का नेतृत्व करने वाले बहादुर और ईमानदार स. शाम सिंह अटारी वाले का नेतृत्व गद्दारों को नहीं भांप सका और उन्हीं ब्राहमणों की गद्दारी और नमकहरामी के कारण सभराओं की लड़ाई हारी गई साथ ही सिखों का बहादुर और ईमानदार सेनापति भी खोना पड़ा।

इस सभी दल के लोगों को सतगुरु जी ने समझाया था कि अभी ऐसी बगावत का समय नहीं आया है। हमें बहुत समझदारी से कदम उठाना चाहिए। अमृतसर और रायकोट की कसाई वध घटनाओं को लेकर जहां एक तरफ नामधारियों में सरकार के प्रति बहुत रोष था वहीं सरकार की गिद्बदृष्टि नामधारी सिखों की हर गतिविधि को बारीकी से देखभाल रही थी।

रायकोट में सूबा ज्ञान सिंह को फांसी पर चढ़ाए जाने के कारण सिखों में बैचेनी का वातावरण था। सतगुरु जी के आदेश से सूबा रतन सिंह नामधारी सिखों के अधिकतर निर्णय किया करते थे इस कारण अधिकतर आपसी विवाद अंग्रेजी अदालतों में नहीं जा पाते थे। अपने नम्र व शान्त स्वभाव के कारण सूबा रतन सिंह

की नामधारी सिखों के अलावा भी अन्य वर्ग सम्मान करते थे। ज्ञानी रतन सिंह को फांसी दिये जाने का सभी वर्गों को खेद था पर सरकार के विरुद्ध कौन बोलता। सतगुरु राम सिंह जी ने गुरु गोबिन्द सिंह जी द्वारा खालसा बनाने के समय बताई गई नियमावली को पुनः मजबूती के साथ लागू किया। सिखों का पहिरावा बदल कर सफेद कुर्ता पाजामा और सफेद गोल पगड़ी को आवश्यक किया। पंजाब में उन दिनों सिख सरदारों द्वारा मुगल सरदारों की नकल करने में गर्व महसूस होता था। ब्याह शादी में सुरापान चलेगा नतृकियों का नाच रंग रहेगा। मासांहार के बिना शादी की कल्पना ही नहीं की जा सकती थी। सम्पन्न सरदारों की देखा देखी अन्य परिवार भी ये सब आडम्बर करने को विवश हो रहे थे। समाज में आदर सम्मान के लिए ये सब करना ही पड़ रहा था। ये मजबूरी भी थी और विवश्ता भी थी।

सतगुरु राम सिंह जी ने सबसे पहले अपने अनुयायियों का जीवन स्तर सुधारा, आचार व्यवहार सुधारा और सत्यनिष्ठ बनाया, नियमों का सख्ती से पालन करना सिखाया। जो सदव्यवहारी होगा, नियमबद्घ होगा वह कभी भी आडम्बरों में नहीं पड़ेगा, पाखण्ड और दिखावा नहीं करेगा। पंजाब में जो सामाजिक क्रान्ति गुरु गोबिन्द सिंह जी, खालसा बनाकर लाए थे, उसे सतगुरु राम सिंह जी ने सत्य आध ारित नियमावली देकर और आगे बढ़ाकर, सन्त खालसा बना के सिद्घान्तों का अनुयायी बना दिया। गाय प्राचीन काल से आस्था की केन्द्र रही है। मुगलों के राज्य में गाय वध होता था पर हिन्दु मुस्लिम का मेल-मिलाप भी चल रहा था।

अंग्रेजी सरकार के पंजाब को हड़पने के बाद सबसे पहला मुख्य काम पंजाब की हिन्दु मुस्लिम एकता को तोड़ना था और इसलिए मुस्लिम समुदाय को गऊवध की खुली छूट दे दी गई थी। अंग्रेजों की प्रवति तो सूदखोर लालाओं की प्रवृति थी व्यापारी से शासक बने अंग्रेज आम जनता को आपस में लड़ाए बिना अपना उल्लू सीधा नहीं कर सकते थे।

1857 की क्रान्ति विफल हो चुकी थी। इस क्रांति में शामिल सभी लोगों के अपने-अपने निजी स्वार्थ थे। राज्यों को हड़पना इसका मुख्य कारण माना जा सकता है। पर साधारण जनता को इसमें शामिल होने का भयानक दण्ड भुगतना पड़ा। उनका कसूर था कि वे स्थानीय शासकों को दिल से प्यार करते थे। अंग्रेजों के शोषण ने अंधाक्रोध भड़का दिया। जहां युद्ध में और अंग्रेज बन्दियों के साथ भारतीय शासकों ने मानवता को अपनाया वहीं अंग्रेज अधिकारियों ने किसी दया-भावना, नियमावली या सिद्घान्त को नहीं माना। अंग्रेजी सरकार का तो बस एक ही नियम था कि विद्रोही को कठोर सजा दी जाए ताकि और कोई उनके विरुद्ध

दोबारा सिर न उठा सके।

140 व्यक्तियों का यह दल चलता हुआ रब्बो गांव में आ पहुंचा। भूख प्यास से बुरा हाल था। थकान से चेहरे व्याकुल थे पर आंखों में दृढ़ता थी। इरादे अभी भी मजबूत थे। रब्बो गांव में रुककर जो पास था वह पकाया खाया। कड़ाह प्रसाद बनाकर सभी को बांटा। रात वहीं रुके सुबह सभी मलौद में हथियारों के लिए चल पड़े। कदमों में मजबूती थी, इरादों में फौलादी खनक थी। हीरा सिंह को उम्मीद थी कि मलौद के सरदार बदन सिंह उनकी हथियारों और घोड़ों से सहायता करेगा। अच्छा सम्पन्न सरदार था। बड़ी हवेली का मालिक, नौकर चाकर थे लम्बी चौड़ी खेती बाड़ी थी। फाटक खोलने पर नौकरों को हटा कर हीरा सिंह और लहिना सिंह, सरदार बदन सिंह के सम्मुख हुए और कहा कि हथियारों व घोड़ों से उनकी मदद की जाए। साथ उसे खाने पीने का सामान भी दिया जाए। उन्हें सरदार से बहुत उम्मीद थी पर जिस उम्मीद को लेकर हीरा सिंह और लहिना सिंह, सरदार बदन सिंह के पास आए थे सरदार बदन सिंह बिल्कुल उसके उलट निकला। उसने हथियार देने से साफ इंकार कर दिया। उसने छूटते ही कहा।

मैं किसी भी सरकार विरोधी की मदद नहीं कर सकता।

'हम सरकार विरोधी कहां है?' हीरा सिंह ने कहा। कोटले पर हमला वास्तव में इन सिखों का एक उबाल था जो गुरुमुख सिंह की बातों से उठ गया था। इस दल ने बिना विचार बिना परिणाम के बाबत सोचे कोटले पर हमला कर दिया। बिना हथियारों के कब तक लड़ सकते थे। कितनी देर तक मुकाबला कर सकते थे।

बिना दूसरे की ताकत को आंकते हुए हमला करना कितना आत्मघाती हो सकता है ये बाद में पता चला। इस आत्मधाती कदम के कारण जहां इन कूका सिखों को भयानक सजा के रूप में तोपों से उड़ाया गया वहीं दूसरी ओर अंग्रेजों के विरुद्व चल रहे बहिष्कार कार्यक्रम, स्वदेशी और अन्य कार्यक्रमों को बहुत धक्का लगा। इस आत्मघाती कदम के कारण सतगुरु जी को देश निर्वासन के रूप में रंगून जाना पड़ा। बिना नेता के कोई भी कार्यक्रम सफलता की ऊँचाइयों तक नहीं पहुंच सकता। कुछ इसी भांति का हाल 1857 के असफल गद्दर का हुआ था जहां बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न नेता नहीं था जो थे भी तो उनका प्रभाव सीमित ही समझा गया। आम जनता के सहयोग के मिलने पर भी सही सुयोग्य मजबूत मार्ग दर्शन के कम्पनी सरकार के विरुद्व ये कदम बिखर कर रह गया।

सतगुरु जी के चमत्कारी व्यक्तित्व ने कुछ वर्षो में पंजाब में ऐसा प्रभाव

दिखाया कि सभी वर्गों व जातियों के लोग सतगुरु जी के कार्यक्रम से जुड़ते चले गए। जिसकी संख्या लाखों में पहुंच गई। लेकिन फिर भी कुछ लोग हवा के रुख के साथ अपना पक्ष बदलते जाते। उनमें से बदन सिंह भी एक था। इसीलिए उसने इस दल की सहायता नहीं की।

''तुम्हारी सारी कार्यवाईयां सरकार के खिलाफ ही तो हैं। अमृतसर, रायकोट में कसाईयों को मारकर सरकार विरोधी काम नहीं किया।''

''गायों को मारना क्या सरकार की सहमति से नहीं हो रहा था।''

''तुम क्या गायों के ठेकेदार हो। मुसलमान तो जानवरों को मार कर ही खाते हैं ये उनके धर्म में है।''

''धर्म कब जानवरों को मारने की इजाजत देता है। ये सब तो जुबान के स्वाद पूरे करने के चस्के हैं।'' हीरा सिंह ने बदन सिंह को जवाब दिया।

मैं तुम्हें कोई हथियार नहीं दे सकता। बदन सिंह ने तुनककर कहा''

''तो घोड़े दे दो।'' हीरा सिंह ने कहा

''घोड़े भी नहीं दूंगा।'' बदन सिंह का स्पष्ट इंकार था।

बदन सिंह और हीरा सिंह की बातचीत ऊँची हो गई थी।

यह सुनकर सरदार बदन सिंह के नौकर आकर हीरा सिंह के चारों तरफ खड़े हो गए। वे तो मालिक के वफादार थे।

बात हाथापाई तक आ गई। हीरा सिंह हथियार और घोड़े लेने पर अड़ा हुआ था और बदन सिंह कुछ भी न देने पर अड़ गया था।

हीरा सिंह, लहिना सिंह को हथियार और घोड़े चाहिए थे। सरदार के पास घोड़े थे पर वह सरदारी के घमण्ड में आकर कुछ भी देने को तैयार नहीं था। बात बढ़कर लड़ाई तक आ गई। इस मारामारी में चोटें तो दोनों पक्षों को लगनी थी। दो व्यक्ति बदन सिंह के और दो कूके इसमें मारे गए।

हीरा सिंह के साथी सभी गर्म थे, सभी जवान थे। जिस काम के लिए वे भैणी साहिब से निकले थे वह काम जितनी जल्दी हो जाए उतना ही अच्छा था। पर बिना हथियारों और बिना तैयारी के बदला लेने निकला यह दल अब हथियारों की जरुरत को भांप गया था। बिना तैयारी के लड़ी गई लड़ाई का परिणाम आधा अधूरा और भयानक हो सकता है।

ये बात हीरासिंह लहना सिंह को भैणी गांव छोड़ते ही समझ लेनी चाहिए थी।

लेकिन तब भावावेश के कारण वे ये बात नहीं समझ सके।

सरदार बदन सिंह समझ गया था कि नामधारी दल की सहायता करना या उन्हें हथियारों से मदद करना, उसके लिए व उसके परिवार के लिए, उसके सम्बन्धियों के लिए कितना खतरनाक हो सकता है। सुविधा सम्पन्न लोगों ने कभी भी ऐसे लोगों की मदद नहीं की जो कुछ कर गुजरने के लिए सिर पर कफन बांध ाकर मैदान में निकलते हैं।

देखा जाए तो बिना तैयारी की लड़ाई का जो परिणाम निकलता है वही परिणाम हुआ। जो मलेरकोटला के मैदान में देखने को मिला।

हालांकि झांसी की रानी लक्ष्मीबाई तैयारी के साथ अंग्रेजों के विरुद्व लड़ी थी पर ग्वालियर के राजा जयाजी राव सिंधिया ने उसकी कोई सहायता नहीं की बल्कि पटियाला राज्य की भांति अंग्रेजों की सहायता करके रानी लक्ष्मीबाई को मरवा दिया और इसके इनाम में अपना राज्य पक्का कर लिया, और अंग्रेजी वफादारी में तलवे चाटते रहे। इसके ईनाम में अंग्रेजों ने ग्वालियर भी सिंधिया को दे दिया। इस ग्वालियर के साथ मिलने के कारण सिंधिया की शक्ति बल में तथा राज्य का काफी विस्तार हो गया। सदा से ऐसे अवसरवादी लोगों ने अवसर का लाभ उठाकर स्वयं को सम्पन्न बनाया।

हीरा सिंह, लहना सिंह कोटले के रास्ते की सभी रुकावटों को भी हटाना चाहते थे। इसमें समय लग रहा था। बदन सिंह के इशारे पर नौकरों ने हथियार निकाल लिये। उन्हें तो अपने मालिक की रक्षा करनी थी। बाकी के सब लोग उसको शत्रु दिखाई देते थे।

हीरा सिंह और उनके दल का निशाना मलेरकोटला था। असली मुठभेड़ तो वही होनी थी। उसी के लिए बदन सिंह से हथियार व घोड़े मांगे थे। कोटला रियासत के पास सेना भी थी, हथियार भी थे। किले की दीवारें भी थी। साथ ही अंग्रेजी सरकार की छत्रछाया भी थी। मलेरकोटला के विषय में नम्बरदार गुरमुख सिह ने भैणी साहब मे रो-रोकर सब को बताया था। गुरमुख सिंह की कही हुई सारी बातें हीरासिंह के आगे आंखों में घूम रही थीं।

बदन सिंह से छीनाछपटी और मुठभेड़ में हीरा सिंह ने दो घोड़े और कुछ तलवारें छपट ली थीं। दो सिखों की मृत्यु हो गई कई घायल हो गए। घोड़े तो किसी के पास नहीं थे। सभी पैदल थे। मीलों का सफर पैदल ही तय किया गया था। साथ में औरतें और बच्चे भी थे। औरतें जवान थी। उनके चेहरों से थकान का निशान तक नहीं था। बच्चे भी थके नहीं थे। उन्हें भी इस तरह की लड़ाई होने की उम्मीद नहीं थी। अभी मीलों का सफर बाकी था। कोटला अभी दूर था। वहां भी

लड़ाई ही होनी थी। मालूम नहीं इस लड़ाई का परिणाम क्या होगा। यहां तो बदन सिंह अकेला ही था विरोध करने को, साथ में उसके नौकर भी थे। पर वहां कोटला में मुकाबला कैसा होगा, उसके परिणाम तो भंयकर ही होंगे। दल के सभी सदस्यों का अगला निशाना कोटला का थानेदार और वह काजी था जिसने बैल को मारने का फतवा दिया था जिसने सबसे सामने बैल का कत्ल किया था। उस पर गुस्सा होना लाजिमी भी था। उसका फैसला या फतवा सरासर गलत था। कुछ इसी तरह की बात 1857 की क्रान्ति के समय हुई थी जब मंगल पांडे ने जोश में आकर निश्चित तारीख से पहले विस्फोट कर दिया था। जब कि पूरे देश में कानपुर, झांसी, दिल्ली आदि में तय तारीख पर एक ही दिन अंग्रेजी सत्ता के विरुद्ध विस्फोट होना था पर मंगलपांडे की जल्दबाजी ने क्रान्ति की पूरी जमीन को गड़बड़ कर दिया जिस कारण 1857 की क्रान्ति सफल न हो सकी और यह असफल गद्दर ही बन कर रह गया।

इसके बाद अंग्रेजी अत्याचारों का जो सिलसिला शुरु हुआ उसका वर्णन करना असम्भव है। गांव के गांव जलाकर राख कर दिये। नामोनिशां मिटा दिये। सैकड़ों लोगों को बिना किसी कसूर के फांसी पर चढ़ा दिया गया, सैकड़ों लोगों को, जो निहत्थे थे उनको गोलियों का निशाना बना दिया। अंग्रेजी सत्ता के पास दया नाम की वस्तु नही थी। दया की बात करने वाले ईसा मसीह के अनुयायियों के पास प्यार-दया की बात करना भी अपराध सा बन गया था। दया तो अंग्रेज इग्लैंड में ही दफना आए थे। गांव के गांव जलाकर राख में मिला दिये गए और आजादी के लिए आवाज उठाना पाप हो गया। आजादी के सिपाहियों का साथ देना फांसी व तोप से बांधकर उड़ाये जाने के बराबर था। अंग्रेज के पास दण्ड देने का यही सुगम तरीका समझा जाता था। यह एकतरफा था, गलत था उसको चाहिए था कि बैल पर अत्याचार करने वाले को दण्ड देता। उस भार से लदे जानवर पर दया दिखाने के स्थान पर उसने अत्याचारी के पक्ष में फतवा देकर अपने सम्प्रदाय के लोगों को तो प्रसन्न कर लिया पर दूसरी और दूसरे सम्प्रदाय के लोगों का क्रोध भड़का दिया विशेषतया नामधारी सिखों का।

इन नामधारी सिखों की सहानुभुति प्रारम्भ से ही गाय के साथ रही थी और इसीलिए कुछ उत्साही नामधारी सिखों में कसाईयों को सबक सिखाने के लिए उनकी हत्या करके गायवध को रोकने के लिए साहसपूर्ण कदम उठाया पर उसकी प्रतिक्रिया पंजाब की जनता पर उतनी नहीं पड़ी जितनी प्रतिक्रिया होने का अनुमान था। न तो सिखों में न ही हिन्दू भाईयों में प्रतिक्रिया स्वरूप क्रोध में उबाल आया।

अंग्रेजी सरकार की भक्ति में डूबे सिख समुदाय ने प्रतिक्रिया स्वरूप इस बात पर प्रसन्नता व्यक्त करने में अपनी भलाई समझी थी नामधारी सिखों को फांसी पर लटकाया गया। पंजाब के सभी ऐतिहासिक गुरुद्वारों पर महन्तों का कब्जा था और ये महन्त गुरुओं से अधिक गौरी सरकार के आकाओं को अपना सब कुछ मानते थे। ये महन्त इन आकाओं की हर इच्छा को सर्वोपरि मानते थे और उसके लिए सदैव तत्पर रहते थे। गुरु गोबिन्द सिंह जी के महाराष्ट्र के नान्देड़ चले जाने के बाद गुरु अमर दास जी और गुरु राम दास जी के बड़े पुत्र पृथ्वीचन्द के वंशजों की चांदी कटने लगी। वैसे भी ये सभी गुरु परम्परा के वाहक नहीं थे पर अपने अपने निजी स्वार्थों के वाहक अवश्य थे। बाबा बन्दा सिंह बहादुर की सभी मुगल विरोधी कार्यवाईयों में ये सभी उसके समर्थक नहीं थे पर मौका मिलते ही सभी गुरुघर का झण्डा उठाकर अपना अपना परचम लहराने लगते थे। बाबा बन्दा सिंह बहादुर के विरुद्ध कोटला की रियासत ने मुगलों का साथ दिया था।

बाबा बन्दा सिंह और उनके साथियों की शहादत के बाद पंजाब फिर अनाथ हो गया और सिखों पर अत्याचारों का चक्र फिर से प्रारम्भ हो गया। सिखों में से जो भी मुगल के हाथ लग जाता उसको बुरी तरह से प्रताड़ित किया जाता जिसके फल स्वरूप सिखों ने जंगलों और पहाड़ों में शरण ली। बाबा बन्दा सिंह की शहादत के बाद सबसे बड़ी घटना यह हुई कि ईरान के राजा नादिरशाह ने दिल्ली पर आक्रमण कर मुगल सत्ता को धाराशायी कर दिया और लूट के माल में कोहेनूर हीरा, तख्तेताउस के साथ 20 हजार से अधिक लड़कियों को लूट के सामान के साथ बैलगाडियों में लादकर ईरान ले गया। इनमें हिन्दू/मुस्लिम सभी धर्म की लड़कियां/सुन्दर नारियां शामिल थी। पंजाब पार करते नादिरशाह को सिखों ने कई दल बनाकर लूट लिया और लूट के सामान में शामिल नारियों को छुड़ा लिया यानि कि बदनाम लुटेरे को सिखों ने लूट लिया।

इसके बाद अहमदशाह अब्दाली ने दिल्ली को लूटने के इरादे से दिल्ली पर आक्रमण कर दिया। उसका भी मुकाबला सिखों के विभिन्न दलों से हो गया पर इस मुकाबले में सिखों का भारी जानी नुकसान हुआ। तीस हजार के करीब सिखों का नरसंहार किया गया। सिखों के दल इस नरसंहार से भयभीत नहीं हुए और कई बार अब्दाली से टकरा कर उसे ईरान लौटने पर विवश कर दिया। सिखों ने अब्दाली को सैनिक भाषा में यह समझा दिया कि पंजाब के वास्तविक स्वामी वहीं है। आज नहीं तो कल दर्रा खैबर का रास्ता बंद किया जा सकता था। जो रास्ता पंजाब से होकर दिल्ली तक जाता था। हमलावरों ने मार्ग की भूमि को जो पंजाब

की भूमि कही जाती थी खूब लूटा, विंध्वस किया और धर्म परिवर्तन भी करवाया। पंजाब के लोग कभी भी सुरक्षित नहीं रह पाए। पंजाब को अंग्रेजी कम्पनी के हड़पने के बाद इन सभी को अपना अपना झण्डा फहराने का अवसर मिल गया और जिस अमृतसर शहर की स्थापना गुरु रामदास जी द्वारा की गई थी जो शीघ्र ही एक व्यापारिक केन्द्र भी बन गया।

अमृतसर सभी के लिए एक तीर्थ था। यहां सभी धर्म के लोग मिलजुल कर रहते थे। इस तीर्थ के साथ कसाईघर खोले जाने की किसी ने भी प्रतिक्रिया नहीं की और गुलामी का सुरापान करने वाले धनी वर्ग को नामधारी सिखों का कसाई मारने का काम बिल्कुल अच्छा नहीं लगा था। महाराजा रणजीत सिंह के समय ये सभी लड़ाईयों में उलझे रहे, घर से बाहर रहे, मरते और मारते रहे, जीतते-हारते रहे। जीतने पर पुरस्कार में जमीन मिली, घन-धान्य मिला, सुविधाएं मिली, सम्पन्नता मिली, अधिकार मिले और इनके साथ निरकुंश व्यवहार भी मिला।

अब मालिक बदल गये। रणजीत सिंह का राज्य समाप्त हो गया। अंग्रेजों के हाथ में सत्ता आ गई और ये सभी धनी सरदार किसी भी हालत में अपने नये मालिक को नाराज नहीं करना चाहते थे।

सतगुरु राम सिंह जी ने अपने जादुई व्यक्तित्व और कामों से स्थिति बदल कर रख दी। सभी ओर से अन्धकार में डूबे लोगों को भैणी साहिब में आशा की एक किरण उगती दिखाई दी। उन्हें लगने लगा कि उनकी स्थिति बदल जाएगी। गुलामी का गहन अन्धकार जल्दी ही छंटने लगेगा। सरदार बदन सिंह नामधारी सिखों को सरेआम फांसी देने के समाचार सुनकर अन्दर से घबरा गया था। असल में देखा जाए तो उस समय का सिख समाज बुरी तरह से बिखरा हुआ था और नेतृत्व विहिन था। बाबा वीर सिंह जोकि रणजीत सिंह के समय से सिखी का प्रचार कर रह थे। उनका अपना डेरा भी था और उनके पास कई सौ सैनिक भी थे। महाराजा की नजर में बाबा बीर सिंह व उसके डेरे का बड़ा सम्मान था। उसने डेरे के नाम जमीन भी लगवा रखी जिससे डेरे को अनाज की भरपाई होती थी। उसके डेरे में हर आए व्यक्ति का स्वागत होता था और सभी के लिए भोजन की व्यवस्था थी। डोगरे भाईयों को ये मालूम था कि बाबा बीर सिंह का सिखों के मन में बहुत सम्मान है बाबा बीर सिंह को समाप्त करने की डोगरे भाईयों ने साजिशें बनानी प्रारम्भ कर दी। महाराजा के किसी भी हितचिन्तक को वे जीवित नहीं रहने देना चाहते थे। जीवित रहने पर इन लोगों से प्रतिकार या प्रतिरोध की सम्भावना बनी रह सकती थी।

X X X

उधर जब लाहौर दरबार में मारा–मारी चल रही थी तब महाराजा रणजीत सिंह के दो राजकुमार बाबा बीर सिंह के डेरे को सुरक्षित मानकर वहां आ गए। डोगरे ये कब बर्दाशत कर सकते थे। असल में ध्यानसिंह डोगरा अपने पुत्र हीरा सिंह को राजा बनाना चाहता था जब तक रणजीत सिंह का एक भी राजकुमार जीवित रहेगा उसकी इच्छा पूरी नहीं हो सकती थी। रणजीत सिंह के पूरे परिवार की समाप्ति ही इन डोगरों का लक्ष्य था। और इसकी पूर्ति में वे घिनौनी से घिनौनी साजिश या नीच कृत्य भी करने को तत्पर रहते थे। रणजीत सिहं के बाद महाराजा खड़क सिंह को हकीमों से धीमा जहर दिलवा कर मरवा दिया और जब खडक सिंह का अन्तिम संस्कार करके उसका बेटा कुंवर नौनिहाल सिंह लौट रहा था तो दरवाजे का छज्जा गिरवा कर उसे घायल कर दिया और भीतर ले जाकर पत्थर मार मार की उसकी नृशंस हत्या कर दी। अब डोगरों का निशाना बाबा बीर सिंह था। डोगरों ने सेना को भड़का दिया और उसे बाबा बीर सिंह के डेरे पर आक्रमण के लिए राजी कर लिया। बाबा बीर सिंह के डेरे के साथ उनका निशाना तो बाकी बचे दोनों राजकुमार थे। डेरे के साथ ही उनका भी नामोनिशान मिटाना उनका उद्देश्य था और इसके लिए उन्होनें ये साजिश रची थी डेरे पर आक्रमण का कोई बहाना नहीं था फिर भी सेना ने डेरे पर हमला कर दिया। उस डेरे पर वाणी का निरन्तर प्रवाह चलता रहता था। वह लाहौर दरबार की घिनौनी साजिशों से भलीभांति जानकार था। बाबा बीर सिंह के डेरे पर अकारण आक्रमण कर दिया और डेरा तोपों के गोलों से उड़ा कर खण्डहर बना दिया गया। इस लड़ाई में रणजीत सिह के दोनों पुत्र भी मारे गए। डेरा राख में मिला दिया। ऐसे में सिख सिद्घान्तों की कौन बात करता। जो सिद्घान्तों की बात करता वहीं डोगरों का सबसे बड़ा दुश्मन बनता और उसका ऐसे माहौल में जीवित रहना असम्भव ही था। सिख सेनाओं को षडयंत्र करके अंग्रेजों से लड़वा कर नष्ट कर दिया।

सतगुरु राम सिंह जी जब खालसा सेना में कार्यरत थे उनके सभी साथी उनके सन्त स्वभाव के कारण आपका बहुत आदर सम्मान करते थे। सेना की नौकरी छोड़ने के बाद चिन्तन मनन का काफी समय मिला था। सतगुरु जी ने ये समझ लिया था कि जब तक सिखों का चरित्र बल ऊँचा नहीं किया जाएगा, तब तक पंजाबियों का व्यवहार नहीं सुधरेगा तब तक किसी भी तरह का विचार चक्र, सफल नहीं पाएगा। जब तक धन लालच को, पद लालच को, उपहार लालच को समाप्त नहीं किया जाएगा तब तक कुछ भी नहीं हो पाएगा। नया शासक आने पर अपने

पासे फेंकता है अपने वफादार पैदा करता है और जो उसके हितों की रक्षा करते हैं। उसके लिए मर मिटने को तैयार रहता है।

X X X

ये जरूरी था कि नये शासक के मोहजाल में न फंसा जाए और साधारण जनता को ऐसे मोहजाल से सावधान किया जाए बल्कि इस मोहजाल के विरोध में खड़ा होने की हिम्मत प्रदान की जाए। जुल्म व गलत से भिड़ने का साहस पैदा किया जा सके।

ऐसे में सतगुरु जी ने अपने समर्थकों को नशों के विरुद्ध खड़ा किया। तब पंजाब में अफीम, तम्बाकू, भांग, शराब का चलन बहुत बढ़ गया था। सम्पन्न परिवार इसके सेवन व इसे परोसने में अपनी इज्जत समझते थे तो मध्यम वर्ग इसके लिए कहीं से भी धन की व्यवस्था करके ये सब करता था। देखा जाए तो उन दिनों इन वस्तुओं के प्रचलन को इज्जत के साथ जोड़ दिया गया था। गुरुद्वारों में चाहे गुरवाणी का पठन किया जाता था साथ ही नये मालिकों का गुणगान भी किया जाता था। ऐसे में इन तीर्थ स्थानों से ये उम्मीद करना व्यर्थ सी बात थी।

मलौद से चलने के बाद इस दल का निशाना कोटला था। हीरा सिंह और लहिना सिंह के नेतृत्व में ये दल मलेरकोटला की तरफ बढ़ता गया। किसी के मन में यह सन्देह नहीं था कि उनके पास हथियार नहीं है, घोड़े नहीं है, मुकाबला शक्तिशाली से हैं। उनके पास सभी साधन थे सुविधाएं थे, अपनी छोटी सेना भी थी, अंग्रेजी सरकार की छत्रछाया भी थी। अन्य सिख कहे जाने वाली रियासतों से भी सहायता मिल सकती है। जो बिन मांगे सहायता देने को सदैव तैयार रहती थी।

रणजीत सिंह के सिख राज्य में भी ये सारी सिख कहे जाने वाली रियासतें विरुद्ध ही रहीं। पटियाला की रियासत इनका नेतृत्व करती थी। देशभक्ति के नाम पर उसके पास कुछ भी नहीं था। पटियाला का सदैव ही बाहरी लोगों की सहायता की और मुख्य काम अपनी स्वार्थ सिद्धि को पूरा करना ही था। सिख अब्दाली भंयकर युद्ध में उसकी भूमिका थी ही नहीं। वह तो अब्दाली का समर्थक ही रहा। अब सवाल ये था कि कोटला के भीतर कैसे घुसा जाए। यह दल तो मरने ही आया था। मरने से पहले यह कुछ कर जाना था। दल का लक्ष्य कोटला किले के घुसना ही था। एक जगह से दीवार टूटी देखकर सारा दल कूद कर दीवार पार कर गया सामने कसाइयों की बस्ती थी। नामधारियों को आते देख कसाई जो उनके पास था वहीं लेकर मुकाबले में आ गए। आपस में लड़ाई होने लगी। कोटला के सभी सैनिक भी उनकी मदद को आ गए। इस लड़ाई मे ंदो नामधारी मारे गये तथा

7 लोग घायल हो गए।

इस लड़ाई में काजी भी शामिल था। हीरा सिंह ने उस काजी का काम तमाम कर दिया। हीरा सिंह के हाथ में खून सनी तलवार थी। कोटला में भगदड़ मच गई। यह सब अचानक ही हुआ था। काजी के मरने पर कुछ ने राहत की सांस ली क्योंकि बहुत लोग उसके व्यवहार से खिन्न थे प्रसन्न नहीं थे। जो करना था सिखों ने कर दिखाया। घोड़े पर सवार हीरा सिंह और लहिना सिंह जिध ार भी निकल जाते सामने मैदान खाली हो जाता। शेर की भांति दोनों गरज रहे थे। इन्द्रकौर और खेमकौर भी दहाड़ रहीं थी। हीरा सिंह और लहिना सिंह के कपड़ों पर पड़े खून के छीटें पड़ी चमक रहे थे। कोटले के कोतवाल समुद्र खां को आते ही इस घटना का पता चला तो वह घोड़ा दौड़ाता हुआ इस दल के पास आ पहुंचा। आते ही उसने ललकार कर कहा -

''कहां है हीरा सिंह मेरे सामने आए।''

हीरा सिंह ने सुना तो घोड़ा घुमाकर सामने आ गया।

'ये है हीरा सिंह' सामने आकर हीरा सिंह ने जबाव दिया-

''आ मुकाबला कर ले।'

''आ जा कर ले मुकाबला।'' सुमद्र खां ने कहा

अब ये दोनों आमने सामने खड़े थे।

''ले पठान कर ले पहला वार।''

''सरदार इतनी अकड़ तेरे काम नहीं आएगी।'

ये अकड़ नहीं चुनौती है।'' हीरा सिंह ने कहा। इसके साथ लहिना सिंह खड़ा था। पीछे अन्य लोग भी खड़े थे इसमें बच्चे भी थे और औरतें भी थी। कोटला की लड़ाई के बाद रियासत के बाहर परकोटे से कुछ दूर आ गए थे। कोटला के युद्ध में कसाई भी मारे गए, काजी भी मारा गया, अपने भी कुछ लोग मारे गए। कुछ घायल भी हो गए। पर युद्ध अभी समाप्त नहीं हुआ था।

समुद्र खां पठान दिलेर भी था, जांबाज भी था। उसके सामने हीरा सिंह, लहिना सिंह खड़े थे घोड़ों पर। जो नामधारियों के नेता थे।

समुद्र खां-''आ जा अपने मन की कर ले'' -

''कोटला में होता तो तेरी भी मौत हो चुकी होती।''

''मौत तो तेरी होनी हैं''

''बहुत मनमर्जी कर ली''

''निहत्थे कसाईयों को मारकर क्या बहादुरी दिखाई है''

समुद्र खां हेकड़ी ने दिखा हीरा सिंह को कहा।

"अब दोनो सामने हैं जो करना है कर ले बहादुरी दिखा ले।"

"मैं तेरे सामने हूँ।" हीरा सिंह ने गरजकर कहा।"

"सामने तो पठान का बेटा भी है।"

समुद्र खां ने तलवार संभाली और बाएं हाथ से घोड़े की लगाम खींची। घोड़े ने अगले पैरों से तेजी से आगे की उड़ान भरी। सामने हीरा सिंह था। तलवार का भरपूर हाथ उसने चलाया हीरा सिंह के पास कोई ढाल भी नहीं थी। तलवार का भरपूर वार कैसे रोका जाए। समय नहीं था सोच विचार का। बायां हाथ आगे कर दिया तलवार के वार से आधा हाथ कटकर दूर जा गिरा। खून का फव्वारा बह निकला। दूर तक खून ही खून बिखर गया। समुद्र खां खिलखिला कर हंस पड़ा। तभी हीरा सिंह ने बहते खून को देखा वह भयभीत नहीं हुआ और ऊंची आवाज में कहा -

"समुद्र खां अब मेरा वार आया, संभाल इसे।"तलवार का भरपूर वार हीरा सिंह ने समुद्र खां पर मारा और कदू की भांति उसका सिर कटकर जमीन पर लौट कर शान्त हो गया।

ये सब इतनी शीघ्रता से हुआ कि दल के सभी लोग देखते रह गए। समुद्र खां का कटा हुआ सिर दूर पड़ा था और बाकी शरीर वहीं पड़ा था। खून बहता रहा हीरा सिंह ने परवाह नहीं की।

जत्थेदार जी -"खून बह रहा है लहिना सिंह ने हीरा सिंह के पास आ कर कहा। बहने दो।"

"धरती की प्यास मिट जाएगी" - हीरा सिंह ने दर्द की परवाह न करते हुए हंसते हुए कहा। तभी दल की औरतें आगे आई। कुछ उपक्रम करने को उनकी आखें चारों तरफ धूम रहीं थी।

सारा दल वहां से आगे चल पड़ा। कोई ऐसी जगह जहां बैठकर हाथ का खून रोका जा सके। हीरा सिंह की वीरता के कारण दल के सभी सदस्यों की हिम्मत बढ़ गई थी। आगे जो होना था उसका भी सारे दल को आभास था इस लड़ाई का परिणाम अधिक से अधिक जेल की कोठरियों या फांसी की सजा हो सकती थी। अगर मरने से डरते तो ये काम ही नहीं करते। कोटला पर हमला करने का अंजाम इसके सिवाय और हो भी क्या सकता था। भैणी साहब छोड़ने के बाद और लक्ष्य साधने के बिना इस तरह चल पड़ने से अंजाम तो बुरा ही होना था। कोटला एक मुसलमानी रियासत थी और अभी वहां उत्तराधिकार के झगड़े के कारण वहां अंग्रेज

अधिकारी भी अपनी टुकड़ी के साथ तैनात था। कोटला की इस लड़ाई को कम्पनी सरकार ने अपनी लड़ाई मान लिया था।

जत्थे के लोगों ने सत श्री अकाल का नारा गुंजाया। पर अभी विपत्ति टली नहीं थी। कुछ भी हो सकता है। हीरा सिंह की बांह से खून बराबर बहता जा रहा था। रोकने का कोई उपाय पास नहीं था। कपड़ा पास नहीं था लहना सिंह ने जेब से रुमाल निकालकर उस पर बांधा। बांधते हुए रुमाल पूरी तरह खून से भीग गया। हीरा सिंह हंस पड़ा-

"रहने दे लहिना सिंह रुमाल से क्या होने वाला है।"

तभी माता खेम कौर आगे आई अपना दुपट्टा बांधने लगी।

"रहने दे माई यहां से आगे चलो। वहीं रुककर कुछ सोचते है।" हीरासिंह ने कहा। सभी हीरा सिंह की बात सुनकर आगे बढ़े। आंखें चारों ओर कोई आश्रय खोज रही थीं। समुद्र खां की मृत्यु का समाचार मिलने पर कोटला से सिपाहियों का बड़ा दल आ सकता था। तब कुछ भी हो सकता था।

हीरा सिंह की कटी हुई बाजू से खून लगातार निकल रहा था। अब दल के लोगों की चिन्ता ये थी कि बांह से बहता खून कैसे रोका जाए। अधिक खून का निकल जाना भी अच्छी बात नहीं थी। सभी लोग पीछे पीछे आ रहे थे। न किसी के चेहरे पर चिन्ता न किसी के चेहरे पर धबराहट का भाव।

X X X

सामने गांव था रड़। वहीं पड़ाव किया। तुरन्त प्रबन्ध किया गया तेल के नीचे सूखी लकड़ियां जलाई, तेल गर्म किया। हीरा सिंह ने खून बहती आधी बांह को गर्म तेल में उबाल दिया शरीर का कोई हिस्सा जले तो दर्द होना लाजमी हैं पर यहां तो हीरा सिंह द्वारा खूद ही गर्म तेल में बांह डाली गई थी। कुछ मिनट के लिए दर्द हुआ फिर चेहरे पर दृढ़ता लौट आई।

सजा की मंजिल सामने थी। वह भी अनुमान से अधिक की सजा।

कम्पनी सरकार ने जो अमृतसर के अजनाला में किया वह भी भंयकर था। वहां सैकड़ों लोगों को कुएं में सांस धुट कर मरना पड़ा। उस कुंए को अभी तक याद किया जाता है। लखनऊ और मेरठ में जो हुआ, दिल्ली में जो हुआ, कानपुर में जिस बेरहमी से सैकड़ों हिन्दुस्तानियों को मौत के घाट उतार दिया गया। ऐसे गोरी चमड़ी वाले इन लोगों से किसी रहम की उम्मीद करना या इंसाफ की आशा करनी बेमानी बात है। महाजनी प्रवृति के इस गोरी चमड़ी वाले लोगों का मुख्य तथा एकमात्र उद्देश्य प्रजा में आतंक कायम करना रहा है। छल-बल, प्रपंच से सत्ता

को बनाए रखना इन अंग्रेजों का काम है।

महाराजा रणजीत सिंह का राज तो ताश के पतों की भांति बिखेर दिया गया। ये सब अंग्रेजों की घिनौनी शतरंज का खेल था और इसमें अंग्रेज अपने भारतीय चापलूस और लालची कुत्तों के कारण कामयाब हो गए। जब सत्ता मिल गई तो उसे कायम रखने के लिए अंग्रेजों ने जितने भी घृणित काम हो सकते थे किए, जितने लालच दिये जा सकते थे, वे दिये। जो कुछ किया जा सकता था वह सब किया।

X X X

पंजाब पर कब्जा करने के बाद अंग्रेजों ने प्रजा में आतंक कायम किया। हिन्दु मुस्लमान के बीच खाई खुदवाई, नफरत बढ़ाई। पंजाब के समन्वयवादी भाईचारे को तार-तार कर दिया। जो कभी मिलकर रहते थे, जिनके दुख-सुख सांझे थे, जो कन्धे से कन्धा मिला कर चलते थे उनके सभी के कन्धे अब भिड़ने लगे, मिलकर रहने वाले जरा जरा सी बात पर लड़ने लगे। जिनके हाथ दूसरों के दुआ करने में उठते थे आज उनके हाथों में एक दूसरे का गला काटने के लिए तेज ध ाार हथियार पकड़ा दिये गये थे। वतन की राह में चलने वालों के लिए ऐसी मुश्किलें तो आम बात थी। सत्ता से टकराना कोई हंसी खेल नहीं था। इस खेल की परिणति मौत से होती है। इस राह पर चलने वालों ने मौत के खेल को सदैव आसान ही समझा। फांसी पर चढ़ना उनके लिए खेल ही था और इस खेल में हार-जीत तो होती रहती है। इन लोगों ने जो करना था कर दिखाया। कोटला के बहाने अंग्रेजी सता को चुनौती दे डाली और इसका परिणाम भी मालूम था। शासन ज्यादा से ज्यादा फांसी दे सकता है। इस तरह आवाज उठाने वालों की आवाज बन्द कर दी जाती थी।

कुछ घन्टों के बाद कोटला से फौजी टुकड़ी आई और इन सभी को गिरफ्तार कर लिया गया। अब लड़ने का कोई औचित्य नहीं रह गया था। सभी ने आत्मसमर्पण कर दिया। ये लड़ना चाहते तो लड़ भी सकते थे पर हीरा सिंह और लहिना सिंह ने आत्मसमर्पण का मार्ग चुना। सभी को पकड़कर शेरगढ़ के थाने में बन्द कर दिया। उस समय 80 लोग थे। इसमें दो औरतें और दो बच्चे भी शमिल थे। जनवरी की हाड़ कपांऊ ठंड भी इन लोगों के मजबूत इरादों को कमजोर नहीं कर पाई। किसी को कुछ खाने को नहीं दिया। भूख सभी को लगी थी। बच्चों के चेहरे उनकी भूख को बता रहे थे। लहिना सिंह ने शेरगढ़ के थानेदार को भोजन आदि के लिए कहा-

'बागियों को कैसा खाना।''

'' एक तो सरकार से बगावत करते हो दूसरे रोटी मांगते हो''-

''अब हम तुम्हारे कैदी हैं।''

लहिना सिंह ने कहा।

सारा दल शेरगढ़ के किले में बन्द था। सिखों से मुसलमानों का तो जन्म से ही छत्तीस का आंकड़ा रहा है। मुसलमान शासक थे और बाकी जनता उसकी गुलाम थी। मुगलों ने सदैव से ही आम जनता को अपना गुलाम ही समझा। भला गुलामों को जीने का अधिकार कब होता है। खुले आसमान के नीचे उन्हें तो सांस लेने का भी अधिकार नहीं होता। जो लोग हमलावरों के गुलाम रहे उनका पानी भरते रहे, उनकी जूतियां उठाते रहे और दुर्भाग्य देखिये कि ये हमलावरों से राजा बने। ये हमलावर जाती बार अपने पानी पिलाने वाले मिशतियों को राजा बना गए और भारत की वीर कहे जाने वाली जनता भी कई सौ साल इन मिशतियों की गुलामी झेलती रहीं।

मुगलों ने भारत जीतकर यहां पैर जमा लिये। ये मुगल चंगेज खां और तैमूर लंग की वर्णशंकर सन्तान थी जिसे राजस्थान के राजपूतों ने स्वीकार किया और उनसे रिश्ते नाते भी स्थापित कर के मुगल सत्ता को भारत में स्थायी तौर पर स्थापित कर दिया। आजादी की आवाज उठाने वालों को सदैव से ही सजा मिलती रही है चाहे वे किसी भी वर्ग या मजहब के रहे हों।

अब चाहे सरकार बदल गई थी और काली चमड़ी वालों के स्थान पर गोरी चमड़ी वाले आ गए थे। उनके आने कानून बदल गए, सजाए बदल गई, रहने-सहने के ढंग बदल गए, पहिरावे बदल गए। पर सत्ता के विरुद्ध विरोध का भाव नहीं बदला। नफरत का चाहे ढंग बदल गया हो, बलिदान देने वाले बदल गए पर बलिदानी की भावना नहीं बदली। सिपाही- सरकार के बागी हो-

''कैदी हैं तो क्या हुआ।''

''कोई खाना नहीं मिलेगा।'' थानेदार ने कड़क कर कहा।

''खाना नहीं मिलेगा तो हम मर नहीं जाएगें।'' हीरा सिंह ने जबाव दिया-

''खुला छोड़ कर देख, तुझे सबक सिखा देंगे।''

''ज्यादा बकवास न करो।''

''कोई खाना नहीं मिलेगा। यह कहकर थानेदार वहां से चला गया और तैनात सिपाहियों को आदेश दे गया''-

''इनका ख्याल रखना। पूरी नजर रखना ये बागी है बागी।''

सिपाही हीरा सिंह को घूरता रहा। उसके मन में हीरासिंह को देखकर कई तरह के विचार आ रहे थे। वह दूसरी तरफ जाते हुए भी बोल गया–

'हाथ कट गया पर अकड़ नहीं गई।'' हीरा सिंह ने सुना तो मुस्करा पड़ा। रात का अन्धकार गहराता जा रहा था। बाहर दरवाजे के साथ एक लालटेन टंगी हुई थी। दूसरी लालटेन वहां टंगी थी जहां दो सिपाही चारपाई पर बैठे थे। कमरे में मौजूद सभी के चहेरे साफ दिखाई दे रहे थे। पर चेहरों पर सर्दी के कारण कोई घबराहट नहीं थी। सभी साथ मिल के बैठे थे ताकि सर्दी के प्रकोप से बचा जा सके। न उनके पास गर्म कपड़े थे न कोई कम्बल था। दोनों औरतों के पास एक एक शॉल था जो इस भारी ठण्ड में नाकाफी था।

सभी वाहेगुरु का जाप कर रहे थे। दोनों बच्चे उन औरतें की गोद में बैठे थे। गोद की गर्मी इस ठण्ड में काफी नहीं थी बिशन सिंह, इन्द्रकौर की गोद में बैठा था। इन्द्रकौर उसे बता रही थी –

''बेटा, गुरु गोबिन्द सिंह जी के दोनों बेटे भी तुम से छोटे थे जब उन्हें कैद करके सरहिन्द में रखा गया था।''

किसी भी धर्म में बच्चों के विरुद्व किसी तरह की दुर्भावना का वर्णन नहीं किया गया। पर धर्मग्रंथों की परिभाषाओं को उनकी व्याख्या करने वालों ने इसे अपनी सत्ता तथा निजी स्वार्थ के लिए इस्तेमाल किया। इन्सानियत की बात करने वालों की जुबान बन्द करवा दी गई। कुछ ऐसा ही गुरु गोबिन्द सिंह जी के दोनों छोटे मासूम बच्चों के साथ भी किया। ये तो मानी हुई बात है कि सजा देने के बाद भी नफरत की भावना नहीं दब पाई बल्कि ऐसी सजाओं के बाद इस नफरत को ज्यादा बढ़ावा मिलता है। गुरु गोबिन्द सिंह जी को आनन्दपुर का किला छोड़ने के लिए जितनी भी कसमें कुरान की खाई गई गीता के प्रण किये गए उन पर न तो मुगल सेना कायम रही और ना ही पहाड़ी हिन्दू रियासतों के राजा।

इतिहास इनके विषय में मालूम नहीं मौन क्यों है। पर इन्होंने जो भी किया व सभी धर्मों के सिद्वान्तों और आदर्शो को पलीता लगाने जैसा ही तो है। ये किसी ऐसे गुनाह या पाप से कम नहीं माना जा सकता जिसकी किसी भी स्थिति में माफी या क्षमादान नहीं हो सकती। झूठ इठला तो सकता है पर बहुत समय तक जीवित नहीं रह सकता। सत्य को कठिनाईयों के बीच से निकलकर मंजिल तक जाना पड़ता है। यहीं कुछ गुरु जी के बच्चों के साथ हुआ। उस समय झूठ–जीत तो गया पर कालान्तर में सत्य की पूजा ही होती है उसी की जय–जयकार होती है।

''तब साहिबजादों की उम्र पांच और सात साल की थी। तुम तो उनसे

कहीं बड़े हो। "पर वे पकड़े कैसे गए थे?" बिशन सिंह ने पूछा- "आनन्दपुर का किला छोड़ने के बाद जब सिरसा नदी पार कर रहे थे तब अचानक सिरसा नदी में बाढ़ आने के कारण गुरु गोबिन्द सिंह जी महाराज का परिवार आपस में बिखर गया।"

"फिर क्या हुआ?" बिशन सिंह ने पूछा - "बेटा दो बेटे दादी के साथ तथा दो बड़े बेटे गुरुजी के साथ अलग-अलग दिशाओं में निकल गए। रात की भंयकर ठण्ड और अन्धेरे के कारण जिसका मुंह पर जिधर हुआ निकल गए। ऊपर से बरसात के कारण दिशा भ्रम होने के आसार बने हुए थे।"

दादी के साथ दोनों छोटे पोते गंगू रसोइये के साथ उसके गांव की ओर चल पड़े। पर गंगू की नीयत खोटी थी वह ईनाम के लालच में आ गया और दोनों छोटे साहबजादों को पकड़वा दिया। दोनों साहबजादों को दादी के साथ सरहिन्द के नवाब के आदेश पर ऐसे बुर्ज में रखा गया जिसे ठण्डा बुर्ज कहा जाता था। सर्दी की भयंकर रातें, ऊपर से बरसाती मौसम और रखा गया ठण्डे बुर्ज में।

"पर यह तो इंसानियत नही हैं?" बिशन सिंह ने फिर पूछा? -

"बेटा जिसके हाथ में सत्ता होती है, शासनतन्त्र होता है वह जैसे चाहे अपने अधिकारों का प्रयोग या दुरुपयोग कर सकता है उसे सब ठीक लगता है सत्ता उसके पास होती है, अधिकार भी होते है।"

जब सत्ता में अधिकारी अन्धा हो जाता है तब उसे अच्छे बुरे का ज्ञान नहीं होता। अंहकार उसकी बुद्धि को जड़ कर देता है। अपने अंहकार के सम्मुख उसे कुछ भी अच्छा या ठीक नहीं लगता। यही काम सरहिन्द के सूबेदार ने अंहकार में अन्धा होकर किया। और अब सत्ता के अंहकार में अंग्रेजी शासन के अधिकारी कर रहे थे। सरहिन्द के नवाब के कहने पर इन साहबजादों को भयंकर से भंयकर दण्ड देना था। गुरु जी से दुश्मनी और मुगलसत्ता के अंहकार ने सरहिन्द के नवाब को इतना अन्धा करके नीचे गिरा दिया कि उसने उन छोटे साहबजादों को जीवित ही दीवारों में चिनवा दिया और मृत्यु के बाद उनके अन्तिम संस्कार की जमीन लेने के लिए सोने की मोहरों में कीमत वसूल की।

यही हाल आज इस गोरी चमड़ी वाली सरकार का है। यह भी सत्ता के नशे मे ंअन्धी और बहरी है। न्याय और सत्य की बात करना इनके सामने बेमानी है। इन्होंने देश को कंगाल करना है। बिहार के जुलाहों के हाथ काट दिये। नील की खेती करवाने के लिए किसानों के साथ इस तरह के घिनौने अत्याचार किये गए कि जिनको सुन कर रूह कांप जाती है। ये कसाईयों से कम नहीं है। बल्कि

उन से भी बढ़कर हैं। ये हमारे कुटीर उद्योगों को खा गए, हथकरघा उद्योग को खा गए। हमारी सभ्यता को खा गये, भाषा खा गए, नियम, सिद्वान्त खा गये। मिशनरी स्कूल खुलवाकर हमारे आचार व्यवहार को खा गये। और जो सरहिन्द में हुआ था वही कुछ अंग्रेज हुक्मरान हमारे साथ करने वाले है। आतंक पैदा करना उनका मकसद है और उसी की कल हमारे लिए तैयारी की जाएगी। कल देखना कि अधि कारों का कैसे गलत इस्तेमाल किया जाता है।

''कल अंग्रेजी अधिकारी भी कम नहीं करेंगे। उन अधिकारों को इस्तमोल करने की शक्ति व साधन भी होते हैं लेकिन बिशन सिंह की बात काटकर इन्द्र कौर ने कहा''-

''यही सब सरहिन्द के नवाब ने किया। साहबजादों को ठण्डे बुर्ज में भूखा रखा गया। एक मोती मेहरा ने अपनी औरत के गहने बेच कर उधार लेकर, साहिबजादों को दूध पिलाने की सेवा की, पता चलने पर मोती मेहरा को परिवार सहित भंयकर सजा दी गई।''

''तब दादी ने क्या समझाया था'' बिशन सिंह ने पूछा। ''बेटा दादी ने साहिबजादों को एक ही बात समझाई कि उन्हें अपने शहीद दादा गुरु तेग बहादुर जी तथा पिता गुरु गोबिन्द सिंह जी की आन-बान और शान कायम रखनी है दोनों किसी भी हालत में अधीनता स्वीकार नहीं करेंगे आज जिस सम्मान के साथ दादा गुरु का नाम लिया जाता है वही शान और सम्मान उन्हें भी पाना है।''

''ठीक है मैं भी यह सब याद रखूंगा।'' और बिशन सिंह तुम भी सतगुरु राम सिंह जी के सिख हो जिन्होंने हमें सच पर कायम रहना सिखाया है। किसी भी स्थिति में अंग्रेजों से सहयोग नहीं करना। हमें अपने किये पर कोई शर्मन्दिगी नहीं है। यह हमारा धर्म था। जिसके लिए सतगुरु जी के सिख अमृतसर और रायकोट में हंसते-हंसते फांसी पर चढ़ गए थे।'' बिशन सिह चुप रहा।

वह सोच रहा था कि सरहिन्द की वह भंयकर सजा जब साहिबजादों के इरादों की मजबूती को नहीं डिगा पाई तो सरहिन्द के ठण्डे बुर्ज के मुकाबले शेरगढ़ किले की यह सर्दी चाहे कम नहीं है पर फिर भी हमारे पास साहबजादों के इरादों की मजबूती तो है। अमृतसर की घटना तो तुम्हें याद है। फांसी पर चढ़ने से पूर्व हमारे वीर नामधारी भाईयों ने एक नई परम्परा की शुरुआत तो कर ही दी थी। फांसी से पहले हमारे वीरों ने जानवरों के चमड़े से बनाई रस्सी से फांसी पर चढ़ना स्वीकार नहीं किया और मजबूर होकर अंग्रेजों को रेशम की मोटी डोरी मंगवानी पड़ी। तब भी इन वीरों ने अपनी हिम्मत और इरादे से गौरी सरकार को चकरा दिया था। जिस

तरह आज हम सम्मान के साथ साहिबजादों का नाम लेते है उसी प्रकार कभी हमारा भी नाम उसी सम्मान के साथ लिया जाएगा। जो कौम और देश के लिए जीता और मरता है वहीं इतिहास का सृजन करता हैं, इतिहास में उसी का नाम रहता है।

आज जो सर्दी की रात है कल यह शायद नहीं रहेगी। पर हमारे इरादे रहेंगे, हमारे विचार रहेंगे, हमारा विश्वास रहेगा। कल हमें इस अन्यायी गोरी सरकार की मनमानी को भी सहना पड़ेगा। हमें इतिहास में नाम आने पर राहत मिलेगी। मैं फिर पूरी मजबूती से ये कहती हूँ कि शेरगढ़ किले की ये काली रातें और जनवरी महीने की भंयकर सर्दी तुम्हारे इरादों को भी नहीं तोड़ पाएगी। सतगुरु जी की सिक्खी से वहीं गिर न जाना। ज्यादा से ज्यादा फांसी मिलेगी या तोपों से उड़ा दिया जाएगा। गुलामो के जिल्लत भरे लम्बे जीवन से खुली हवा का कुछ देर का स्वतन्त्र व खुला जीवन लाख दर्जे बेहतर होता है। बिशन सिंह चुप रहा-''बेटा फांसी पर चढ़ने वाले बलिदानी वीरों की सौगन्ध है कि कभी इरादा कमजोर न करना। हमारे साथ इन सभी लोगों को जो सजा मिलेगी हम या तुम उससे बच नहीं सकते। इस गोरी चमड़ी वालों से रहम की उम्मीद करना नर्क की आग में जलने के समान होगा।'' – ये अन्याय पर खड़ी सरकार है।

''बहन जी यह क्या समझा रही हो बिशन सिंह को।'' हरनाम सिंह ने पास आ पूछा।

– भाई हरनाम सिंह वही समझा रही जो एक मां को समझाना चाहिए जो काम लहना सिंह, बीहला सिंह, ज्ञानी रतन सिंह ने किया है उन्हीं के पदचिन्हों पर चलने की प्रेरणा दे रही हूँ। यह सुनकर हरनाम सिंह चुप हो गया।

''मैंनें इससे यही कहा है कि जैसे साहिबजादों ने आन बान रखी वैसे ही तुम्हें भी मां के दूध की लाज रखनी है। यह सर्दी शरीर को ड़रा सकती है, आत्मा को नहीं डरा सकती। तुमने अपने सतगुरु का नाम नीचा नहीं करना है। कहीं आने वाला इतिहास तुम पर लांछन न लगा सके। इतिहास में तुम्हारा नाम, तुम्हारा बलिदान सुनहरी अक्षरों में लिखा जाना चाहिए। आने वाले समय में जैसे साहिबजादों के बारे में माएँ बच्चों को बताती हैं वैसे ही तुम्हारे विषय में भी माएँ अपने बच्चों को बताया करें।

शेरगढ़ का यह कमरा भी किसी ठण्डे बुर्ज से कम नहीं था। इस नामधारी दल ने जो करना था वह तो कर ही दिया था। हालांकि ये सब बिना किसी योजना के आवेश में उठाया गया कदम था पर अब पछताने के स्थान पर भिड़ने की बात थी। सजा को स्वीकारने की बात थी। इरादों की मजबूती दिखाने का समय

था और ये मजबूती इस दल का सबसे बड़ा सम्बल था।

कल क्या होगा-"किसी ने पूछ लिया"-

"होना क्या है" हीरा सिंह ने कहा या तो फांसी पर लटकाया जाएगा या तोप से उड़ाया जाएगा।"

"पर तोप से तो बांध कर उड़ाया जाता है। लहना सिंह ने कहा"-

"लहना सिंह कल हम इतिहास बदल देंगे।" यह तौर तरीका बदल देंगे। क्या हम मौत से डरते हैं जो बांध कर तोप से उड़ाया जाए। हम बहादुर है हमने शेरनी का दूध पिया है। तोप के सम्मुख सीना तान कर बहादुरी से खड़े होकर मौत को स्वीकारेंगे। हम नया इतिहास रच देगें। तोप से उड़ाए जाने का तरीका बदल देंगे। हम बागी है, गोरी सरकार हमारी नहीं है। पटियाले के राजा की सरकार भी अपनी नहीं है। हम बागी है, गौरी सरकार के बागी हैं तब फिर उसके कानून की परवाह क्यों करें। मौत की दुल्हन के साथ ब्याह रचाने के लिए अपनी मर्जी तो करेंगे ही सीना तानकर, तोपों के सामने खड़े होकर मौत का मजाक उड़ांएगे।" हीरा सिंह ने कहा-

"हम गुलाम नहीं हैं, हम बागी हैं। अंग्रेजी कानून को मानना या न मानना हमारी मर्जी है। आज जो बंजर मैदान है कभी आने वाले दिनों में यहाँ हमारी याद में मेले लगेंगे, उत्सव मनाए जाएंगे, भव्य स्मारक बनेंगे' एक मिली जुली आवाज कमरे के भीतर गूंज उठी।

हीरा सिंह, लहिना सिंह, बड़ी बेफिक्री से कमरे के भीतर घूम रहे थे। वे देख रहे थे कि किसी कैदी नामधारी सिख का मनोबल कमजोर न होने पाए। उन्हें मालूम था कि कल सुबह उनके साथ फिंरगी सरकार ने क्या करना है। या तो फांसी दे दी जाएगी या उम्र कैद या तोपों से उड़ा दिया जाएगा इसके अलावा क्या सजा मिलेगी। उनकी बगावत का इससे बड़ा पुरस्कार क्या होगा?

"फिरंगी सरकार तुम्हारी होगी, हमारी नहीं है।' सिपाही ये सुनकर हंस कर बोला।"

"अब रणजीत सिंह की नहीं फिरंगी की सरकार है।" तुम्हें रणजीत सिंह ने बहुत बिगाड़ दिया था।

"ओए जुबान संभाल कर बात कर।' रणजीत सिंह जब तक जिन्दा रहा फिरंगियों की एक नहीं चलने दी। बाद में साजिशें कर के सिख राज्य का खात्मा करवा दिया, "खत्म करने वाले भी तो तुम्हारे ही भाई थे।" सिपाही ने कहा -

"दो आने के नौकरों को रणजीत सिंह ने राजा बना दिया था। नौकर

रणजीत सिंह के सिख राज्य के सूरज को डुबा बैठे।''

''तुम्हारा राजा कब सिखों का सगा रहा है।''वह कैसे राजा बना है ये सब मैं जानता हूं। ये चापलूस राजे देश के कब वफादार रहे हैं?'' हीरा सिंह ने कहा

''हीरा सिंह तेरी बहुत जुबान चलती है।''

''ये जुबान तेरे राजा की गुलाम नहीं है। ये तेरे राजा से बागी है और बगावत की जुबान बोलती है। मैंने राजा के सभी रंग देख रखे हैं। तुम्हारे साथ पापी पेट का सवाल है। पर ये पापी पेट ही सारे कुकर्म करवाता है। पाप करवाता है, धोखे करवाता है, कत्ल करवाता है, राज कभी प्यार से नहीं खड़ा होता है। ये लोगों की लाशों पर ही खड़ा किया जाता है। रणजीत सिंह ने मिसलों को मिलाकर इस राज की स्थापना की थी। विभिन्न मिसलों को मिला दिया था।'' ''हीरा सिंह तुझे इतिहास की बड़ी जानकारी है।''

''अपने इतिहास की जानकारी रखनी पड़ती है। हमें तो ये भी पता है कि पटियाला राज कैसे बना।''

''इसके राजा कैसे बने'' पहले इन्होंने हमलावर अब्दाली की सहायता की। ये देशवासियों के विरुद्व हमलावर अब्दाली को सहायता करते थे। जाते हुए अब्दाली पट्टी के इस आला सिंह को राजा का खिताब दे गया।''

''नियमावली तुझे मालूम है अब्दाली के जाने के बाद सारी सिख मिसलों के सरदार आला सिंह को इस गद्दारी की सजा भी देना चाहते थे पर जस्सा सिंह कलाल ने बीच बचाव करके आला सिंह को बचा लिया।'' हीरा सिंह ने कहा।

सिपाही सुनता रहा। तुम उस राजा की गुलामी कर रहे हो जो न कभी कौम का वफादार रहा न कभी देश का वफादार रहा। उसे अपने हितों व स्वार्थ के सिवाय कभी कुछ दिखाई हीं नहीं देता था। 'राजा अपने राज को देखता है।' राजा देश को भी देखता है जिस देश की मिट्टी में वह पलता बड़ा होता है उसको देखना भी उसका कर्तव्य होता है। हीरा सिंह ने कहा -

''हमें ये बात न समझा हीरा सिंह।''

तुम्हारा राजा रणजीत सिंह के विरुद्व अंग्रेजों का साथी रहा। ''अंग्रेज उसके माई बाप रहे हैं।' उनके विरोध में कैसा जा सकता है। 'पेट सभी को लगा होता है पर स्वार्थी नहीं भूखे पेट का सवाल है।''

किसी को आता देख सिपाही चुप हो गया। ये थानेदार नियाज अली था। वह आते ही बोला - ''मुझे छोटे लाट के पास जाना पड़ा। उसे पूरा समाचार देकर

आया हूँ कि कूकों की बगावत कुचल दी गई है। सैकडों कूके पकड़ लिये गए हैं और शेरगढ़ में बंद हैं। कल इन सब को छोटे लाट के सामने पेश किया जाएगा वहीं इनको सजा सुनाएंगे।''

''नियाज अली हमारी सजा तो तय हो चुकी है जो 1857 की बगावत के दौरान फिरंगियों ने जुल्म का दौर चलाया था हम सब को पता है। दिल्ली में क्या हुआ और मेरठ में सैकड़ों को पेड़ों से लटकाकर फांसी दे दी थी।''

''हीरा सिंह तुम तो महाराजा पटियाला के नौकर रहे हो क्या महाराजा को जानते नहीं थें?'' निआज अली ने कहा।

''मैं महाराजा को भी जानता हूँ उसके तौर तरीके भी जानता हूं।''

''हीरा सिंह तूं महाराजा को जानता तो ये बात नहीं करता।' कूके गुरु के उकसाने पर ये बगावत नहीं करते, अपनी अक्ल का इस्तेमाल करते तो ये सब नहीं करते।''

''नियाज अली इसमें हमारे गुरु का कोई हाथ नहीं है जो भी किया सब हमने किया हैं''

''मैं नहीं मानता तुम कूके तो अपने गुरु के इशारे पर चलते हो। फिर कोटले पर हमला भी उसके इशारे पर किया गया होगा।'' निआज अली ने कहा।

''हीरा सिंह बोलता इससे पहले माई खेमकौर ललकार उठी ओए- ''नियाज अली कोटला में हमला हमने किया है इसमें सतगुरु जी को क्यों घसीटते हो। हम तैयार हैं। अब तो इंतजार भी लम्बा हो रहा है। एक-एक पल भारी पड़ रहा है। तेरा छोटा लाट क्या करेगा। इन चापलूस राजाओं को वफादारी का इनाम देगा। महारानी विक्टोरिया की तरफ से एक तमगा और बढ़ा दिया जाएगा। थोड़ा कद और बढ़ जाएगा। सेना की गिनती भी और बढ़ जाएगी। ईमान बेचकर जो चाहे कर लो।''

''हमने ईमान नहीं बेचा। देश और ईमान की खातिर ये कुर्बानियां देने को हम तो तैयार हैं पर जिसकी रियासतें झूठ, फरेब और दम्भ पर खड़ी हैं उनका ईमान और धर्म गोरी सरकार के तलवे चाटना ही रह गया है। यही काम उनके बड़े भी करते आए हैं और ये भी वहीं काम कर रहे हैं। हीरा सिंह कह उठा।''

''ये राजे गौरी सरकार पर निर्भर हैं गोरी सरकार चाहेगी तो ये राजे बने रहेंगे नहीं तो मिट जाएंगे।''

''ये सब बकवास है।'' नियाज अली बोला।

''ये बकवास नहीं है। यह सत्य है। प्रकृति का नियम परिवर्तन करना होता

है। परिवर्तन के चक्र चलने पर सब मिट्टी में मिल जाएगा। जब चंगेज खां नहीं रहा, सिकन्दर नहीं रहा तो ये गोरी सरकार कब तक रहेगी। एक दिन यह भी मिट जाएगी। हमारे देश से इसका खात्मा हो जाएगा। तुम्हारे जुल्म का इतिहास जरूर दोहराया जाएगा और हमारी कुर्बानियों को भी इतिहास गाया जाएगा।'' हीरा सिंह ने कहा।

''क्या तुम्हें याद नहीं कि अमृतसर में पेड़ से लटकाकर चार को फांसी दे दी गई थी। तब कितने लोगों ने तुम्हें समर्थन दिया था। क्या तुम्हारे बिना कोई आया था।''

''हम तब भी तैयार थे।''

''आज भी तैयार हो फांसी पर चढ़ना वीरों का काम है इसके लिए हिम्मत चाहिए, साहस चाहिए। कमजोर दिल वाला फांसी पर तो चढ़ ही नहीं सकता। ये वीरों का काम है, जांबाजों का काम है।''

''गोरी सरकार से माथा लगाया है। तब डरना कैसा। जो भी इस काम के लिए कुर्बानी देनी है वो हम देंगे। मौत तो एक बार ही आएगी। इसके लिए प्रत्येक तरह की, प्रत्येक समय कुर्बानी देनी पड़ती हम देंगे इसके लिए ''हम तो तैयार खड़े हैं।'' नियाज अली। हीरा सिंह ने हुंकार कर कहा।

''ये तो छोटे लाट ही आकर बताएगा कि तुम्हें क्या सजा देनी है।''

''तो बुला ले लाट'' को, लहिना सिंह ने ऊंची आवाज में कहा।''

''फिरंगी सरकार महाराजा साहब पर बहुत खुश है। वह महारजा का एहसान मानती हैं जो महाराजा साहब ने दिल्ली में बगावत को दबाने में मदद की है।'' लहना सिंह ने कहा।

महाराजा तो शुरु से ही फिरंगियों का तलबगार रहा है, खुशामदी रहा है। इसके साथ दूसरी रियासतों के राजे भी होंगे। हीरा सिंह ने कहा- फिरंगी सरकार की मदद करना उनका फर्ज था।

''वही उन्होंने किया'' नियाज अली ने कहा-

''जिनकी रियासतें फिरंगियों की दयादृष्टि पर चलती है वे भला सरकार की मदद क्यों नहीं करेंगे। ये जुल्म करें तो सब माफ है।'' हीरा सिंह ने हुंकार से कहा।

''इनकी सेना ने दिल्ली में लाशों के ढेर लगा दिये गए थे।''

''मुगल सम्राट लाल किले से भागकर किसी मकबरे में छिप गया था। वहीं पकड़ा गया। अपना बुढ़ापा भी खराब कर लिया।'' नियाज अली ने मुंह

बनाकर कहा।

"जिनकी जवानियां तुम खराब कर रहे हो, तब बुढ़ापा कैसे खराब न होगा?" लहना सिंह ने उत्तर दिया-"दिल्ली के अंग्रेज लाट ने सम्राट के दो बेटों के सिर काट, सम्राट को तोहफे में दिये थे। हीरा सिंह ये सुनकर हंस पड़ा।"

"हकूमत इसके सिवाय और क्या कर सकती है। सरकार को यही फिक्र रहती है कि जुल्म के नये नये तरीके क्या हो सकते हैं। कैसे आजादी चाहने वालों को डराया धमकाया जा सकता है कैसे अपना आंतक जमाया और फैलाया जा सकता है। पर क्या इससे आजादी की चाह खत्म हो जाएगी। गुलामी की जंजीरे तोड़ने वालों के साथ सदैव से यही हो रहा है। एक गुलामी की जंजीरें कसता रहा है और दूसरा इन जंजीरों को तोड़नें के उपक्रम में लगा रहता है। इसी क्रम में कई बार जंजीरें तोड़ने का क्रम असफल हो जाता है तो जल्लाद की फांसी, शासनतंत्र अत्याचार की आंधी चलाकर मनचाही सजाएं देता हैं। सजाएं देने का ये सिलसिला तब तक जारी रहता है जब तक या तो शासनतंत्र थक जाता है या शासनतंत्र बदल जाता है और पूरी व्यवस्था बदल जाती है। या फिर नई व्यवस्था बन जाती है।"

X X X

"नारी सुधार के लिए सतगुरु जी ने पंजाब की विधवाओं की ओर ध्यान दिया। ये विधवाएं नरकीय जीवन बिता रही थीं। विधवा अभागिन मानी जाती थी। उसका मुंह देखना भी अशुभ समझा जाता था। यह भी अजीब सी बात थी कि औरत के मरने पर आदमी दूसरी-तीसरी शादी कर लेता है पर आदमी के मरने पर औरत के लिए सभी तरह की मनाही थी। दूसरा विवाह तो वह कर ही नहीं सकती थी। सतगुरु जी ने समझाया कि नारी सृष्टि का केन्द्र है उस को अभागिन कहना बुरी बात है। जब आदमी को दूसरी शादी करने का अधिकार है तो ये अधिकार नारी को क्यों नहीं मिल सकता। सतगुरु जी कहा कि विधवा होने में नारी का क्या कसूर, ये तो परमात्मा की मर्जी पर निर्भर है। एक तो उसके पति का देहांत हो जाता है दूसरा समाज उसपर जुल्म करता है। यह अन्याय है। सतगुरु जी ने विधवा विवाह की जोरदार पैरवी कर शादियां करवाने पर जोर दिया। सतगुरु जी के सिखों में विध वा विवाह अब प्रचलित होने लगा। अब विधवा का चेहरा भी खिलने लगा। वह दोबारा घर की चार दीवारी में खिलखिलाने लगी और दोबारा मातृत्व सुख का सुख मनाने लगी। घर फिर गुलजार होने लगे, फिर से महकने लगे। अब विधवा अभागिन नहीं रही सुभागिन हो गई। और इन्हीं नारियों ने आजादी के परवानों को, देश पर मरने वालों को जन्म देकर बड़ा किया। आजादी चाहने वाले तो पंतगे होते है जो

पैदा ही होते है कुर्बान होने के लिए। उनका काम कुर्बान होना ही होता है। परिणाम की किसे परवाह होती है। सब को आज सजा देने वाले थक जाएंगे पर जुल्म की इन्तहा देखने वाले कभी समाप्त नहीं होंगे। हीरा सिंह ने कहा।''

''यह सब बकवास है। कल पता चल जाएगा।'' नियाज अली ने थोड़ा चिढ़कर कहा।

''हमें तो सब पता है। तुम ही अनजान बनने का ढोंग कर रहे हो।' हीरा सिंह ने फिर कहा। और हंस पड़ा।''

''छोटे लाट का हुक्म है कि कोटला के बंजर मैदान में जहां सिपाहियों की परेड होती है वहीं मैदान में जनता के सामने तुम्हारा फैसला किया जाएगा। आज कोटला रियासत में ढोंढी पिटवा दी गई कि आमो-खास को ये इतला दी दी जाती है कि कल सुबह सभी परेंड़ मैदान में हाजिर हों और बागियों को सजा दिये जाने का मंजर अपनी आंखों के सामने देखे।'' नियाज अली ने गुस्से से कहा।

''ये तो अच्छी बात है मेले को देखने वाले न होंगे तो तमाशे का मजा क्या आएगा।'' हीरा सिंह कहकर हंस दिया-''लाट ने पटियाला नाभा, कपूरथला, संगरूर से तोपें और सेना मंगवा ली है। उनके आने पर तुम्हें सजा दी जाएगी।'' नियाज अली ने बताया।

''जहां से चाहे फिरंगी तोपें मंगवा लो, हम तो निहत्थे हैं। कितना डरता है फिरंगी और उसकी सरकार।''

X X X

''हमने जो करना था वह कर दिया और अब सजा का इंतजार है।'' नियाज अली हीरा सिंह को आंखें फाड़ फाड़ कर देखता रहा। ''नियाज अली जिस सरकार के पास कैदियों को खिलाने के लिए रोटी तक नहीं, पानी तक नहीं वह सरकार बहुत दिन चलने वाली नहीं। तुम्हारी रियासत, राजा, तुम्हारा नाम तक मिट जाएगा।''

''तो क्या तुम्हारा नाम रह जाएगा। नियाज अली ने कहा''

''हीरा सिंह ने कहा-हमने बगावत ये सोचकर नहीं की है कि कोई हमारी पूजा करेगा' 'हमारा काम गोरी सरकार से बगावत करना था वह हमने कर दिखाई। हम अगर मिट्टी में मिल जाएंगे तो एक दिन गोरी सरकार भी मिट्टी में मिल जाएगी। सिकन्दर मिट्टी में मिल गया, रावण का निशान नहीं रहा तब गोरी सरकार का नाम कैसे कायम रहेगा। चंगेजखान, तैमूरलंग, नादिरशाह भी मिट्टी में मिल गए, कहां है उनके नामलेवा। परिवर्तन की आंधी जब चलेगी तो पता भी नहीं चलेगा

कि गोरी सरकार कहां गई। वह दुनिया के नक्शे से मिट जाएगी।''

''इस बकवास का क्या फायदा।'' नियाज अली बोल उठा।

''तुम्हें समझा रहा हूं। कहां गया औरंगजेब जैसा अन्यायी राजा जो भारत में एक ही धर्म स्थापित करना चाहता था। अब उनका नाम लेवा भी बाकी नहीं बचा। ऐसे ही अंग्रजों का भी नामलेवा नहीं बचेगा। जैसे भूचाल में इमारतें मिट्टी में मिल जाती है वैसे ही कुदरत के भूचाल आने पर बड़ी-बड़ी सरकारें मिट्टी में मिल जाती है।'' हीरा सिंह ने हसंते हुए जवाब दिया -

''हमने कब चाहा कि कोई हमें याद करें, हमारे नाम की आरती उतारे। पर एक बात याद रखना जब जनता करवट लेती है तब सब राजशाही मिट्टी में मिल जाती है, नामोनिशां तक मिट जाता है। दुनिया को जीतने वाला सिकन्दर आज कहां है सोमनाथ मन्दिर के लुटेरे का नाम कौन जानता है। ऐसे ही तुम्हारा और तुम्हारी फिरंगी सरकार का नामोनिशां मिट जाएगा। ये जो यहां भूखे प्यासे बैठे है इनके चेहरों को देख क्या किसी भी चेहरे पर उदासी है, थकावट है। ये तेरी फिरंगी सरकार से नहीं डरते, तुम्हारे महाराजा से नहीं डरते। ये सब तैयार है जो तुम्हें करना है, कर लो। ना कोई माफी मांगेगा ना ही पीछे हटेगा?'' हीरा सिंह के साथ लहना सिंह भी बोल उठा।

''बड़ी अकड़ दिखा रहे हो।'

''यह अकड़ खैरात में नहीं मिली, ये खून में मिलती है। हमारे सतगुरु जी ने हमें यहीं अकड़ दी है, हमारा मरा हुआ स्वाभीमान जगाया है। तुम्हारा जीवन मर-मर के जीने का है। ये भी कोई जीवन है। मौत से पहले हजारों बार मरना पड़ता है। हम एक ही बार मरेंगे पर हमारा मरना तुम्हारे जैसा नहीं होगा हमारा शीश बार-बार नहीं झुकेगा, तुम्हारा जीवन जानवरों से भी बदतर है। हमारा जीवन शेर का जीवन है। खुद्दारी भरा जीवन है।'' हीरा सिंह गुर्रा उठा।

''हीरा सिंह बोलने से क्या होता है?'' नियाज अली ने कहा।

''बोलने से बहुत कुछ होता है। पर हम कम बोलते हैं। जो हमने बोलना था सब कर दिखाया। अब तुम्हारे महाराजा को बोलना है।'' लहना सिंह बोल पड़ा।

''महाराजा बोलता नहीं करता है। करके दिखा देगा''- ''महाराजा सदैव से विदेशियों के साथ रहा है। उसका काम जुल्म करने वालों का साथ देना होता है। आज तक वही तुम्हारे महाराजा ने किया है।''

''वह राजा है बहुत सोच समझ कर करता है।'' नियाज अली बोला।

''वह बहुत सोच समझकर कर ही करता है।'' हाँ वह इससे पहले भी

वही करता आया है। पहले खुद को सुरक्षित बनाने के लिए अफगानी लुटेरों की सहायता करता आया है। पानीपत की तीसरी लड़ाई में अपने देशवासियों का साथ न देकर विदेशी लुटेरे अहमदशाह अब्दाली का ही साथ दिया। यही काम जाटों के राजा सूरजमल ने किया। अगर वह भी मराठों का साथ दे देता और समय पर रसद पहुंचा देता तो शायद मराठे जीत जाते। आला सिंह और राजा सूरजमल की गद्दारी से मराठे हार गये, हजारों की लाशों बिछ गई और क्रूरता का पर्याय अब्दाली जीत गया। क्योंकि उसका मकसद हर हालत में पानीपत की इस लड़ाई को जीतना ही था सो उसने यह लड़ाई जीत ली। फिर जो हाल दिल्ली, मथुरा, वृन्दावन का किया वह बताया या कहा नहीं जा सकता।'' हीरा सिंह कहे जा रहा था।

''हीरा सिंह तुम्हें इतिहास का बहुत ज्ञान है। बड़ी ज्ञान भरी बातें कर रहे हो।''

''हां मुझे पता है अगर पटियाला, नाभा अंग्रेजों का साथ नहीं देते तो अंग्रेज की हड्डियां धूप में पड़ी सड़ रही होती। मांस तो चील कौवे नोंच नोंच कर खा जाते। हीरा सिंह चुप रहा।''

''तेरे कहने से ये चुप होने का नहीं। तुम महाराजा की या कोटला वालों की नौकरी करो। तुम्हारा यही भाग्य है।''

''नियाज अली को ये सुनकर हंसी आ गई। इस घटना पर महाराजा का गुस्सा जायज है। वह गुस्सा करें हम अपना काम करेंगे।''

''मुझे मालूम है हीरा सिंह- ये कोटला की नहीं महाराजा पर चोट है। महाराजा तो सोया नहीं रहेगा-महाराजा सख्त कदम उठाने को बोलेगा।''

''महाराजा जो बोलेगा, हमें मालूम हैं।' फिरंगियों के जूते चाटने के अलावा वह क्या कर सकता हैं। ऐसे करने से उसकी राजशाही बच जाएगी। राजशाही रहेगी तो कुछ कर सकता है। बिना सत्ता के क्या कोई कुछ कर सकता है।''

''कल सुबह छोटे लाट की मौजूदगी में तुम्हारी मौत का तमाशा होगा।'' छोटे लाट ने पटियाला, संगरूर, कपूरथला, जींद रियासतों से तोपें मंगवा ली है। साथ में पलटन भी मंगवाई है। तुम्हें बगावत की ऐसे सजा दी जाएगी कि देखने वालों की आत्मा कांप उठेगी।''

''इससे क्या होगा- हंसकर लहिना सिंह ने कहा।''

''सरकार का खौफ बढ़ेगा, आंतक फैलेगा ताकि तुम्हारे बाद कोई ऐसी हरकत न कर सके।''

''क्या तुम्हारी मर्जी से सूरज उगता है या डूबता है। हमारे बाद भी यह सिलसिला चलता रहेगा ये तो आने वाला वक्त ही बताएगा।''

X X X

17 जनवरी सुबह से ही बूंदा बांदी हो रही थी। शेरगढ़ में सभी को परेड मैदान जाना था जहां मृत्यु की देवी उनकी प्रतीक्षा कर रही थी। कैदियों में काफी हलचल थी जैसे बरातियों में होती है। सभी तैयारी में व्यस्त थे सब को पता था कि आज क्या होना है। पर किसी के माथे पर शिकन नहीं थी। बच्चे सभी को देख रहे थे। मालूम नहीं कब तक ये निडरता, शहादत की कथाएं सुनते रहे और कब इनको नींद आ गई। इनके चेहरों पर न थकावट न डर की भावना थी।

''अब सभी को परेड मैदान चलना है जहां तोपें तैयार खड़ी हैं तुम्हें सजा देने को।''

''तोपों से कौन डरता है अगर डरते होते तो आजादी की आवाज ही न उठाते। पर अब तो मौत सामने खड़ी है।''

''मौत तो उस दिन भी सामने खड़ी थी जब हम सब ने भैणी साहिब से बाहर कदम रखा था। हमें मालूम था कि कोटला पर बिना हथियारों के हमला करना मौत को न्यौता देना है। पर कोटला की लड़ाई बिना हथियारों के लड़ाई थी जब कि कोटला के पास हथियारों की कमी नहीं थी, सिपाही भी थे। पर हम भयभीत नहीं हुए जिस काम को करने निकले थे उसको हमने करके ही दम लिया। अगर हमारे पास हथियार होते तो हम बात देते कि लड़ाई कैसे लड़ी जाती है। एक भी आदमी कोटला में फिर नजर नहीं आता।''

''तुम बागी हो तुमने सरकार से बगावत की है और इसकी सजा तुम्हें मिलेगी।''

''सजा देने के लिए तोपें कम हों तो और मंगवा लो। चापलूस राजा और भेज देंगे।''

''इतनी तोपें काफी हैं। इन्हीं से तुम्हें सजा दी जाएगी।''

''हमें पता है परेड मैदान में हमें परेड करनी होगी। हम तो तैयारी करके ही घर से चले थे। अब हमें किसी बात की शिकायत नहीं। किसी से किसी तरह का गिला नहीं। अगर शिकायत ही करनी होती तो ये काम ही क्यों करते।''

''शिकायत करोगे किससे?''

''हमें तो क्या इन बच्चों इन औरतों को भी कोई शिकायत नहीं है। देख ये भी मौत से मुकाबले को तैयार है। बेखौफ, निडर।

तोपों के सामने खड़े होगें तो सारी हेकड़ी निकल जाएगी।''

''हेकड़ी तो गोरों की निकली है।

हीरा सिंह ज्यादा बकवास न कर।''

''यही समय है बोलने का आज तो मौत को ब्याहने जाना है।

बड़ी जल्दी है तुम को। नियाज अली बोला।

''चल नियाज अली जल्दी कर अब देर किस बात की है, देख परमात्मा भी बूंदा बांदी करके हम वीरों पर फूल बरसा रहा है। हमारा स्वागत कर रहा है। चल जो तेरे आका चाहते है अपने मन की कर लें। मन में रंज न रहे कि इच्छा पूरी नहीं है। किसी बात का तुझे मलाल न रहे।''

''नियाजअली चुपचाप सुनता रहा। हीरा सिंह का चेहरा लाल होता गया। सारे दल के सदस्य उसके साथ आकर खड़े हो गए। लहिना सिंह भी साथ खड़ा था।''

'ओए नियाज अली, अपने गोरे लाट को कह दे जो करना है कर ले मन में मलाल न रह जाए।'' मुस्कुराते हुए उन्होंने कहा।

''मुझे तुझ पर नहीं इन बच्चों और पर तरस आ रहा है।'' नियाज अली ने कहा।

''तरस तो तुम्हारे मुगल शहनशाहों ने भी नहीं किया था। सिहांसन के नशे में तुमने कब अल्ला को याद रखा, कब ईमान की बात दोहराई। जो तुम्हारे मन में आया वही किया, अब भी वही करोगे। 1857 की बगावत में तुमने दिल्ली में क्या किया, तुम्हारे महाराजा ने दिल्ली की गलियों को खून से भर दिया। तुम्हारी तलवारों ने, बन्दूकों ने, न तो औरतें देखी, न बच्चे, न बूढ़े, बस मारते चले गए। जितने ज्यादा मारोगे उतना अधिक ईनाम मिलेगा। सैकड़ों को मारा, औरतों की इज्जत लूटी क्या वे हिन्दुस्तानी नहीं थी, क्या वे इस धरती की बेटियां नहीं थी। पर तुम ने क्या अन्तर रखा।

नादिरशाह जैसा लुटेरा ईरान से आकर दिल्ली को लूट कर ले गया और जाती बार बीस हजार से ज्यादा लड़कियों को लूट के माल के साथ बैलगाड़ियों पर भेड़ बकरियों की भांति लाद कर ले गया। वे सब हिन्दुस्तान की बहू बेटियां थी। वे सभी हिन्दू नहीं थी, उनमें पठान, मुगल, हिन्दु घरानों की लड़कियां शामिल थी। तब भी तुम्हारें जैसे लोग तमाशा देखते रहे।

गुलामी करते रहे और आज भी गुलाम हो। तुम्हारी पीढ़ियों दर पीढ़ियां गुलामी के दलदल में धंसी हुई है। तुम्हारे महराजा की गुलामी तेरे बेटे करेंगे फिर

उसके बाद उसके बेटे इसके अलावा तुम और कुछ सोच भी नहीं सकते। तुम्हारा धर्म राजा की गुलामी करने तक सीमित है। इससे आगे तुम कुछ सोच भी नहीं सकते। वास्तव में गुलामी करते करते तुम्हारी सोचने की शक्ति को जंग लग चुका है। तुम्हें गुलामी करने में ही आनन्द आता है। इसके आगे तुम्हारे दरवाजे तो बन्द हो जाते है। अच्छा खासा मजाक है कि अब गुलामी करने वाले भी हम पर रौब जमा रहे हैं। जो लोग दूसरे के रौब तले दबे हुए हैं वही हम पर रौब जमा रहे हैं।

''नियाज अली तुम्हारा मालिक ही बदला है। पहले मुगल थे, फिर राजा हुए अब फिरंगी सरकार के तलवे चाट रहे हो। तुम्हारा काम तो अपने मालिकों के हुकम को आंखें बंद करके पूरा करना होता है। हमारी बगावत कुछ भी नहीं कर सकती पर तुम्हें परेशान तो कर ही दिया। तुम्हारी सरकार की नींद उड़ा दी। तुम्हारी ही क्या भारत के अधिकतर लोगों की आत्मा मर गई। हमने आजादी की शमा जलाई है जो जलती रहेगी हमारे बाद परवाने और आ जाएंगे। सजा देने वाले हाथ थक जाएंगे पर हम नहीं थकेगे इसके अलावा तुम और क्या कर सकते हो। तुम्हारी आत्मा मर गई है, तुम्हारी गैरत मर गई है। बस याद है तो अत्याचार के सामने सिर झुकाना याद है। गलत या सही की पहचान करना तुम्हारा धर्म नहीं है तुम्हारा धर्म तो है केवल और केवल हुक्म की तामील करना है।

''जितना बोलना है बोल ले हीरा सिंह, सुबह तुम्हारी बोलती बंद हो जाएगी तोपों से तुम्हारें पुर्जे तक उड़ जाएगे।''

''फिर क्या होगा मेरे पुर्जे उड़ जाएगें मेरी आवाज बन्द कर दी जाएगी। तब फिर किसी और की आवाज उठेगी और उठती रहेगी। जब तक फिरंगी यहाँ से भाग नहीं जाता।''

''सुबह फिरंगी सरकार के रंग ढंग देखकर समझ आ जाएगी।'' हमने जो समझना था सब समझ लिया है। इससे ज्यादा हम समझना नहीं चाहते। अब जो भी समझना है वह तुम्हें और तुम्हारे राजाओं को समझना है।'' हीरा सिंह ने ऊंची आवाज में कहा।

नियाज अली ये सुनकर मुस्करा दिया, ''नियाज अली जब-जब भी जमाने ने मन्सूर को सूली पर चढ़ाया है, ढोल नगाड़े बजा कर ही सूली पर चढ़ाया है। सारी दुनिया मन्सूर जैसी हिम्मत नहीं दिखा सकती और जो हिम्मत दिखाता है सज-धज के साथ सूली पर चढ़ता है उसी का नाम रहता है।''

''तुम्हारे इस कारनामें से तुम्हारे गुरु भी नहीं बच सकते। छोटे लाट ने उनको भी बुला भेजा है।'' हीरा सिंह नियाज अली को देखने लगा-

"जो तुम मलौद में गद्दर मचा आए हो उस पर कार्यवाई हो रही है। तुम भी सजा से बच नहीं सकते ना ही तुम्हारा गुरु बचेगा।"

"हमारा सतगुरु समरथ है। वह जो इन्कलाब लाया है सच और सिद्वान्तों की जो लहर उन्होंने चलाई है वह गुलामी के खिलाफ आजादी लाने की लड़ाई है। सच का सूरज लाने की लड़ाई है और यह लड़ाई सतगुरु जी जरूर जीतेंगे, ये मशाल अब बुझ न सकेगी। झूठ का अन्धेरा सच के सूरज को कब तक छिपाने की कोशिश करेगा। सच का सूरज निकल कर रहेगा। हमारे सतगुरु जी ने समाज को एक नई दिशा दी है। जीने की नई उमंग दी है। शादियों के बड़े आडम्बरों को रोककर सीध ो विवाहों की शुरुआत की है। अब शादियों में पाखण्ड और आडम्बर नहीं होता, पैसे का दिखावा नहीं होता। नाचने के लिए बाहर के नर्तकियां नहीं बुलाई जाती। बरातियों के लिए बकरे काट कर मांस नहीं बनाया जाता। अंग्रेज तो मांसाहारी होते हैं, एय्याश होतें हैं उन्हें ये सब कैसे अच्छा लगेगा। सरकार उनकी, कानून उनका और परिवर्तन की लहर एक साधारण से घर में जन्म लेना वाला ले जाए। इसी पीड़ा ने तुम को और तुम्हारे आकाओं को परेशान कर रखा है।"

हीरा सिंह ने विश्वास के साथ कहा-

"मुजरे करवाने और बकरे कटवाने सम्पन्न लोगों का काम है। वही ये सब कर सकते है, भूखे लोग, गरीब लोग ये कैसे कर सकेंगे।" नियाज अली ने मुंह बना कर कहा।"

नियाज अली पूरी दूनिया के भीतर जब भी कभी क्रान्ति की शुरुआत हुई है तो धनियों द्वारा नहीं हुई है। क्रान्ति की शुरूआत हमेशा नीचे के वर्ग के लोग ही करते हैं जो अभाव में जीते हैं। जो अभाव में रहते हैं जो अभावग्रस्त होते हैं वहीं नई जिन्दगी की शुरुआत के विषय में सोच सकते हैं। सुविधाभोगी तो इस बारे में सोच ही नहीं सकते। उन्हें तो अपनी मिली हुई सुविधाओं को बचाने की चिंता होती है। इसीलिए वे चुप रहते हैं आंखें बंद रखते हैं। चाहे समाज में कुछ भी हो जाए वे चुप ही रहते हैं और इसी में अपना भला समझते है।" हीरा सिंह बिना झिझक कहे जा रहा था।

"तुम्हारे गुरु ने सरकार से बायकाट का नारा दिया है। इससे क्या होगा। हजार-दो हजार लोगों के बायकाट करने से क्या होता है।"

"शुरुआत तो एक दो से ही होती है पर बाद में लोग मिलते जाते है और आंदोलन बन जाता है। नियाज अली आज नहीं तो कल इस आन्दोलन का विराट रूप हो जाएगा तब फिरंगियों को देश छोड़कर भागना ही पड़ेगा।"

"पहले कल का दिन तो देख लो।"

"अरे वो तो देखा हुआ है। या तो फांसी मिलेगी या तोपों से उड़ा दिया जाएगा। इससे ज्यादा तो कुछ कर नहीं सकते।" ये कहकर हीरा सिंह और लहना सिंह हंस पड़े।

X X X

17 जनवरी की सुबह कैदी तैयार होकर कोटला के परेड मैदान में लाए गये। हीरा सिंह एक हाथ से पगड़ी नहीं बांध सकता था सो लहना सिंह ने आगे आकर हीरा सिंह की पगड़ी को करीने से बांधा। हीरा सिंह ने देखा के लोगों की भीड़ डरी डरी आंखों से कभी खड़ी तोपों को देख रही थी तो कभी हथियारों से लैस पलटन को देख रही थी। सभी के मन में विचारों का मन्थन चल रहा था। ये ठीक नहीं है, बागियों को सजा देने का तरीका बहुत घृणित है। कुछ सोच रहे थे बगावत करने वालों को कठोर सजा मिलनी चाहिए। देखने वालों में हिन्दू भी थे, सिख भी थे और मुसलमान भी थे। सभी अपनी -अपनी नजर से यह सब देख रहे थे। सामने कोटला से आए डिप्टी कमीश्नर कावन अंग्रेजी टोप पहिने खड़ा था। उसके साथ उसकी पत्नी खड़ी थी जो कावन का हाथ पकड़े हुए थी। सिख रियासतों से मंगवाई तोपें तैयार खड़ी थी। तोपों के साथ चार-चार सिपाही नंगी तलवारें लिए खड़े थे।

दो तोपें इसलिए रखी गई थीं भीड़ की तरफ से कुछ उपद्रव होने की स्थिति में इनसे काम लिया जा सके। हालांकि वहां खड़ी भीड़ को देखकर ऐसी कोई सम्भावना दिखाई नहीं देती थी। तमाशा देखने वालों से किसी तरह के प्रतिकार या दण्ड को देखने के लिए चाहे कितनी बड़ी भीड़ इकट्ठी हो जाए इस भीड़ का काम सिर्फ देखने भी का होता है। इनके मन की भावना मर जाती है। उसकी आंखें सब देखकर भी कुछ नहीं देख पाती। भावनाहीन, मृतप्राय लोगों से किसी भी प्रकार की उम्मीद करना दिन में स्वप्न के समान होता है।

जिनके मन में सत्ता का भय समाया होता हैं जो लोग सत्ता के सम्मुख गूंगे बन जाते हैं उनसे किसी भी प्रकार की उम्मीद बेमानी सी होती है। इन लोगों का जीवन चाहे लम्बा होता है पर ये जीवन भी क्या जीवन है। ऐसे लोग जीवन तो जीते है पर पल-पल मरकर जीवन जीते है। कीड़े-मकोड़ों की भांति जीवन जीने का क्या अर्थ हो सकता है।"

भैणी गांव के साधारण से घर में जन्मे उस बहुमुखी प्रतिभा के स्वामी ने पंजाबवासियों के जीवन को परिवर्तित कर के रख दिया था। उनकी सोच,

विचारधारा बदल दी। झूठ और सत्य का अन्तर समझाया, सत्य के साथ मौत को स्वीकारना सिखाया। पंजाब के साधारण लोगों में जीने का अर्थ समझा लिया और जब जीने का अर्थ समझ में आ जाता है तब सभी चीजें और सुख गौण हो जाते हैं। मर मिटने की इच्छा ने जीवन के अर्थ बता दिये। बिना मौत के अच्छे जीवन की इच्छा करना भी व्यर्थ है।

X X X

सतगुरु जी ने हमें बेहतर और संयमी जीवन जीने का मार्ग बताया। नशों का बहिष्कार करवाया। लम्बी बरातें व बरातों में मांसाहार के स्थान पर परहेजगार बनाया। कर्जो व ब्याज के मारे तंग लोगों ने इस ओर ध्यान नहीं दिया बल्कि इस मार्ग को अपना भी लिया और कर्ज व ब्याज से तौबा कर ली। इन सबका स्थान सीधे सादे विवाहों ने ले लिया। स्वाभीमान होगा तो प्रतिकार भी किया जाएगा।

जीने की इच्छा होगी तो मरना भी स्वीकार होगा। बिना जीवन की इच्छा के या सत्य पर मर मिटने की इच्छा के बिना प्रतिरोध की कोई सम्भावना नहीं होती। जब स्वाभीमान सो जाता है और जागृति की बात करना बेमानी सी लगती है तथा हर बात प्रारब्ध की बात नहीं सोच सकती। प्रतिरोध वे नहीं कर पाते जिन्हें हर दशा में जीवन प्रिय लगता है चाहे वह गुलामी भरा हो या गालियों से भरा हो। पर कुछ लोग लम्बे जीवन की आस छोड़कर खुशहाल मरना चाहते है। वह चाहे बहुत छोटा ही क्यों न हो। इन लोगों में प्रतिरोध की क्षमता होती है प्रतिकार में जीवन बलिदान करने का संकल्प होता है इनका जीवन चाहे छोटा होता है पर रोशन सितारे की भांति होता है, ये लोग अपने बलिदान देकर आने वाली पीढ़ियों के लिए मार्ग प्रशस्त कर जाते हैं। जब त्याग की भावना हो जाती है, बलिदान प्रमुख होता है। अपने स्वार्थ से समृष्टि का सुख प्रमुख हो जाता है। अपने सुखों को तिलाजंलि देकर समाज के सुख प्रमुख हो जाते है तो यही लोग भविष्य के लिए ज्योतिस्तम्भ बन जाते है और सदियों तक पीढ़ियों के लिए मार्ग आलोकित कर जाते हैं।

शेरगढ़ से आने के बाद अब इस बात की होड़ लग गई की तोपों के सामने पहले कौन खड़ा होगा। कौन गले में मौत की वरमाला पहले डालेगा। अपनी जवानी को कौन पहले होम करेगा। इनके मुस्कराते चेहरे और इन सब की दृढ़ता देखने वालों को सन्देश दे रही थी कि हमारे लिए मरना एक मजाक है। पहला नम्बर हीरा सिंह का ही था। वही इस दल का नेता था और सबसे आगे भी। उसका चेहरा इस बात को लेकर चमक रहा था कि आज मरने में सबसे आगे वही खड़ा है। शहीदी दल का चालक ही वही और परिचालक भी वही था। तो सबसे पहले उसका ही

हक बनता है। शेरगढ़ की कैद से सभी मुस्काराते हुए निकले। हीरा सिंह ने देखा दोनों नारियों के और बच्चों के मुंह खिले हुए थे। किसी का चेहरा रात की सर्दी या ठण्ड को बयान नहीं कर रहा था। सभी के चेहरों पर नये सफर पर जाने की ललक थी। हीरा सिंह ने सभी के चेहरे एक-एक करके देखें।

''भाईयो- तोपें तैयार हैं और हम भी तैयार हैं। देखो कहीं तैयारी में कमी न रह जाए।'' - हीरा सिंह ने साथियों से बुलन्द आवाज में कहा।

''कहीं कमी नहीं रहेगी। अब तो मौत का ब्याहने की अन्तिम तैयारी है। मौत से डर कैसा- सभी बोल उठे।''

''सिखों इन गोरों को दिखा देना है कि हम डरतें नहीं है हमें तो केवल मौत से अठखेलियां करनी हैं। तोपों के सामने खड़े हो कर ऐसी शहादत देनी है कि इन गोरों को शर्म आने लगे''- हीरा सिंह ने फिर अपने साथियों से कहा।

''ऐसा ही होगा।'' तोपों से हमारे शरीर के टुकड़े हवा में उड़ जाएंगे और ये टुकड़े फूल बनकर मैदान में बिखर जाएंगे।'' सभी ने एक स्वर में बोला।

''सरदार हीरा सिंह जी हम में से कोई भी कमजोर नहीं है। किसी की हिम्मत कम नहीं है।'' बीच में से एक आवाज आई।

''इन्द्रकौर ने कहा - हिम्मत कम होनी भी नहीं चाहिए।' देखना कहीं कमजोरी देखने में न आए।''

''सभी मुस्कराते हुए मैदान में पहुंचे।''

मैदान में पहुंचने के बाद हीरा सिंह ने देखा कि तोपों से उड़ाने का तमाशा देखने कोटला से काफी संख्या में लोग आए हुए थे। तोपों से उड़ाए जाना इन सबके लिए किसी तमाशे से कम नहीं था और तमाशबीन तो सभी जगह मिल जाते है।''

हीरा सिंह के साथ लहना सिंह, अनूप सिंह, अतर सिंह, मित सिंह, परसा सिंह और गुज्जर सिंह स्वयं जाकर तोपों के सम्मुख खड़े हो गए।

हीरा सिंह ने तोप के सामने खड़े होकर गाना शुरु किया

असी मरनो मूल न डरदे हां,
असी हंस हंस देनियां कुर्बानियां ने।
मौत लाड़ी नूं ब्याहन दी खातिर यारो,
असी वार देनियां ऐ जवानियां ने।
मौत लाड़ी नूं ब्याहन दी खातिर यारो।
गौरी सरकार किन्ना जुल्म कर पाए,
असी पिछे न हटना जाणदे हां,

चाहे बोटी बोटी साड़ी उड़ जाए,
असी हंस हंस मरना जाणदे हां।

''अर्थात् हम हम मरने से कदापि नहीं डरते। हमने प्रसन्न होकर कुर्बानी देनी है। मृत्यु की दुल्हन को ब्याहने की खातिर हमने अपनी जवानी भी वार देनी है। गोरी सरकार चाहे हमारे बोटी-बोटी उड़ा दे, हम हँस के मरना भी जानते हैं।''

हीरा सिंह के साथ उसके बैठे साथियों ने भी आवाज उठाई। इस आवाज से गोरी सरकार के चापलूस फौजियों और देखने वाली तमाशाई भीड़ चकित हो उठी। कुछ की आंखे भर आई और कईयों ने मुंह घुमा लिया।

X X X

हीरा सिंह आगे बढ़कर तोप के मुंह के सम्मुख खड़ा हो गया। और कावन ने कहा-''इस को तोप के मुंह से बांध दो।''

इस तरह अब लहना सिंह बोला ''बिल्ले ये नहीं होगा। गोरे बिल्ले फिरंगी को नफरत से सभी नामधारी बिल्ला बोलते थे क्योंकि उनकी आंखें बिल्ली जैसी होती है।''

''तोप के मुंह से उनको बांधा जाता है जो डरपोक होते है जो मरने से घबराते हैं। हम मरने से नहीं घबराते।''

''मरने वाले को तोप के मुंह से बांधकर ही उड़ाया जाता है।''

हीरा सिंह चिल्ला कर बोला।

ओए बिल्ले - ''उड़ाया जाता होगा। अब ये आदत बदल दी जाएगी। हम तोप के सामने खड़े होकर मरना पसन्द करते हैं। तुम क्या जानो इस तरह का मरना। तुम तो जुल्म करना जानते हो, साजिशें करना जानते हो। ईसा मसीह ने तो सबको प्यार का संदेश दिया था पर तुमने तो ईसा मसीह के संदेशों को समुद्र में डुबो दिया है। बस जुल्म करना जानते हो, प्यार तुम्हारे वश की बात नहीं है।'' हीरा सिंह गरज उठा।

कावन हीरा सिंह की बात सुनकर तिलमिला उठा। कावन ने तोप के पास एक सिपाही को इशारा करते हुए कहा-''इस का मुंह बंद कर दो।''

''कौन करेगा मेरा मुंह बंद।'' हीरा सिंह ने दहाड़ कर कहा।

''इसके दोनों हाथ पीछे बांध दो।'' कावन ने फिर आदेश दिया।

''ओऐ छोटे लाट, हमें हाथ बांध कर भी मरना कबूल नहीं हम तोप के सामने खड़े हैं, तुम अपना काम करो।'' लहना सिंह ने शेर की दहाड़ मारी।

''हीरा सिंह तुमने गदर क्यों मचाया।'' मलौद में जाकर हथियार लूटे, घोड़े

लूटे, कोटला में आकर गदर मचाया। कोतवाली चौक के सामने निहत्थे लोगों को मारा। यह गदर नहीं तो क्या है। कोटला का अमन खराब किया।''

''हमने अमन खराब किया। गऊ हत्या तुम करवाओ, कसाईयों को संरक्षण तुम दो।'' भाईचारा तुम खत्म करो और इल्जाम हम पर लगाते हो।

''तुम्हारा क्या हक है कानून को तोड़ने का।'' कावन बोल उठा -

''तुम्हें क्या हक है मनमाने कानूनों को बनाने को।''

इस बार जवाब दिया लहना सिंह ने-''जब तुम उल्टे कानून बनाओगे तो उसका जवाब भी उल्टा ही मिलेगा।'' हीरा सिंह फिर गरज पड़ा।

''लगता है तुम अमृतसर फांसी कांड से कुछ भी नहीं सीखे।''

''कावन हमने अमृतसर फांसी कांड से बहुत कुछ सीखा है।''

''हमारे भाईयों ने वहां भी सत्य के लिए अपने आदर्शो के लिए फांसी को स्वीकार किया। जिनके आदर्श होते है जिन्हें सिद्वान्त प्रिय होते हैं उन्हें फांसी के फंदे क्या डरा पाएंगे।''

शायद इस बार ''तुम्हारे लोगों ने कसाईयों की हत्या की।'' कावन ने कहा-

''तुमने क्या किया था श्री हरिमन्दिर साहब की परिक्रमा के साथ बूचड़खाना खुलवा दिया। क्या तब तुम अन्धे थे। कसाईखाने वहां खुलवाने का तुम्हारा मतलब क्या था।''

''यह देश हमारा है, राज हमारा है, जहां भी चाहें वहीं कसाईखाना खुलवा सकते हैं।''

कब तक तुम्हारा राज रहेगा। एक दिन तबाह हो जाएगा।

''तो सुनो-जब जब गुरुद्वारों की परिक्रमा के साथ तुम बूचड़खाने खुलवाओगे, गुरुद्वारों की पवित्रता नष्ट करोगे तब तब कसाईयों का यही हाल होगा।''

''तुम्हारा क्या हाल होगा।'' वो तो हमने देख लिया है। तुम्हारा मकसद पंजाब में हिन्दू मुस्लिम दंगे करवाना था। जो पंजाब में आजतक नहीं हुआ वही तुम करवाना चाहते थे।''

''कानून बनाना हमारी ताकत है''

''तो कानून तोड़कर फांसी पर चढ़ जाना भी हमारा शौक है। हीरा सिंह ने कहा-'शट अप'-कावन गुस्से में बोला''-

''कावन क्यों गुस्सा करते हो। गाय पर हर हिन्दुस्तानी आस्था रखता है।

जब-जब आस्था पर हमले होंगे। तब तब यही हाल होगा। सिर देंगे और सिर लेंगे। तुम अच्छी तरह जानते हो कि हिन्दुस्तानी गाय की पूजा करते है फिर तुमने गायवध के लिए कसाईखाने खुलवाकर हिन्दू और मुसलमानों के बीच नफरत की दीवार खड़ी कर दी है। और क्या कर सकते थे तुम?''

हीरा सिंह ने फिर आगे कहा- कैसे तुमने रणजीत सिंह के आजाद राज्य को घिनौनी साजिशें करके खत्म कर दिया और फिरंगियों का कमीनापन तो देखो कि छोटे महाराजा को मिशनरी के हवाले करके ईसाई बना दिया।''

''इन बातों का अब कोई फायदा नहीं है। अब हम हिन्दुस्तान के अकेले मालिक है और यहां की रियासतों के सभी राजा हमारे बूट चाटते हैं। देखा नहीं तुमने जरा सा हुक्म दिया तो कितने राजाओं ने अपनी तोपों के साथ सिपाही भी भेज दिये हैं।''

''तुम इन राजाओं की खुद्दारी की बात करते हो। इनका काम तो रोज सुबह शाम हाजिरी बजाना है।'' हीरा सिंह बोल उठा -

''पर हमारा काम ये नहीं है। ये टुकड़बोचों का काम है। ये उन कुत्तों का काम है जो तुम्हारी फेंकी हड्डियां चबाते हैं।'' हीरा सिंह ने कहा

''क्या बकता है' हीरा सिंह।''

''मैं बकता नहीं सच कहता हूँ। देख मेरे साथ तोप के सामने खड़े नौजवान लहना सिंह और तीसरी तोप के सामने खड़े अनूप सिंह को चौथी तोप के सामने खड़े परसा सिंह को, पांचवी के सामने कटार सिंह को, छठी के सामने गुज्जर सिंह को और सातवीं के सामने खड़े अतर सिंह को देखो।

क्या किसी के मुंह पर पसीने की कोई बूंद दिखाई देती है क्या कोई घबराहट दिखाई देती है। ये सभी नौजवान है, तन्दरुस्त है और मौत की दुल्हन को ब्याहने को तैयार खड़े हैं।''

हीरा सिंह ने आगे कहा - ''आजादी की शमा पर नौजवान परवाने ही आते हैं। आजादी की शमा को रोशन करने के लिए जवानी की जरुरत पड़ती है और आजादी की देवी जवान लोगों का खून मांगती है वह रक्त स्नान करती है और हम खून देने को तैयार है। ये सनातन सत्य है कि जब भी आजादी की बात आती है तब तब खून की जरुरत होती है और हमें खून देने में जरा भी संकोच नहीं हो रहा। हम यहां आजादी के लिए खून बहाने ही आए हैं। उसकी मांग को पूरा करने आए हैं। हम भी जवां है और हमारे मन में खून देने की हसरत है। ये हसरत तब तक पूरी नहीं होगी जब तक तुम गोरों को सात समुन्दर पार नहीं पहुंचा देते।''

"हीरा सिंह ने रौबीली आवाज में कहा। इस पर तोपों में सम्मुख खड़े सिहों ने जयनाद किया-"जो बोले सो निहाल।"

दूर बैठे लोगों ने भी साथ दिया। अपनी बारी की प्रतीक्षा कर रहे बाकी सिंहों ने इसका जवाब दिया-"सत् श्री अकाल।"

यह जयनाद इतना तेज था कि देखने वालों के हृदय कांप उठे। कावन भी तमाशबीन भीड़ को देख कर पढ़ने-समझने की कोशिश कर रहा था।

"कावन तुमने राज्य को हड़पा है। कहीं मीरजाफर पैदा करके तो कहीं षड्यंत्र करके। वरना प्लासी की लड़ाई में तुम्हारा नामोनिशान भी मिट जाता और तुम्हारी लाशें गिद्धों का भोजन बन गई होती।" हीरा सिंह ने कहा

"पर हम जीत गए और बंगाल के कर्ताधर्ता बन गए।" कावन बोल उठा।

"हमें मालूम है कि तुम कैसे बंगाल के कर्ताधर्ता बने?"

"तुम्हारी नस-नस में बेईमानी है, धोखा है, फरेब है तुम तो शैतान से भी बढ़कर हो। तुम्हारा कोई मुकाबला नहीं।" हीरा सिंह ने ललकारा

-चुप रहो कावन गुर्राया।"

"तुम्हारा मुकाबला अब हमसे है। सिर देने वालों से है जो सिर देने में पीछे नहीं हटेंगे। तुम्हें थका देंगे, भगा देंगे।" लहना सिंह ने कहा।

"तोपें चलेंगी तो सब के परखचे उड़ जाएगें, हवा में फैल जाएगें। कावन ने अहंकार भरी आवाज में कहा।"

"कावन हमें कोई गम नहीं है। जल्दी तोप चला हमें देर हो रही है। जल्दी तोप चला। देखता नहीं है कि सभी दूल्हे तैयार हैं। हम देश की आजादी चाहते हैं तुम्हारी फिरंगी सरकार से आजादी चाहते है।"

"तुम्हारा सपना कभी पूरा नहीं होगा।" कावन ने कहा

"फिरंगी तुम क्या कहते हो। जब तक ये सपना पूरा नहीं होगा हम जन्म लेते रहेंगे, बार-बार जन्म लेंगे, मरेंगे-मारेंगे और फिर जन्म लेंगे और ये सिलसिला तब तक चलता रहेगा जब तक फिरंगियों को देश से बाहर नहीं निकाल लेते।"

"हमारे साम्राज्य में कभी सूरज नहीं डूबता।"

पूरी दुनिया पर हमारा सिक्का चलता है,

महारानी का हुक्म चलता है।" कावन ने गुस्से से कहा-

कावन, "जिस दिन तुम्हारा सूरज डूबा तो फिर सब डूब ही जाएंगे ये सब बस्तियां, मिट जाएंगी सिकन्दर की भांती तुम्हारा हाल भी होगा। फिर कभी तुम्हारा सूरज उगने का नहीं।"

"तुम बकवास करता है हीरा सिंह।" कावन चिल्ला उठा।

"आज तुम्हें ये सब बकवास लगती है लेकिन किसी दिन तुम यह बकवास सुनने के लायक नहीं रहोगे। इस देश से आज नहीं तो कल तुम्हारा बोरिया बिस्तर बंध ही जाएगा।"

तभी हीरा सिंह ने देखा कि तोप को पलीता देने वाले के हाथ कांप रहे है। ये सभी सिपाही हिन्दुस्तानी ही थे।"

"कावन तेरे कुत्तों के हाथ काँप रहे हैं। "ये क्या तोप को पलीता देंगे।" हीरा सिंह ने मुस्कराकर कहा। कावन ने तोप के पीछे खड़े उस सिपाही को गुस्से से देखा। चारों तरफ सिपाही मुस्तैदी से खड़े थे। तमाशा देखने वाले भी आंतकित खड़े थे। कुछ इधर-उधर देख रहे थे कुछ सांस रोके तोपों के चलने का इंतजार कर रहे थे। और कुछ मन ही मन में इन वीरों के हौंसले को नमन कर रहे थे।

जितनी भी तोपें भेजी गई थी ये सभी सिख राजाओं द्वारा भेजी गई थीं। जो गोरी सरकार की चापलूसी का कोई अवसर व्यर्थ जाने नहीं देना चाहते थे। हालांकि कुछ राजाओं को तो तोपें भेजने के लिए कहा ही गया था। पर ये राजे तोपें भेजकर बागियों के विरुद्व खड़े होकर अपनी गद्दी की मजबूती चाहते थे। इसीलिए गोरी सरकार को बिना मांगे प्रत्येक संभव सहायता देने की कोशिश कर रहे थे। उनको ये भी अंदेशा था कि जो कुछ आज कोटला में हुआ है। वह भविष्य में कभी भी उनके राज्यों में हो सकता है और उनके लिए परेशानी का सबब बन सकता है इसलिए वे सभी पटियाला राज्य के साथ आ खड़े होते थे।"

जिस ढंग से कोटला के मैदान में कूका सिखों ने तोपों के सामने खड़े होने का अद्‌भुत साहस दिखाया गया और सभी के चहेरे भी गुलाब की भांति खिले हुए व प्रफुल्लित थे उसे देखकर बैठे हुए कूका सिखों में ये भाव स्पष्ट दिखाई दे रहा था कि इन सातों में उनका नम्बर क्यों नहीं आया। उन्हें देरी कतई भी बर्दाशत नहीं थी।

अब की बार किसका नम्बर आएगा। बैठे हुए लोग यही विचार करते एक दूसरे के मुंह को देख रहे थे। अपनी बारी की प्रतीक्षा कर रहे लोगों के चेहरों पर दृढ़ता थी, मजबूती थी, मौत का भय नहीं था, मरने का शौक था, सभी एक दूसरे के चेहरों की मजबूती को नापने का उपक्रम कर रहे थे। और अपने साथियों द्वारा मौत से अठखेलियां होते देख रहे थे।

उधर कावन के हाथ का इशारा पाते ही सातों तोपें एक साथ चली। तोपों के सामने खड़े सभी सिखों के टुकड़े-टुकड़े आकाश में उड़ गए। उनके तन के

टूकड़े और खून सारे मैदान में बिखर गया। कुछ टुकड़े उड़ कर दूर जा गिरे। कुछ खून के छीटें तमाशा देखने वालों पर भी पड़े।

"ये तो सरासर जुल्म है भीड़ में खड़े एक व्यक्ति ने बोला। उसे चुप कराता दूसरा धीरे से बोला"-"जो देख रहे हो सब जुल्म ही है। चुप कर बोल मत। कहीं पकड़कर तुझे भी तोप से बांध कर उड़ा दिया जाए"

वह व्यक्ति चुप हो गया। चारों तरफ लोगों में आंतक फैल गया। कौन प्रतिकार करे, कौन विरोध की आवाज उठाता। जिन्दगी तो सभी को प्यारी होती है। मौत के परवाने बहुत कम ही निकलते हैं।

कावन के चेहरे पर दानवता नाच रही थी। इस समय वह जो चाहे कर सकता था। वह इन दिनों कोटला का न्यायिक अधिकारी था। कोटला में उत्तराधिकारी का झगड़ा चल रहा था और कावन इस झगड़े को निबटाने के लिए आया था। वास्तव में इन गोरे अधिकारियों का काम झगड़ा निबटाना नहीं उसे और उलझाना होता था ताकि वहां का पूरा तन्त्र उनके हाथ में आ जाए।

कावन ने सजा देने में अपने उच्चाधिकारियों की भी परवाह नहीं की। वह चाहता था कि इस घटना के दोषियों को सजा देकर तुरन्त निबटारा कर दिया जाए। तब हो सकता है अंग्रेजी सरकार इसे पदोन्नति देकर कहीं कमिश्नर बनाकर भेज दे।

इस बार कहने से पहले ही सातों तोपों के सामने सात सिख दौड़कर खड़े हो गए। ये थे रतन सिंह 22 वर्ष, दूसरा 21 वर्ष का अतरसिंह था, तीसरा 25 वर्ष का ध्यान सिंह था, चौथा था 21 वर्ष का भूपसिंह, पांचवा निक्का सिंह था जो मात्र 18 वर्ष का था, छठा था गुजर सिंह जो 24 वर्ष का था, सातवां था नारायण सिंह उसकी उम्र 24 वर्ष थी। किसी को कुछ भी कहने की जरुरत नहीं पड़ी। सभी बैठे लोगों में सात कूके उठकर भागकर तोपों के सामने आ खड़े हुए। पहले दल के हीरा सिंह ही दल के नेता थे पर यहां तो तोपों के सामने खड़े सभी लोग हीरा सिंह और लहना सिंह जैसे ही साहसी, नौजवान और सजीले थे। सभी ने सफेद चूड़ीदार पजामा, सफेद कुर्ता व करीने से सफेद पगड़ी बांधी हुई थी। ब्याह रचाने की प्रसन्नता सभी के मुखमण्डल पर दिखाई दे रही थी। आजादी के लिए शमा जल रही थी और परवाने झूम झूम कर अपना जीवन होम कर रहे थे।

तोपों के सम्मुख खड़े सभी सिंहों की आयु 30 वर्ष से कम थी यानि कि सभी पूर्ण यौवन की देहरी पर खड़े थे सभी के चेहरे खिले हुए और मुस्कान भरे थे। किसी को कुछ कहने का सवाल ही पैदा नहीं होता था। सभी को पता था कि

कब किसने क्या करना है। अंग्रेजी सत्ता द्वारा दी गई भंयकर सजा का जो भी रूप होगा इस विषय में किसी दीवाने ने नहीं सोचा था। सभी को अपने किये पर गर्व था। हर प्रकार की सजा इन सभी को स्वीकार थी। उन्हें पता था कि आने वाली पीढ़ियां उन पर गर्व कर सकेंगीं। सभी बेफिक्र नौजवान थे। सभी आजादी के परवाने थे।''

''अब हीरा सिंह तो है नहीं''-कावन ने कहा।

सातों तोपों के सामने सभी 7 कूका सिख एक आवाज में बोल उठे- हम सभी हीरा सिंह ही हैं। एक हीरा सिंह के मरने से कहानी खत्म नहीं होगी। हम सभी तैयार खड़े है। तोपें चलाने का हुक्म दे अपने कुत्तों को''

''कावन ने भी सुना- सभी मौजूद लोगों ने भी सुना। पर हाय री वीर प्रसूता जननी। कहीं भी किसी ओर से कोई प्रतिकार नहीं हुआ। जीने की लालसा, रखने वालों से किसी भी प्रतिकार की इच्छा रखना सिर्फ मूर्खता ही होती है।''

''तोपें चली और सातों के शरीर के टुकड़े टुकड़े आकाश में उड़ गए। बाकी के लोगों ने ऊँची आवाज में ''बोले सो निहाल - सत् श्री अकाल'' का जयनाद गुंजाया। कावन और चाटुकार लोगों के सीने में मानो सांप लोट गया। किसी का मुंह नीचा हो गया और किसी ने मुंह फेर लिया। पर बागियों के चेहरे अभी भी खिले हुए थे किसी के चेहरे पर हताशा नहीं थी, घबराहट नहीं थी।

इतनी देर में कावन के पास आकर कोटला के सिपाही ने खड़ी दो औरतों की ओर इशारा करके कहा 'साहब इसमें से एक ने गंडासा मार कर कोटला के काजी की हत्या की थी।' कावन ने दोनों औरतों की ओर गुस्से से भरकर देखा। पर वह बोला कुछ नहीं।

परेड मैदान में तोपों के चलने के बाद आंतक का एक भयानक वातावरण पसर गया। तभी बैठे हुए दल में हलचल हुई और सात कूके उठकर तोपों के सामने आकर खड़े हो गए।

तोपों के चलने की आवाज बहुत तेज होती है। कमजोर दिलों के लोग तो इस आवाज को सहन ही नहीं कर सकते थे। वैसे भी देखा जाए तो आजादी की लड़ाई कमजोर दिल के लोग लड़ ही नहीं सकते। जुल्म सहना मजबूत फौलादी दिलों की बात होती है। क्योंकि शासन अनेक तरह के अत्याचार करता है ताकि कमजोर दिलों वाले टूट जाएं, मान जाएं। शासन की अधीनता स्वीकार कर लें। उनकी गुलामी का झण्डा उठा कर आगे-आगे जिन्दाबाद करते हुए चलें।

दूसरी तरफ कूके तोपों के सामने सीना तानकर खड़े थे और बेफिक्री से

तोपों के चलने का इंतजार कर रहे थे। झण्डा उठाने वाले कभी भी इतिहास का हिस्सा नहीं बन पाते। इतिहास की रचना और निर्माण मौत से भिड़ने की हिम्मत रखने वाले ही कर सकते हैं। तोपों के सामने खड़े कई लोगों की तो अभी दाढ़ी भी पूरी नहीं आई थी। मूंछे भी पूरी तरह से भरी नहीं थी पर सबके चेहरे मजबूती से भरपूर थे।

वे तोपों के सम्मुख खड़े, डर से नहीं पूरी हिम्मत से तोपों के चलने का इंतजार कर रहे थे। किसी को भी न तो अपने घर परिवार की चिंता थी न ही घर सम्पति की फिक्र थी। कुछ के घर तो अभी बसे भी नहीं थे। कुछ के लिए माता-पिता द्वारा वधु की तलाश जारी थी। कुछ के माता पिता ने रिश्तों की तलाश भी कर ली थी।

इस बार तोपों के सामने खड़े थे हरनाम सिंह, केसर सिंह, नन्द सिंह, उध म सिंह, काला सिंह, शाम सिंह, जवाहर सिंह और सदा सिंह। सभी मुस्करा रहे थे सभी के चेहरे शान्त थे। इन सब की आयु भी 20 वर्ष से 30 वर्ष के बीच ही थी। इसी बीच पटियाला के महाराजा ने चापलूसी करने का तरीका फिर आजमाया।

एक चाटुकार पत्र पंजाब सरकार को लिखा- डिप्टी कमिश्नर का काम प्रंसनीय है। उसकी तारीफ करनी चाहिए। इससे अधिक महाराजा चापलूसी में और क्या कर सकता था। अंग्रेज अधिकारियों की चापूलसी करके अपनी गद्दी का रक्षाचक्र बढ़ाना ही उसका ध्येय था, उद्देश्य था। ये अधिकारी उसकी गद्दी की सुरक्षा में सहायक हो सकते थे। बागियों से उसको सदैव खतरा ही लगा रहता था। फिर वह बागियों का साथ क्यों देता। उसके आदेश पर दिल्ली में आजादी के सिपाहियों के लाशों के ढेर लगा दिये गए थे। काश उस समय इन देशी राजाओं को ईश्वर सद्बुद्धि दे देता और ये देशी राजे गोरी सरकार का साथ न देते तो आज अंग्रेजों की हड्डियां धूप में सूख रही होती।

उधर सफेद कपड़े पहने दोनों ओरतों में आंखों में ही इशारा हुआ। मस्तानी इंद्रकौर ने दहाड़ कर कहा-''कावन तेरे कुत्ते मेरी तरफ क्या इशारा कर रहे हैं। मेरे हाथों में कृपाण पकड़ा दे फिर देख मेरे हाथों से किस-किस की लाश गिरती है। हम पर गुरु की कृपा है। हम मरने से नहीं डरते।''

''उधर तोपों के सामने खाली जगह पर खड़े होने के लिए अन्य सिख भाग कर खड़े हो गए। ऐसे में मस्तानी इन्द्रकौर की बात की ओर किसी ने ध्यान नहीं दिया। तोपें चलने की आवाज हुई और सातों वीरों के टुकड़े आकाश में उड़कर बिखर गए।''

कोटला मैदान में फौजियों की गश्त जारी थी। जो दो तोपें किसी अनहोनी की सुरक्षा के लिए खड़ी की गई थी उनकी रखवाली भी राजाओं के फौजी कर रहे थे। देखने वाले हैरान थे कि मरने की ऐसी बेफिक्री आज तक देखने को नहीं मिली थी। स्थानीय लोगों के दिल तोपों के चलने से कांप रहे थे। उपस्थित लोगों को तोपों के चलने और मरने वालों की हिम्मत ने ये सोचने पर विवश कर दिया कि जुल्म की ये परकाष्ठा बहुत वर्षो तक चलने वाली नहीं है और मरने वालों की ये निडरता एक न एक दिन अपना रंग दिखा ही देगी।

कुछ ने देखा कि किसी फौजी ने कावन को कागज का एक टुकड़ा दिया जो कावन ने पढ़कर जेब में डाल लिया था। असल मे ये कमिश्नर का पत्र था जिसकी कावन जैसे कर्मनिष्ठ अधिकारी ने पढ़ कर भी परवाह नहीं की। आज कानून उस की जुबान थी, उसके इशारे पर तोपें चल रही थीं। फिर वह भला किसी की बात को क्यों मानता। वैसे भी शासन के नशे में डूबा हुआ अधिकारी अपने को सर्वोच्च ही समझता है और सामने वाले को तुच्छ समझता है।

सत्तामद में डूबे अधिकारी से किसी भी तरह की दया-भावना या रहम का विचार किया ही नहीं जा सकता। वह तो सामने वाले को मिटा देने में अपना दम्भ समझता है। इसी दम्भ के कारण मुगल बादशाह जहांगीर ने पांचवे गुरु श्री गुरु अर्जुनदेव जी को अमानवीय कष्ट देकर शहीद किया था और बादशाह औरंगजेब ने चांदनी के गुरु तेग बहादुर जी को शहीद किया था।

दल के बाकी लोगों द्वारा फिर सत श्री अकाल का जयनाद हुआ। सुन कर कावन की भौहें तन गई। देखने वालों के रंग उड़ गए और दल में कई तरह के विचारों का मन्थन होने लगे। सूरज शिखर पर आ गया था ठण्ड का प्रकोप कुछ कम हो गया था हवाएं बंद हो गई। कभी कभी हल्की बूंदा बांदी हो जाती। कावन के ऊपर चापलूसों ने छतरी तान रखी थी। उसने हैट भी पहन रखा था। चारों तरफ भय का आंतक था। कौन शासन के विरुद्व आवाज उठाने की हिम्मत करता। जिन्होंने अवाज उठाने की हिम्मत की उनका जो हाल हुआ वह सभी देख रहे थे। चौदह लोगों को तोपों से उड़ा दिया गया था।

सारे मैदान में खून ही खून बिखरा पड़ा था, कही मांस के टुकड़े तो कहीं हड्डियां बिखरी पड़ी थी। तमाशा देखने वाली भीड़ में खड़े लोगों ने आंखे बंद कर लीं। पर ये क्या देखते ही देखते अन्य कूके आकर तोपों के सामने खड़े हो गए। सभी ने सफेद चूड़ीदार पाजामे पहने हुए थे, सफेद कुर्ता और गोल सफेद पगड़ी पहने हुए थे। सभी तोपों के सामने खड़े मुस्करा रहे थे। मरने वालों का ऐसा

शौक पहले कभी किसी ने नहीं देखा था।

पहला खजान सिंह, दूसरा वरियाम सिंह, तीसरा नरैण सिंह, चौथा नत्था सिंह, पांचवे का नाम भी वरियाम सिंह था, छठा रतन सिंह, सातवां हरनाम सिंह था सभी की आयु 19 से 23 वर्ष के मध्य थी। कुछ की तो मूछें भी नहीं पूरी आई थीं। सभी गठीले शरीर के थे। कावन का इशारा होते ही फिर तोपें चली और सात लोगों के टुकड़े हवा में उड़ गए और शरीरों की हड्डियों दूर जा गिरी। कोई कहीं गिरी कोई कहीं गिरी। खून के छीटें भी दूर तक बिखर कर गिरे।

कोटला के लिए रवाना होने से पहले कावन ने कमिश्नर को पत्र लिखकर सूचित किया – "पूरे गिरोह को पकड़ लिया गया है। बागी दल को कुचल दिया गया है। मैं कोटला जा रहा हूँ। मेरा इरादा है कि सभी को फांसी दे दी जाए या सभी को तोपों से उड़ा दिया जाए।"

कावन का घृणित इरादा उसके पत्र से जाहिर होता है। उसके मन में बागियों को क्या सजा देने का विचार चल रहा था ये उसने पत्र में जाहिर कर दिया। हालांकि इसी तरह का घृणित दण्ड अंग्रेजों द्वारा 1857 के बागियों को भी दिया जा चुका था। सैकड़ों लोगों को अंधाधुन्ध फांसी दी गई। सैकड़ों को तोपों से बांध कर उड़ा दिया गया था। ये परखे बिना कि इन सब का बगावत में कोई हाथ भी था या नहीं। अंग्रेज तो सत्ता के नशे में इतने अन्धे थे कि लगता था जैसे सजा देना ही उनका उद्देश्य था।

1857 की क्रान्ति के बाद गोरी सरकार ने इलाहाबाद में तो गांव के गांव आग लगा कर जलाकर जमीन समतल कर दी थी। इन मरने वालों की मौत पर किसी ने कोई आंसू नहीं बहाया, अफसोस नहीं जताया। झांसी की रानी लक्ष्मीबाई ने बड़ी वीरता से इन अंग्रेजों का मुकाबला किया। वह ग्वालियर भी पहुंच गई पर ग्वालियर के सिंधिया ने रानी की कोई सहायता नहीं की। अपनी स्वार्थपूति के अन्तर्गत सिंधिया अंग्रेजों की सहायता में आ खड़ा हुआ और आज इसी सिंधिया परिवार के लोग सत्ता सुख भोग रहे हैं। इसके फल स्वरूप रानी शहीद हो गई और अंग्रेज जीत गए। इसी तरह नाना साहब पेशवा की रहमदिली का फायदा अंग्रेजों ने हिन्दुस्तानियों को तोपों से उड़ाकर दिया। अंग्रेजों से रहम की उम्मीद करना व्यर्थ की बात है। व्यापार की लालसा ने इन्हें राजनीतिक शक्ति के शिखर तक पहुंचा दिया और साजिशों के बलबूते ये भाई से भाई लड़वाकर सत्ता हथियाते पूरे देश के स्वामी बन गए।

इनका उद्देश्य भारत को लूटना, भारतीय धन सम्पदा को लूटना ही था।

कभी किसानों पर जुल्म किया, कभी आदिवासियों पर तो कभी कुटीर उद्योग चलाने वालों पर भारी अत्याचार किया। जुलाहों के अंगूठे तक काट दिये गए ताकि जुलाहे हथकरघा उद्योग में सफल न हो सकें।

सातों तोपों के सामने फिर सात गुरु के सिख भाग कर खड़े हो गए। तोपची भी चकित और तोपों पर पहरा देने वाले भी हैरान थे। ये कैसा मतवालापन है। कैसा मरने का शौक है, कैसा जनून है जो मरने को मजाक समझ रहे हैं। लुधियाना का पुलिस सुपरिटेंडेट एन परकिन्ज भी वहां खड़ा यह सब देख रहा था। मलौद में जब सतिगुरु राम सिंह जी को बुलाया गया तब भी पुलिस सुपरिटेंडेट परकिन्ज वहां मौजूद था। वह पूरी बातचीत में कुछ भी नहीं बोला।

अबकी बार तोपों के सामने खड़े थे- पहला अतर सिंह, दूसरा अलबेल सिंह, तीसरा सुजान सिंह, चौथा शाम सिंह, पांचवा सदा सिंह, छठा अतर सिंह, सातवां अनूप सिंह। सभी खड़े मुस्करा रहे थे। कौन हैरान नहीं था। अच्छी खासी प्रतियोगिता चल रही थी। तोप के सामने खड़े होकर मरने वालों के बीच। उनके नेता तो सबसे पहले तोपों से उड़ा दिये गए थे। पर फिर भी इन मरने वालों में कोई भी नेता से कम नहीं था। किसी को किसी के आदेश की प्रतीक्षा नहीं थी। सबको यह मालूम था कि क्या करना है। सब के आगे आने की इच्छा थी। तोपें चली और सभी की हड्डियां बिखर गई।

अबकी बार भूप सिंह, नारायण सिंह, केसर सिंह, ऊधम सिंह, जवाहर सिंह, काला सिंह, सम्मान सिंह खड़े थे। फिर तोपें चली और सातों के परखच्चे उड़ गए। हड्डियां बिखर गई और खून के छीटें तथा मांस के टुकड़े सभी ओर फैल गए। कोई कुछ सोचता कि तभी दल में से उठ कर सात और सिख अपने आप नाचते हुए तोपों के सामने आ खड़े हुए और आते ही वे सिंह की भांति गरज उठे। ''जल्दी कर कावन, तोप चलाने में देर न कर। कहीं हमें देर न हो जाए।''

देखने वाले हैरान थे कि ये किस मिट्टी के बने हुए है। मां ने दूध में कौन सी घुट्टी दी है कि डर किस चिड़िया या भूत का नाम है इनको मालूम ही नहीं था। मृत्यु को ब्याहने की जल्दी इनको बेकरार कर रही थी और इसी जल्दी के कारण ये स्वयं ही तोप के सम्मुख आ खड़े हो जाते। इस बार गुजर सिंह, नन्द सिंह, हरनाम सिंह, शाम सिंह, सदा सिंह, खजान सिंह और नत्था सिंह थे।

तभी कुछ हलचल हुई और कावन से कोई घुड़सवार आकर मिला और एक कागज का टुकड़ा दिया। सामने खड़े सिपाही को इशारे से दूर हटा दिया गया। वास्तव में यह वरियाम सिंह से सम्बधिंत पत्र था। वरियाम सिंह राजा का दूर का

सम्बंधित जाति भाई था और इसको छोड़ने का पत्र महाराजा पटियाला की ओर से वह सवार लाया था। उस का कद छोटा था और इसी को बहाना बनाकर उसे तोप के सामने से हट जाने का आदेश दिया गया।

वरियाम सिंह शासन की ये चालाकी समझ गया।

कावन ने कहा-"वरियाम सिंह तुम्हारा कद तोप के सम्मुख पूरा नहीं आता, तुम्हें छोड़ा जाता है।

वरियाम सिंह को चालाकी समझते देर नहीं लगी।

अगर वह यहां से हट गया तो सदियों का कलंक उसके नाम पर लग जाएगा। यह उसे कदापि सहन नहीं था। उसकी गैरत ये बर्दाशत नहीं करेगी।

"मुझे तोप से क्यों हटाया गया।"

"तुम्हारा कद छोटा है, तोप के बराबर नहीं आता।" कावन ने वरियाम सिंह से कहा।

"क्या मेरी सिफारिश हो गई है जो मेरे छोटे कद का बहाना करके मुझे तोप के सामने से हटाया जा रहा है।"

तुम्हारा कद छोटा है। वरियाम सिंह- कावन ने फिर कहा।

ये सुनते ही बिजली की तेजी वरियाम सिंह के मन में कौंध उठी उसने नजर घुमा के चारों तरफ देखा। इधर-उधर कुछ मिट्टी के ढेले उसे दिखाई दिये। वह फुर्ती के साथ भागकर उनको उठा लाया और तोप के सामने ढेर लगा दिया। मिट्टी के ढेले थे। वरियाम सिंह के खड़ा होते ही इधर-उधर फिसल गए।"

"वरियाम सिंह ने फिर जल्दी-जल्दी उन्हें इकट्ठा किया और उस पर खड़ा होकर ललकार उठा -

"ओए कावन तोप जल्दी चला। मेरी महाराजा से कोई रिश्तेदारी नहीं है। रिश्तेदारी तो मरने वाले शहीदों से है। मैं सतगुरु राम सिंह का सिख हूं।

जल्दी कर शहीदी जत्था आगे जा रहा है। तोप चलाने में देर न कर। मुझे उनके साथ जा के मिलना है।" गोरे तोप चला देर न कर।

22 वर्ष के वरियाम सिंह के तोप के चलने के साथ टुकड़े हवा में उड़ गये और खून के छींटें कई लोगों पर जा कर गिरे। जैसे शहीद का खून किसी का राजतिलक कर रहा हो। जिसके कपड़ों पर या पगड़ी पर रक्त के छींटें लगे उसने वह मिटाने की कोशिश नहीं की। कहीं भीतर से इन रक्त के छींटों के कारण हृदय गर्व से पल्लवित हो उठा।

शहीदी दल में दो बच्चे भी थे। एक 12 वर्षीय बिशन सिंह और दूसरा

9 वर्षीय हरनाम सिंह था। हरनाम सिंह की मां का देहान्त हो चुका था। और वह जत्थे में अपने मामा सुहेल सिंह के साथ ही रहा। अगली बारी में तोप के सम्मुख सुहेल सिंह भी था।

''सवाल ये था कि वह अपने भांजे हरनाम सिंह को किसके पास छोड़े। दल के सभी सदस्यों को शहीद होना था। तब उसने एक कपड़े के साथ 9 वर्षीय हरनाम सिंह को अपनी पीठ से बांध लिया और तोप के सामने खड़ा हो गया। बच्चे ने एक बार भी आनाकानी नहीं की। तोप के चलते ही सुहेल सिंह के साथ 9 वर्षीय हरनाम सिंह के टुकड़े उड़ कर बंजर मैदान में बिखर गए। ''बोले सो निहाल - सत् श्री अकाल' का जयनाद हुआ।

इसके साथ ही सात अन्य सिख हीरा सिंह, रतन सिंह, नरैन सिंह, गुरदीप सिंह, जैमल सिंह, भगत सिंह, प्रेमसिंह दौड़कर तोपों के सामने आ खड़े हुए और ऊंची आवाज में बोलने लगे–

''जिस मरने से जग डरे मेरे मन आनन्द
मरने से ही पाइये पूरण परमानन्द।''

उधर कावन की पत्नी ने सामने खड़े 12 वर्ष के बालक की ओर इशारा कर उसको कुछ कहा। अपनी पत्नी की बात सुनकर कावन ने उस बालक जिसका नाम बिशन सिंह था और जो चूड़ीदार पाजामा सफेद कुर्ता और गोल सफेद पगड़ी करीने से बांधे हुआ था। अपने दल के सदस्यों को तोपों से उड़ते देख उसके मन में विचारों का भंयकर मंथन हो रहा था। इन विचारों के चक्रव्यूह में वह कभी डूबता कभी बाहर निकलता था, उसके पिता का नाम सरदार चढ़त सिंह और माता का नाम रायकौर था और वह रड़ गांव का था।

वह बालक बिशन सिंह डूबता उतरता किसी नतीजे पर पहुंचने का प्रयास कर रहा था।

कावन का इशारा पाते ही वह मजबूत कदमों से उसकी ओर बढ़ने लगा वह अपने विचार मंथन से उबर गया था। अब उसके मन में कोई दुविधा या मोह नहीं था। एक विचार की मजबूती थी। वह पास आकर खड़ा हो गया। कावन ने शकुनि की चालाकी से पासा फेंका जिससे सांप भी मर जाए और लाठी भी न टूट पाए।

उसने भरी आंखों से कावन व उसकी मेम को देखा।

''बच्चे तुम्हारी उम्र देखकर हमें तुम पर दया आ रही है।'' बिशन सिंह चुप रहा–

''मैं तुम्हें छोड़ सकता हूं अगर तुम मेरी बात मान लो तो।''

क्या बात मान लूं। बिशन सिंह ने उसकी ओर देखकर कहा।

''तुम को यह कहना पड़ेगा कि तुम अपने गुरु के सिख नहीं हो।''

ये सुनते ही बिशन सिंह का चेहरा तमतमा उठा। उसके हृदय में एक विचार तेजी से उठा। उसे क्या करना है उसने तय कर लिया। अपने गुरु से मुंह मोड़ कर जीवन पशु की भांति जीने का कोई लाभ नहीं। जीवन वीरों की भांति जिया जाए। कुछ ऐसा काम किया जाए कि उसका नाम भी तोप से उड़ने वाले वीरों के साथ जुड़ जाए।

कावन छः फुट का ऊँचा लम्बा था। बिशन सिंह ने कावन को कहा-''मुझे कान में कुछ कहना है।''

''कावन झुका और बालक बिशन सिंह ने फुर्ती के साथ दोनों हाथों से कावन की दाढ़ी पकड़ कर झटका दिया। अचानक झटका मिलने से कावन नीचे गिर पड़ा। सिपाहियों में हड़कम्प मच गया।

कावन की दाड़ी खिंचते हुए बिशन सिंह बोला''।

''मैं कभी अपने गुरु से मुंह नहीं मोडूंगा। मैं सतगुरु राम सिंह का सिख हूं और मरते दम तक उनका सिख रहूंगा।''

''तलवार चमकाते हुए दो तिलकधारी सिपाहियों ने बालक बिशन सिंह के दाढ़ी न छोड़ने पर हाथों को काट दिया। कटे हुए हाथ दाढ़ी के साथ लटक गए।'' ये 50वां शहीद था। इससे पहले 7 बार सात-सात कूका सिहों को तोपों से उड़ाया गया था।

बालक ऊँची ऊँची कह रहा था-''मैं सतगुरु राम सिंह का सिख हूँ और रहूंगा।'' सिपाहियों ने उसके बाजू तो काट ही दिये थे। फिर गुस्से में उसके शरीर के टूकड़े-टुकड़े कर दिये। और इस तरह बालक बिशन सिंह तोप से उड़ने वाले सिखों के साथ मिल गया। देखने वालों के दिल काँप गए।

कावन को अपने किये पर कोई पछतावा नहीं। उसने उठकर कपड़े ठीक किये। और क्रोधभरी आंखों से मरने वाले को देखा।

''इसमें तिलकधारी सिपाही भी थे जो उसकी सहायता कर रहे थे। उनके मन में ये विचार धूम रहा था कि शायद साहब खुश होकर उनको कुछ ईनाम देंगे या तरक्की दे देंगे। कावन को तो इन सिखों को सजा देने का जनून सवार था। किसी भी स्थिति में अंग्रेजी सरकार का आंतक फैलाना चाहता था।

इसी तरह का आंतक 57 की बगावत के वक्त फैलाया गया था। अन्ध

ाधुन्ध फांसी की सजाएं और गांवों को आग के हवाले करना या तोपों से बांधकर उड़ा देना। फिर भी चिंगारी धधकती रही और कब आग बन गई इसका पता ही नहीं चला।

सिख रियासतों की पूरी पूरी हिमायत अंग्रेजी शासन के साथ थी। उनकी तोपें उनके सैनिक सब अंग्रेजों के हुक्म बजाने को तत्पर खड़े दीखते थे।

इतनी कठोरता और आंतक के बाद भी एक मामूली से परिवार से निकले महाराजा रणजीत सिंह की सेना में सिपाही रह चुके भाई राम सिंह जी ने कुछ ही वर्षो में पंजाब में एक आन्दोलन खड़ा कर दिया और भाई राम सिंह जी को मानने वाले सभी लोग उनको बाबा जी या श्रद्धालु सतगुरु जी कहने लगे। पंजाब के गुलामी भरे वातावरण में जब सारा पंजाब दासता के गहन अंधकार में डूबा हुआ था। सतगुरु रामसिंह जी ने आशा का, सदाचार का, सिद्वान्तों का एक ऐसा चिराग जलाया कि पंजाब ने ऐसी करवट ले ली। फिर पंजाब का पूरा का पूरा वातावरण बदल गया।

जहां कहीं भी कोई गोल पगड़ी वाला सिख दिखाई देता जिसने सफेद खद्दर का कुर्ता पजामा पहना होता तो सभी को ये पता चल जाता कि ये अंग्रेजी शासन का विरोधी है, ऐसा सिख अंग्रेजों का कभी भी वफादार नहीं बन सकता।

सतगुरु जी ने पंजाबी भाषा की पढ़ाई पर जोर दिया। आप जानते थे कि अपनी भाषा, संस्कार देती है, संस्कृति के गुण देती है निर्भयता और सिद्वान्त देती है। रिश्तों का नाम व पहचान देती है।

घर घर में अंग्रेजी कपड़ों के विरोध में चर्खे का चलन शुरु करवाया गया। इससे सतगुरु जी के कई उद्देश्य सफल हुए। घरों में चर्खा आया, कुटीर उद्योग लाये, खद्दर लाये, खद्दर पहनने का चलन जोरदार ढंग से चल निकला। अंग्रेजी कपड़ों की ओर बहिष्कार की दृष्टि से देखा जाने लगा। हथकरघे का काम बढ़ा, लोगों को काम मिला, लोग स्वावलम्बी होने लगे। शासन को इस बात का शूल चुभना पक्का था।

''अंग्रेजी सरकार पंजाब में मिशनरी स्कूलों की बाढ़ ले आई। मिशनरी स्कूलों में अंग्रेजी शिक्षा मुफ्त दी जाती थी। इन स्कूलों को सरकार की ओर से आर्थिक सहायता मिलती थी। अन्य प्रकार की सहायता के लिए भी सरकार के दरवाजे सदैव खुले हुए थे। पादरी इन स्कूलों में आते, ईसाईयत का प्रचार करते। अपनी धर्म पुस्तक बाइबिल की प्रतियां मुफ्त बांटते। पुस्तक पढ़ने वाले को ईनाम देते ताकि उसका झुकाव स्वाभाविक तौर पर ईसाईयत की ओर हो सके।''

बड़े धनी सरदारों के बच्चे इन स्कूलों में पढ़ने लगे और शीघ्र ही अपने

धर्म से पतित होकर ईसाई धर्म में दीक्षित होने लगे। बड़े घरों की देखा देखी छोटे घरों के बच्चें भी इसके प्रभाव में आ जाते। सरकार अंग्रेजी भाषा में पढ़े लिखे को नौकरी देती, सुविधाएं देती।

पंजाब का बहुत बड़ा वर्ग इन सुविधाओं के मृगजाल में फंस गया था।

उधर कावन को जब कमिश्नर फोरसाइथ का पत्र मिला तो उसने बिना पड़े ही उसे जेब में रख लिया। कावन कमिश्नर फोरसाइथ के पत्र को उसकी सजा देने के मार्ग की बाधा समझता था। कमिश्नर के यहां होने पर उसे अपनी मनमानी करने का समय नहीं मिलता। आखिर कमिश्नर पद में उससे ऊंचा था।

रात उतर आई थी कावन के आदेश पर 50 घुडसवार वहां पहरेदारी के लिए रखे गये। ताकि किसी तरह की कोई गड़बड़ न हो सके। सात तोपें अभी भी अपने स्थान पर वैसे ही खड़ी थीं जैसे दण्ड देने के समय खड़ी थीं।

दो तोपें अभी भी रखवाली के लिए खड़ी थीं। 10-10 सिपाही उनकी रखवाली के लिए छोड़े गए।

कुछ और भी आदेश देकर कावन अपनी मेम का हाथ पकड़ कर वापिस मुड़ा। उसके कपड़ों पर अभी भी कई जगहों पर मिट्टी लगी हुई थी। मुड़ते समय उसने शेरगढ़ के निआज अली को आदेश दिया कि बाकी कैदियों को शेरगढ़ पहुंचा दिया जाए। उन्हीं के साथ औरतें भी रहेंगी। शासन के हाथ में सत्ता, दण्ड और व्यवस्था होती है वह अपनी इच्छानुसार व्यवस्था को तोड़ मरोड़कर चलता है।

नियाज अली बाकी 16 आजादी के दीवाने नामधारी सिखों को फिर शेरगढ़ में ले आया। कोटला की लड़ाई में जो सिख घायल हुए थे ये सिख उन्हें भी साथ ले आए थे। जिन्हें बाद में कैद करके दवा दारु के लिए भेज दिया था।

कावन को अगर कमिश्नर का पत्र और दिल्ली से उसके आने का पता न चलता तो वह बाकी के 16 को मलौद भेजकर सजा की व्यवस्था करता। एक पत्र में कावन ने लिखा भी था-''मेरा यह ख्याल है कि 49 लोगों को तोप से उड़ाने के बाद 12 साल के बालक जिस का नंबर 50 था ने कुछ उपद्रव मचाया उसे हमारे सिपाहियों ने तलवारों से टुकड़े कर दिया।'' कावन इसको ताकतवर व्यक्ति लिखता है पर यह तो 12 वर्षीय बालक था और बहुत अधिक शक्तिशाली भी नहीं था। उस बालक की इच्छाशक्ति कमाल की थी। जब उसे अपने गुरु का सिख न होने के लिए कहा गया तो उस कथन से उसके भीतर ऐसी स्फूर्ति और ऊर्जा आ गई कि उसने कावन की दाढ़ी दोनों हाथों से पकड़ कर उसे नीचे गिरा दिया और उसकी छाती पर जा बैठा।

12 साल का बिशन सिंह कमाल कर गया।
लोगों के दिलों में कैसा धमाल कर गया।
कावन की दाढ़ी पकड़ कर ऐसा उसे झटका दिया,
छाती पर चढ़कर गिरा उसे बेहाल कर गया।
ऐसा पकड़ा दाढ़ी को कोई फिर छुड़ा न पाया,
मिट्टी में गिरा कर मिट्टी गुलाल कर गया।
भाग हीरानन्द ने पहले हाथ काट दिये तलवार से,
फिर बांहे काट धरती खून से लाल कर गया।
खून से धरती भीग गई, बाकी ने सत् श्री अकाल बुलाई,
रंग शहीदी का देकर माटी को मालामाल कर गया।
बच्चे ने देकर शहादत ऐसा इतिहास रच दिया,
अंग्रेजी शासन पर एक सवाल कर गया।
12 साल का बिशन सिंह कमाल कर गया।

जब कितनी कोशिशों के बावजूद उसने कावन की दाढ़ी नहीं छोड़ी तो देशी सिपाहियों के हृदय में जयचन्द जैसी भावना उभर आई और अपने मालिक की वफादारी में इन्होंने कुत्तों की वफादारी को भी पीछे छोड़ दिया। तलवार का पहला वार सिपाही पंडित हीरानन्द ने किया और फिर बालक बिशन सिहं के टुकड़े टुकड़े कर दिये।

इस तरह की घटनाएं बाहर वालों की वफादारी में अनादि काल से चलती आ रही है तो फिर अब कैसे रुक पाती। कावन को उस बच्चे से अपनी दाढ़ी छुड़ाने में पसीने छूट गए।

कावन बड़ी बेशर्मी से पत्र में लिखता है कि मुझे छुड़ाने के लिए उसके तलवारों से टुकड़े टुकड़े कर दिये गए। कमाल का जिगर वाला वह बालक था। जिसने अपने सतगुरु के प्रति अपमानजनक शब्द सुनना गवारा नहीं किया।

जिन 49 लोगों को तोपों से उड़ाया गया उनपर कोई भी मुकदमा नहीं चलाया। उसकी सफाई नहीं ली गई। यह वास्तव में अंग्रेजी शासन का सामूहिक हत्याकांड था। कमिश्नर चाहता था कि दिखावे के लिए ही सही इन बागियों पर मुकदमा तो चलाया जाए। कागजों का पेट तो भरा जाए।

कमिश्नर जाहिर तौर पर कावन की इस जघन्य कार्यवाही से प्रसन्न नहीं था पर वह स्पष्टतया कुछ कहने से गुरेज कर रहा था। ऊपर से चाहे कुछ भी हो ये तो तथ्य ही एक कटुसत्य है कि इन नामधारी वीरों की वीरतापूर्वक तोपों से उड़ने

से अंग्रेज अधिकारी भी दिल से प्रभावित हुए बिना नहीं रहे।

हीरा सिंह, लहिना सिंह की बहादुरी पर पुलिस सुपरिटेन्डेंट परकिन्ज को भी अपनी डायरी में लिखना पड़ा- हीरा सिंह और लहिना सिंह दोनों ही जवान और बढ़िया सफेद कपड़े पहने हुए थे। उनकी हिम्मत और निडरता देखने वाली थी। मलौद और कोटला की घटनाओं से सतगुरु राम सिंह जी या कोई सम्बन्ध नहीं था।

सतगुरु जी ने उत्तेजित व्यक्तियों को समझाने के लिए पहले अपने प्रमुख सहायकों (सूबों) को भेजा और बाद में सतगुरु जी ने स्वयं भी समझाने का प्रयास किया था। इसीलिए पुलिस अधिकारी को यह लिखना पड़ा- नेता राम सिंह के विरुद्व कोई सीधा साक्ष्य नहीं मिलता। तब न्याय की ये कैसी परिभाषा है कि साक्ष्य न मिलने के बावजूद सरकार पूरी तरह से कार्यवाई करने पर अमादा थी। शायद उसके पास कोई और विकल्प नहीं था।

एक काम तो सरकार पहले ही कर चुकी थी। सिखों के मध्य एक विभाजन रेखा सरकार ने बड़ी चालाकी से खींच दी थी। धनी और सम्पन्न सिख वर्ग किसी भी स्थिति में नामधारी नेता को स्वीकार करने को तैयार नहीं था।

सिख रियासतों की स्थिति तो सदैव से ही भिन्न थी वह रणजीत सिंह को भी अपना महाराजा स्वीकार नहीं करती थी। असल में इन सभी छोटी मोटी सिख रियासतों का नेता पटियाला का महाराजा था और बाकी की सभी सिख रियासतें तो उसकी सहयोगी या उस पर निर्भर रियासतें थी। ये सभी रियासतें अपने आप में कोई स्वतन्त्र निर्णय भी नहीं ले सकती थी।

अपने आपको ऊंचे कुल का मानने वाले ये राजागण किसी भी स्थिति में सतगुरु राम सिंह जी या उनके अनुयायियों को स्वीकार नहीं करते थे। सिख मिसलों के समय भी इन तथाकथित ऊंची कुल की मिसलों के सरदारों ने रामगढ़िया मिसल के सरदार के साथ कभी भी ठीक तरह का व्यवहार नहीं किया था।

रामगढ़िया मिसल और उसके सरदारों के प्रमुख से ये सभी तथाकथित जाट मिसलों वाले ईर्ष्या ही करते रहे। हालांकि ना ही सेवा में, ना ही वीरता में, ना ही त्याग में, ना ही सिखी भावना में, रामगढ़िया सरदार किसी अन्य सरदारों से कम नहीं था। पर यह कटु सत्य है कि खालसा बनाते समय जाति पाति की जो विभाजन रेखा गुरु गोबिन्द सिंह जी ने समाप्त कर दी थी वह समाप्त नहीं हो पाई।

बाहरी शत्रु से लड़ने में सभी सिख व उनके दल एक हो जाते थे और दुश्मन के दृष्टि से ओझल होते ही सभी सरदार आपस में कृपाणें निकालकर एक दूसरे के विरुद्ध लड़ने को अमादा हो जाते थे। यही स्थिति नामधारी लहर के चलने

के बाद पंजाब में उभर कर सामने आई। जिनके पास धन सम्पदा थी, जमीनें थी, सुविधाएं थी वे सभी अंग्रेजी सरकार की जी हजूरी में आ खड़े हुए।

उन सब को इसी में अपनी सुरक्षा और बचाव नजर आता था और जिनके पास कुछ भी नहीं था जो साधनहीन थे और वर्तमान को खुद को खोया हुआ समझ रहे थे, वे सभी सतगुरु राम सिंह जी और नामधारी लहर से जुड़ गए और ऐसे जुड़े कि अंग्रेजी सरकार हैरान रह गई कि साधारण घर में जन्मे इस नामधारी गुरु ने ऐसा क्या चमत्कार कर दिया कि उनको मानने वालों की संख्या इतनी तेजी से बढ़ गई?

अंग्रेजी सरकार से जुड़ा हर अधिकारी सतगुरु राम सिंह जी की चमत्कारिक प्रतिभा से चकित था। शायद इसलिए सतगुरु राम सिंह व उनके अनुयायियों पर प्रतिबन्ध भी लगा दिया था। पर इस प्रतिबन्ध का असर उल्टा ही हुआ और प्रतिबन्ध ा के दौरान भी नामधारियों की गतिविधियां सुचारु रूप से चलती रहीं।

जब नेपाल के उच्चाधिकारी सतगुरु राम सिंह से मिलने उनके डेरे पर आए और गुरु जी को उपहार दिये तो अंग्रेजी सरकार चौकन्नी हो गई और उसकी गुप्तचर सेवा चुस्त हो गई। ऐसा भी कहा जाता था कि नामधारी नेता के सम्बन्ध हैदराबाद में निजाम तक थे।

कश्मीर में नामधारी सिखों की एक पलटन भी खड़ी कर दी गई। ये भी कहा जाता है कि उस पलटन में भर्ती होने के लिए नामधारी लहर के मुख्यालय की स्वीकृति भी जरूरी होती थी। बाद में अंग्रेजी सरकार के प्रभाव में आकर कश्मीर के राजा ने इस कूका पलटन को तोड़ दिया। ये सब बातें जाहिर तौर पर सतगुरु राम सिंह जी के असाधारण व्यक्तित्व को परिलक्षित करती थी। हालांकि अंग्रेज अधिकारी भी ये बात मानते थे कि कोटला पर कूकों का आक्रमण अत्याधि ाक आवेश और क्रोध का कारण कहा जा सकता है।

अगर योजनवद्ध ढंग से कोटले पर आक्रमण किया जाता तो क्या सिर्फ दो लोगों के पास ही हथियार होते? तो क्या बाकी के लोग तमाशा देखने को गए थे बिना हथियारों के? बिना हथियारों के कोटला पर आक्रमण हो ही नहीं सकता था। ये उस क्रोध का अतिरेक ही था जो कोटला के लोगों ने बैल को साथ सरेआम कत्ल करके तमाशा दिखाया था।

अभी 16 लोगों के भविष्य का फैसला करना था। देखा जाए तो इनका भी फैसला तो हो ही चुका था। कमिश्नर किसी भी स्थिति में कावन की सजाओं के विरुद्ध जा नहीं सकता था। विरुद्ध जाने पर गलत संदेश जाता।

उसे दण्ड भी देना था और न्याय का पाखण्ड भी बनाए रखना था। वह

यह भी जानता था कि इन नामधारी कैदियों से किसी भी तरह के सहयोग की उम्मीद नहीं की जा सकती थी। अंग्रेजी न्याय व्यवस्था का बहिष्कार तो उनके सतगुरु जी के आदेश में शामिल था और वे सभी इसे प्राण प्रण से निभाते आ रहे हैं।

रस्सियों से बांधकर सभी नामधारियों को वापिस शेरगढ़ में भेज दिया जो अब इनसे अनजाना नहीं रह गया था। इन सभी को मालूम था कि कल उनके साथ न्याय का कौन सा नाटक किया जाना था। ये सभी उसका सामना करने के लिए तैयार थे। नियाज अली भी उनके साथ आया था।

सभी को शेरगढ़ में बंद करने के बाद अपने सिपाहियों को निर्देश देकर वह चला गया। आज का सारा दिन उसे चुस्ती से खड़ा रहना पड़ा था। रात सभी कैदियों ने मस्ती के साथ गुजारी। जो उनका नित्यनेम था, पाठ पूजा भी सभी ने बड़ी शांति के साथ सम्पन्न की। किसी कैदी के मन में किसी भांति की कोई दुविधा या द्वन्द्व नहीं था। अपने साथियों को तोपों से पूर्जा-पुर्जा उड़ते देखकर सभी के हृदय कमजोर नहीं बल्कि और मजबूत हुए थे। इन सबको मालूम था कि कल उनके साथ भी वही होना है।

दूसरे दिन कावन का आदेश लेकर नियाज अली उन सभी को लेकर कोटला के खूनी मैदान में आ गया।

कहा गया कि तीन व्यक्तियों की अदालत में इनके मुकदमें पेश किये जाएंगे। सजा का वहीं फैसला होगा। तीन लोगों में एक तो डिप्टी कमिश्नर कावन था जो इस अदालत की अध्यक्षता कर रहा था। दूसरा था कोटला का तहसीलदार और तीसरा शेरगढ़ का उप-नाजिम नियाज अली। यहां इन्हीं कातिलों के सामने दोषियों को सम्मुख रखकर फैसले किये जाएंगे।

कावन की दृष्टि में इनको तोप से उड़ाने की सजा भी कम भंयकर थी। पर इससे और बड़ी सजा कोई थी नहीं जो अंग्रेजी सरकार दे सकती थी। तीन व्यक्तियों की इस अदालत का यही काम था जो कावन अकेला ही कर चुका था। इस तीन सदस्यीय अदालती समिति में कावन भी शामिल था। कमिश्नर को तो उसकी हां में हां मिलानी थी और नियाज अली की तो इतनी औकात ही नहीं थी कि वह इस समिति में अपनी अलग बात या मशवरा रख सके। उसने तो अंग्रेज अधिकारियों की हां में सिर हिलाना था। दिखावे का फैसला कमिश्नर को करना था। कावन के निर्णय के विरुद्ध या विपरीत या अलग वह निर्णय करना नहीं चाहता था।

बाकी 16 नामधारी विद्रोही गुरवाणी गाते रहे।

जिस मरने से जग डरे मेरे मन आनन्द।
मरने ही ते पाईये पूरण परमानन्द।।

कुछ देर रुकने के बाद फिर इन्द्रकौर की आवाज आई

"सूरा सो पहिचानिए जो लड़े दीन के हेत।
पुर्जा पुर्जा कट मरे कबहु न छाड़े खेत।"

दो बार सिपाहियों ने आकर इनको चुप होने के लिए कहा पर विद्रोही कब मानने वाले थे।

"देह शिवा बर मोहे ऐहु शुभ करमन से कबहु न टरौं।"

मौत के खेल में उनके बाकी साथी जा चुके थे। मौत का मजाक उड़ाते हुए सभी 50 कूका सिहों ने हैरतअंगेज कारनामा कर दिखाया। चाहे कोई माने या न माने पर इस तरह का प्रतिकार या विरोध अंग्रेजों को कहीं न कहीं सोचने पर मजबूर तो करता ही होगा। जब कावन ने कमिश्नर की ओर देखा और कहा कि बागी नहीं आ रहे तो कमिश्नर ने नियाज अली की ओर देखते हुए कहा नियाज अली उन सभी नामधारी कैदियों को पेश किया जाए। नियाज अली आदेश पाकर चला गया और थोड़ी देर बाद नियाज अली 16 कूका बागियों को लेकर आ गया। कमिश्नर ने गुस्से भरी आंखों से उन सभी को देखा। सभी कूका बागी सामने खड़े थे। कावन ने जब उन्हें देखा तो उसको गुस्सा भड़क उठा।

"तुम क्यों नहीं आए।"

कहां आना था- "सभी ने कहा।"

"अदालत के सामने आना था।"

"कौन सी अदालत?" अनूप सिंह ने कहा-

"हम तीनों की अदालत के सामने।"

"यह तो कातिलों की अदालत है।

कातिलों की अदालत"- "ये क्या बकते हो।" कावन ने कहा-

"कातिल तो तुम कूके हो जिन्होंने कसाईयों को मारा, कोटले के काजी को मारा, मलौद के सरदार को धमकाया उससे झगड़ा किया।"

"'कसाईघर खोलकर तुमने क्या अच्छा काम किया और वह भी श्री हरिमन्दिर साहब की परिक्रमा के साथ।"

"सरकार हमारी है, काननू हमारा है। कसाई मार कर तुमने कानून हाथ में लिया था। सजा उसकी मिलनी थी।" कावन बोल उठा-

"कूकों तुम्हारी बहुत जुबान चलती है। कैदी होकर भी चुप नहीं रहते।"

उनकी ओर घूरता हुआ। निआज अली बोल उठा–

''ओ बिल्ले के कुते, भौंकना बंद कर, अनूप सिंह चिल्ला उठा।

तुम अपना मुंह बंद रखो।''

''हमारा मुंह तू क्या बंद करेगा। ये तो अब अपने साथियों के साथ मिलकर बंद होगी।

शट–अप्!'' कावन बोला–

''वह झटका भूल गया जब बच्चे ने तुझे जमीन पर दे मारा था।''

''बालक का क्या हश्र हुआ था।'' निआज अली बोला–

''बिशन सिंह ने जो कर दिया वह तो इतिहास में अमर हो गया।''

''जब जब इतिहास लिखा जाएगा। कावन को जमीन में गिरा पड़ा दिखाया जाएगा और बिशन सिंह को ऊपर दिखाया जाएगा।'' अनूप सिंह बोला।

''मुंह बंद रखो।'' कावन बोला।

''मुंह बंद हो गया था तब तेरा, जब बिशन सिंह तेरे ऊपर बैठा था।''

''क्या तब तेरे सामने मौत नहीं खड़ी थी।'' माता इन्द्रकौर ने कहा।

''कावन ये सुनकर खड़ा हो गया।''

''क्या हुआ कावन बहुत बुरा लगा।'' अनूप सिंह ने कहा–

''कमिश्नर ने सभी को चुप कराया। और बोला ये अदालत है इसे अपना काम करने दो।''

''ये अदालत अपना ही तो काम कर रही है।''

''हमने जो किया वह सबके सामने है अब तुम कर लो जो करना है।''

''हम कानून के हिसाब से फैसला करेंगे।'' कमिश्नर ने कहा–

''क्या तू और क्या तेरा कानून। सब अन्धा है। जो भी फैसला करोगे अपनी और गोरी सरकार के लिए ही करोगे।'' कैदी बोल उठे।

''क्या बकवास करते हो।'' कावन बोला।

''देखो तुम सभी ने कोटला में गदर मचाया, अमन को भंग किया और बेकसूर लोगों का कत्ल किया। इसकी सजा तुम्हें पता है।'' कमिश्नर ने सभी खड़े कूकों की ओर देखते हुए कहा''–

''अनूप सिंह की आंखें लाल हो गई।''

''वह बोला– सुन रे कमिश्नर आज तू कुर्सी पर बैठा है। कातिल कावन तेरे साथ बैठा है। कावन की राय के बिना तू कुछ भी नहीं करेगा।''

''सफाई में तुम कुछ कहना चाहोगे– कमिश्नर ने पूछा।

तुम कौन सी हमारी सफाई सुनोगे।''

''दूसरी बात ये है कि हम गोरी सरकार की अदालतों और सरकारी कानूनों को नहीं मानते।''

''फैसला तो हम ही करेंगे।''

''तुम तो फैसला कर चुके हो'' खेम कौर ने कहा।

इस तीन सदस्यीय अदालत के सामने पक्ष रखने का अर्थ भी यही था कि भैंस के आगे बीन बजाते रहो। 16 कूका सिखों को तोपों से उड़ाने की वही सजा दोहराई गई।

इस सजा की उम्मीद उन सिखों को थी।

कावन को सबसे ज्यादा सुनने की जल्दी थी। उसने कमिश्नर के कान में कुछ कहा। सभी कूका सिखों के चेहरों पर निराशा नहीं थी। इन सभी को मालूम था कि जो 50 सिखों के साथ जो हुआ है वही इन बाकी कूका सिखों के साथ होना है।

''इससे क्या कोई बड़ी सजा नहीं है-जवाहर सिंह ने पूछा।

कोई नहीं बोला।

वे सामने खड़े इन लोगों को देखते रहे। माता इन्द्र कौर और खेम कौर गुस्से से तिलमिला रहीं थी। वे जानती थीं कि उनकी बाकी उम्र जेल में ही गुजरेगी।

ये दोनों गुस्से से चलहकदमी कर रही थी। तोपें तो कल की ही तैयार खड़ी थीं। उनके साथ सैनिकों का दस्ता सुरक्षा को खड़ा था। जैसे ही कमिश्नर ने इन 16 कूका सिखों को तोपों से उड़ाने की सजा सुनाई कावन का और निआज अली का चेहरा खिल उठा। कूका बागियों के चेहरे प्रसन्नता से खिल उठे- सभी सिख बोल उठे -''जो बोले सो निहाल सत श्री अकाल।''

कावन के सम्मुख फैसला हुआ। इससे कावन के फैसले को पुष्टि मिल गई। कमिश्नर ने सजा की फाइल पर हस्ताक्षर किये और कावन निआज अली को कुछ आदेश देकर तोपों के पास चला गया।

सभी नामधारियों ने तीनों कातिलों के सम्मुख आने से इंकार कर दिया था। कावन ने सभी को सामने आने का हुक्म दिया। वे भी वहीं लाए गए पर सभी ने कार्यवाही का बायकाट कर दिया। इस पर अनूप सिंह जो उस समय सबके सम्मुख खड़ा था। उसने कहा-

''तुम सभी कातिल हो, तुम्हारी इस दिखावे की अदालत में हम अपना पक्ष नहीं रखेंगे। ये पाखण्ड करने की क्या जरुरत है।''

''क्यों तुम्हें कल की सजा से डर नहीं लगा।'' कावन ने कहा-

''फिरंगी कावन कौन डरता है तुम्हारें जुल्म से।'' अनूप सिंह ने कहा

तभी अलबेला सिंह बोल उठा ऊंची आवाज में -

''जिस मरने से जग डरे मेरे मन आनन्द। मरने ही ते पाइये पूरण परमानन्द।''

तेरी अदालतों का बाईकाट तो हमारे सतगुरु का हमें आदेश है। हम उसे पूरी तरह निभाएंगे। प्राण जाते हैं तो जाएं सतगुरु का हुक्म पूरा होना चाहिए।

''तुम्हारे गुरु को भी देख लेंगे। कावन गुर्राया-

''हमें रस्सियों व लोहें की जंजीरों में बांधकर गीदड़ की तरह भोंक रहा है। हमें जरा आजाद करके हमारे हाथ में हथियार दे कर देख, क्या हश्र करते हैं तुम्हारा।'' अनूप सिंह ने कहा।

कोटला में गदर मचाने की सजा तो हम तुम्हें देंगें। तहसीलदार ने कह कर कावन की तरफ देखा कि शायद कावन से उसे प्रशंसा के कुछ शब्द मिल जाएं पर कावन ने उसकी तरफ देखा तक नहीं। माता इन्द्रकौर गुस्से से तप रही थी। वह कोटला में अपनी शक्ति के दो हाथ दिखा चुकी थी।

''बिल्लिया क्यों इंसाफ का तमाशा कर रहा है। तोपें तैयार खड़ी है। चलाने वाले भी तैयार हैं और हम भी तैयार हैं फिर ये तमाशा करके देर क्यों कर रहा है।'' गुस्से में इन्द्रकौर ऊंची आवाज में बोली।

कावन ने उसकी ओर गुस्से वाली आंखों से देखा- ''अपना मुंह बंद रखो।''

''हमें कार्यवाई करने दो। नियाज अली ने कहा- ''ओ कुत्ते नियाज अली। मुंह तूं बंद रख। खाने को हड्डी तो तुझे मिल जाएगी। फिर दुम क्यों हिलाता है। अनूप सिह ने हंसते हुए कहा।

माता इन्द्रकौर ने उस पर थूक दिया और जोर जोर से हंसने लगी।''

इन 16 नामधारियों में से किसी ने अपना पक्ष नहीं रखा। उन्हें पूरी तौर पर सतगुरु जी के बहिष्कार को साकार कर दिया। सजा तो तय थी बस इन्साफ का नाटक, तमाशा करना था। कमिश्नर पूरी कार्यवाही की निगरानी कर रहा था। आधे घण्टे में कावन की अदालत में तोपों से उड़ाने की सजा सुना दी। तुरन्त ही कमिश्नर ने इस सजा की पुष्टि कर दी।

सजा सुनते ही सारे नामधारियों ने पूरे जोर के साथ ''सो बोले सो निहाल - सत् श्री अकाल'' का जयनाद गुंजा दिया।

इन्द्र कौर और खेम कौर चिल्लाकर बोली-''हमारी सजा क्यों नहीं सुनाता

बिल्लिया।''

हम भी तो कोटले के हमले में साथ रहे है।

''हमें इनसे अलग क्यों करता हैं।''

उनकी कमिश्नर ने एक नहीं सुनी और दोनों को पटियाला के सिपाहियों के सुपुर्द कर दिया।

मैदान में पहुंचकर तुरन्त अनूप सिंह भाग कर तोप के सम्मुख आ खड़ा हुआ। दूसरी तोप के सम्मुख भगत सिंह आ गया। तीसरी तोप के सामने अलबेला सिंह नाचता हुआ आ खड़ा हुआ। जवाहर सिंह भाग कर चौथी तोप के सामने खड़ा होकर नाप तौल करने लगा। पाचवां रूड़ सिंह अपने साथी जवाहर सिंह के साथ अड़ गया कि मैं पहले खड़ा होऊंगा पर जवाहर सिंह अड़ गया तो रूड़ सिंह पाचवीं तोप के सामने आ गया। छठी तोप के सामने हीरा सिंह और सातवीं तोप के सामने केसर सिंह खड़ा था। अनूप सिंह ने आवाज देकर पूछा-

''जवाहर सिंह क्यों जिद करता है। जाना तो सब को साथियों के पास ही है।''

''पर मैं पहले ही बहुत पीछे रह गया हूं और पीछे नहीं रहना चाहता। जवाहर सिंह ने ऊंची आवाज में कहा ताकि आवाज कावन के कानों तक जा सके।'' आवाज सुनकर कावन ने उनकी ओर देखा।

''तोपें भी तैयार है और हम भी तैयार हैं।''

कमिश्नर ने कावन को देखा और इशारा किया। कमिश्नर का इशारा पाते ही कावन ने तोपची को इशारा कर दिया।

सातों तोपें एक साथ चली और आजादी के मतवाले सातों सिखों का पुर्जा-पुर्जा आकाश में उड़ गया। शरीर नाम की वस्तु तो वहां दिखाई ही नहीं दे रही थी। बिखरी हुई हड्डियों और सिखों के खून के कतरे जगह-जगह फैल गए। मरने वाले मर गए। अपने निशां छोड़ गए। अब देखने वाले भी कम थे और तमाशा दिखाने वाले भी कम थे।

कमिश्नर सोच रहा था दिल्ली में उसे बताया गया कि 1857 के गदर के शक में ही सैकड़ों लोगों का संगीनों से बींध दिया गया। किसी भी भांति की कोई जांच पड़ताल नहीं की गई। कुछ दिनों के भीतर ही देशी रियासतों के सैनिकों ने दिल्ली को वीरान कर दिया या सीधा कहे तो शमशान बना दिया। इतना कत्लेआम किया गया कि रोने वाले भी न रहे।

इन कूका सिखों ने तो मरने में भी कमाल कर दिया। मौत को सामने खड़ा

देखकर बड़ा से बड़ा हौसले वाला व्यक्ति भी कांप जाता है। उसका सांस फूल जाता है। एक पल को उसकी आंखों के सामने अन्धेरा सा छा जाता है। पर यहां तो मामला ही उल्टा दिखाई दे रहा था। कोई मरने से नहीं डर रहा। तोप के सामने सभी नाचते हुए, मुस्कराते हुए आकर खड़े हो जाते।

दिल्ली में देश की सभी रियासतों के राजाओं की अंग्रेज वाइसराय के सामने आंखें उठाने की हिम्मत नहीं थी। वहीं इन मरने वालों की आंखों में निडरता तथा हिम्मत दिखाई दे रही थी। इन हिन्दुस्तानियों में मरने का शौक भी अपनी हदें पार कर जाता है।

वाइसराय के निर्देश पर चांदनी चौक के बीच में बहने वाली नहर शहादत खां को बन्द करके सड़क बनाने का काम शुरु हो गया था। किसी में इतनी हिम्मत नहीं थी कि कोई उसका विरोध कर सके। चांदनी चौक का मुस्लिम समुदाय नहर को बन्द होते देखता रहा पर बोला नहीं क्योंकि बोलने की सजा मालूम थी। जिन्होंने विरोध किया वे सभी सलीमगढ़ की जेल में डाल दिये गए।

पर ये कूका सिख मालूम नहीं किस मिट्टी के बने हुए हैं न मौत का खौफ, न परिवार की चिन्ता न घरबार की फिक्र।

तभी दूसरे कूका सिख भागकर तोपों के सामने आकर खड़े हो गए। पहला वरियाम सिंह था, दूसरा सुजान सिंह, तीसरा बेला सिंह, चौथा शोभा सिंह, पांचवा श्याम सिंह था। बाकी के चार सिख वहीं खड़े रहे।

"ये क्यों रुक गये-कावन की तरफ इशारा करके कमिश्नर ने पूछा।

क्या खाली तोपें चलाएगा फिरंगी कमिश्नर।

वहां चारों में से एक हाकम सिंह गर्ज कर बोला।"

"चुप रह सरदार!" कावन ने डांटा।

"तेरी कौन परवाह करता है हाकम सिंह ने हंसकर कहा-

"हमारी परवाह पूरा मुल्क करता है। दिल्ली हमारे पैरों के नीचे हैं सब पर हमारा हुक्म चलता है।" कमिश्नर ने ऐंठ से कहा-

"कमिश्नर दिल्ली तो आज तेरे पैरों के नीचे आई है पर तू जानता नहीं सौ साल पहिले खालसा फौजों ने भी दिल्ली को पैरों के नीचे ले लिया था। फिर तुम क्यों दिल्ली जीतने का मान करते हो। सिखों ने दिल्ली का ऐसा गन्दा हाल नहीं किया था। हम लुटेरे नहीं थे। तुम लुटेरे हो। लूटना तुम्हारा काम है जुल्म करना तुम्हारा धर्म बन गया है।" हाकम सिंह ने ऊंची आवाज में कहा।

"आज हमारी मर्जी के बिना मुल्क में कुछ भी नहीं हो सकता विरोधी

जीवित नहीं रह सकता।''

बाकी के चारों बचे सिख खिलखिला कर हंस पड़े। ये चारों तैयार खड़े थे।

तभी हाकम सिंह ने तीनों को आवाज दी- ''सिहों डर तो नहीं लगता।''

तीनों एक साथ बोल उठे-''इन फिरंगियों से डरना क्या। हमारा सतगुरु हमारे साथ है, उनका बल हमारे साथ है। वे हमारे अंग संग है। पर अफसोस है?''

किस बात का? श्याम सिंह ने पूछा।

''अपने साथियों से दूर होने का अफसोस है।''

''वह तो हमें भी है। उनसे मिलने को मन व्याकुल हो रहा है।''

''बात तो सही कह रहे हो। साथ वरियाम सिंह बोल उठा अब देरी किस बात की है? श्याम सिंह ने फिर पूछा-

''देख नहीं रहा इस बंजर मैदान पर हमारे साथियों की बिखरी हुई हड्डियों और खून के कतरों ने कितना श्रृंगार कर रखा है। इन गोरों की हालत देखो। हमारे श्रृंगार से इन के नाक सड़ रहे है, तभी बदबू आने पर नाक पर कपड़ा रख रहे हैं।

''चल ओए कावन तोपें चलाने का हुक्म दे। जब हमने सारे काम मिलकर किये है, अब उनसे दूरी का अफसोस हैं उनसे अलग होने का अफसोस है।''

''फिरंगी जो करना है जल्दी कर देर न कर।''

''अभी कार्यवाही बाकी है। तुम्हारें घरों की कुर्की होगी। बाकी मिलने वालों को नजरबंद कर दिया जाएगा।''

''जो करना हो कर लेना फिरंगी। वरियाम सिंह ने कहा।

हम जो आग जला जा रहे हैं वह आग ठण्डी नहीं होगी। तू चाहे घरों की कुर्की करवा ले चाहे हमारी जमीनें जब्त कर ले, चाहे बाकियों को काले पानी भेज दे। अब तुम चैन से बैठने नहीं पाओगे। देश में कुछ न कुछ होता रहेगा। वीर सिंह ने ललकार कर कहा।''

कमिश्नर उनके मुंह की ओर देखता रहा।

''हमें मालूम था तेरे खिलाफ जब हमने यह कदम उठाया था तभी हम जानते थे कि इसकी कीमत तो हमें चुकानी पड़ेगी। अब वह कीमत किसी भी शक्ल में देनी पड़े। इसकी कीमत हमारे परिवार वालों को नाते-रिश्तेदारों को भी चुकानी पड़ेगी पर आजादी की कीमत तो देनी ही पड़ेगी। और ये कोई नई परम्परा नहीं है, आजादी जब जब चाही गई तब उसकी मनचाही-अनचाही कीमत तो देनी ही

पड़ती है।

इसके साथ ही कमिश्नर तुमने एक बात अभी और करनी है और वह होगी अपने वफादार कुतों के सामने इनाम के रूप में हड्डियां भी डालनी होगी। नहीं डालोगें तो ये कुते ये देशी रियासतों के करिन्दें तुम्हारी वफादारी में अपनी दुम कैसे हिलाएंगे।'' जो बोले सो निहाल-सत श्री अकाल।

''शटअप् यू इन्डियन डॉग।'' कावन चिल्लाया-

''हम इन्डियन कुत्ते तुम्हारी वफादारी में दुम नहीं हिलाते, तुम्हारे द्वारा फेंकी गई हड्डियां नहीं चबाते।'' वरियाम सिंह ने तुरन्त जवाब दिया-

''इसके उत्तर में कावन ने तोपचियों को इशारा किया और चारों वीरों के पुर्जा पुर्जा होकर आकाश में उड़ गये। इस पर आकाश से हल्की सी बूंदा-बांदी हुई मानो आकाश ने इनकी वीरता के स्वागत में वर्षा की हो। कोटला के मैदान में अब सब शान्त था। वातावरण में एक चुप्पी सी फैली हुई थी। देखने वालों ने एक तरफ साम्राज्य का नंगा तांडव देखा। सजा देने का जनून देखा जिसमें किसी भी कायदे कानून का पालन नहीं किया गया और मनचाही सजा दे डाली। हालांकि यह वारदातें इतनी गम्भीर नहीं थी कि सरकार को कोई खतरा पैदा हो सकता। अगर 100 -150 लोगों ने बगावत कर भी दी थी तो क्या अंग्रेजी कम्पनी सरकार इतनी कमजोर थी कि वह इसका समाधान नहीं खोज सकती थी।

तीनों लोगों की इस स्वयंभू अदालत ने बाकी घायल पकड़े गए लोगों को सजाएं सुनानी आरम्भ की।''

सं. वीरसिंह को 9 महीने कैद बामुशक्कत
सं. राम सिंह को 9 महीने कैद बामुशक्कत
सं. जैमल सिंह को 15 महीने कैद बामुशक्कत
सं. दरबारा सिंह को 5 महीने कैद बामुशक्कत
सं. काला सिंह को 6 महीने कैद बामुशक्कत
सं. लाल सिंह को 5 महीने कैद बामुशक्कत
सं. महताब सिंह को 9 महीने कैद बामुशक्कत
सूबा देवा सिंह को 2 महीने कैद बामुशक्कत
मिस्त्री नराता सिंह को 12 महीने कैद बामुशक्कत

सजा सुनकर जैमल सिंह ने गरज कर कहा -कमिश्नर इतनी सजा से क्या होगा। हम बाहर आकर फिर तुम्हारी सरकार के खिलाफ बगावत करेंगे और ये बगावत तब तक जारी रहेगी जब तक ये तूफान नहीं बन जाता और तुम अपना

बोरिया बिस्तरा समेट कर इंगलिस्तान नहीं भाग जाते।

"हमारी जड़ें पाताल तक हैं" कमिश्नर ने कहा

"जब बगावत की आग पाताल तक पहुंचेगी जब तुम्हें कौन बचाएगा। ये देशी रियासतों के राजे भी इसमें जलकर राख हो जाएंगे।"

"तुम हिन्दुस्तानी दिन में सपने बहुत देखते हो?" कावन बोला।

"सपने देखेंगे नहीं तो उन्हें पूरा कैसे करेंगे।" नराता सिंह ने कहा।

–तुमने तो धोखेबाजी, फरेब, झूठ साजिशें कर करके भाइयों को लड़वा कर हिन्दुस्तान पर कब्जा किया है। तुम्हारे दुश्मन गोरी चमड़ी वाले भी बहुत हैं एक तो महाराजा रणजीत सिंह की सेना का कमान्डर ही था जो फ्रांसीसी था। गोवा में छोटे से देश का राजा है जो तुम्हारी परवाह नहीं करता। तुम्हें आंखे दिखा रहा है। मजा तो तब था जब रणजीत सिंह से टक्कर लेते तब तुम्हें छठी का दूध याद आ जाता। उसके सामने तुम्हारी सेना और तुम भीगी बिल्ली बने रहे।

"यह हमारी कूटनीति थी। हम उससे लड़ना नहीं चाहते थे।"

"महाराजा रणजीत सिंह से लड़ना नहीं चाहते थे या उसकी ताकत से डरते थे।"

"तभी तो दण्डवत होकर दरबार में सामने लेट जाते थे।" राम सिंह ने कहा।

क्या बकवास करते हो।" कमिश्नर बोला- "कमिश्नर ये बकवास नहीं है।"

"टीपू सुल्तान को धोखे से मारा, मराठों को चालबाजी से हराया। यहां

सिधिंया और होल्कर तुम्हारे चापलूस थे। तभी तो आज वे सभी जिन्दा है। चापलूस जिन्दा रहते हैं बार बार मरने के लिए। हमारे जैसे सरफरोश एक ही बार सिर-घड़ की बाजी लगा देते हैं।" देवा सिंह ऊंची उवाज में बोला।

वह तो तुमने कर दिखाया। अब न तुम रहे न जमीन जायदाद रहेगी न मकान सम्पति रहेगी। सरकार सब कुछ कुर्क कर लेगी। कावन बोल उठा।

तो क्या सब इंग्लैड ले जाओगे।"

"दरबारा सिंह ने खिल खिलाकर ये कह कर कमिश्नर को देखा।

"आज रात को तुम्हारे गुरु को भैणी से उसके मुख्य लोगों के साथ गिरफ्तार करके पंजाब से बाहर भेज दिया जाएगा। कावन ने कहा।

"भैणी के डेरे में हमको पता चला है कि तुम्हारे गुरु ने बहुत हथियार दबा

रखे है। उन सबके लिए सेना भेजकर खुदाई करके सारे हथियार तलाश किये जाएंगे।'' कमिश्नर ने सभी को देखकर कहा।

''इसके अलावा और क्या कर सकते हो।'' दरबारा सिंह बोल उठा।

''भैणी के डेरे को बन्द कर दिया जाएगा। न कोई आएगा न कोई बाहर जा पाएगा।'' कावन ने फिर कहा।

''इसका अंदाजा तो हमको पहले से ही था। हमारा घर बार कुर्क हो जाएगा। पर इस नतीजे से परवाने कहां डरते हैं। परवाने को ये पता होता है कि शमा के पास जाएगा तो जल जाएगा। पर वह शमा के पास आता है और जल जाता है। ऐसे ही हमें भी पता था कि इस राह पर चलने के नतीजे भी भंयकर होंगे। दरबारा सिंह ने गरज कर कहा।

थोड़ी देर चुप होकर दरबारा सिंह फिर बोला। ''क्या ईसा मसीह को ये नहीं पता था कि जो वह कर रहे हैं उसका नतीजा सूली पर चढ़ना होगा तो क्या ईसा मसीह डर गए।'' उन्होंने सच का मार्ग नहीं छोड़ा।

सुकरात को मालूम था कि सच बोलने का नतीजा बुरा होगा पर सुकरात ने सच का रास्ता नहीं छोड़ा। तो हम ये रास्ता कैसे छोड़ दें।''

कमिश्नर ने इन सभी को सजा सुनाने के बाद पटियाला के कारागार में भेज दिया।

''अब सड़ो जेल के कमरों में।''

''हम वहां भी खुश रहेंगे।'' सभी सजायाफता लोगों ने कहा। सारे अंग्रेज अधिकारी ये यकीनी तौर पर मानते थे कि सतगुरु राम सिंह जी के विरुद्ध मुकदमे के दौरान कोई भी गवाही का मिलना कठिन होगा। कुछ इसी तरह का पत्र पंजाब सरकार की ओर से कलकत्ता को बहुत पहले कसाई हत्याओं के सन्दर्भ में दिसम्बर 1871 को लिखा गया था।

कमिश्नर ने शाम के समय एक दरबार सजाया और वफादार लोगों तथा सहायता करने वालों को ईनाम भी दिये।

उमरगढ़ के नाजिम नियाज अली (1000/-)
पटियाला राम नगर के पंजाब सिंह जो महाराजा का दरबारी था (300/-)
गांव रड़ का जयमल सिंह (200/-)
(जिसने घायलों को पकड़ने में सहायता की थी।)
मस्तान अली (100/-)
उत्तम सिंह (50/-)

रतन सिंह (50/-)

गुलाब सिंह (50/-)

प्रताप सिंह (50/-)

इस दरबार में कमिश्नर के पास तोपें भेजने वाली सिख रियासतों पटियाला, जीन्द, नाभा के वकील भी मौजूद थे। इन वकीलों की ओर से उपरोक्त राजाओं की तरफ से आभार प्रदर्शन पत्र सौंपा गया। पंजाब सरकार की ओर से मलेरकोटले में तोपों से उड़ाने की कार्यवाही के लिए कमिश्नर व कावन को बधाई दी गई और ऐसी सजा देने पर धन्यवाद दिया।

कुछ दिनों बाद 26 फरवरी 1972 को पंजाब के लेफटिनेंट गर्वनर ने कोटल' के बंजर मैदान का निरीक्षण किया। अभी तक कहीं कहीं शहीदों की हड्डियां बिखरी पड़ी थी। पंजाब सरकार को तो अपने अधिकारियों का बचाव करना था सो वह कर ही रही थी। इन सिखों को सजा देने से पूर्व किसी भी तरह की न्याय प्रक्रिया का पाखण्ड नहीं किया गया। अधिकारी तो चाहते थे कि जितनी जल्दी को सके इन सभी सिखों को सजा देकर इस अध्याय को खत्म कर दिया जाए। इसीलिए जब इन लोगों को सजा देने की बात कावन के सामने आई तो उसने तत्काल देशी रियासतों से तोपें मंगवा ली जो सजा देने के लिए कम तथा सरकारी आंतक फैलाने के लिए अधिक थी। इन लोगों का अपराध तो इतना बड़ा भी नहीं था कि इस कारण पूरे राज्य में उपद्रव हो जाते या कानून व्यवस्था खंडित हो जाती।

क्रान्ति के समय दिल्ली में एक बार दोनों सेनाओं का मुकाबला हो गया था। गद्दरी सैनिकों का नायक बख्त खां था। जैसे वह अपनी सेना लेकर दिल्ली आया उसने मुकाबले में खड़ीअंग्रेजी तोपों का मुंह बन्द कर दिया।

कहा तो यहां तक जाता है कि इस मुकाबले में हार के बाद अंग्रेज अधिकारी इतना आपा खो बैठे कि अपने कैम्पों में जाकर इन अधिकारियों ने गरीब भारतीय कामगारों, नौकरों, पानी पिलाने वालों को ही मार दिया। यह सजा दी गई हिन्दुस्तानी नौकरों को उनकी वफादारी की। असल में यह हरकत इन गोरे अंग्रजों की काले हिन्दुस्तानियों या यों कहे तो एशिया के लोगों के प्रति नफरत को दिखाती है। इस मुकाबले में हारने वाला अंग्रेज जनरल बरनार्ड शर्म के मारे निराशा और हैजे से मर गया।

अंग्रेजों ने इस पर जीनत महल को साजिश करके और लालच देकर बख्त खां के खिलाफ भड़काया। जीनत महल बूढ़े सम्राट और अशक्त आदमी की नौजवान बीबी थी। जयचन्दों और मीर जाफरों ने अपना काम किया।

क्रान्ति के लिए लड़ने वालों के बीच एक लाइन खिंच गई। दिल्ली के सैनिक और नायक बख्त खां के सैनिक अलग अलग हो गए। बस यहीं से अंग्रेजी सेना की जीत का सिलसिला शुरु हो गया। फूट डालो और शासन करो की नीति काम कर गई। अंग्रेजी सेना ने किसी को भी नहीं छोड़ा, जो सामने आया मार दिया गया। जो दिखाई दिया दे गया, जीवित नहीं बचा। देखा जाए तो ईस्ट इंडिया कम्पनी का गठन तो भारत से व्यापार करने के लिए किया गया था। सबसे पहले ईस्ट इण्डिया कम्पनी जहांगीर के दरबार में नतमस्तक हुई थी और भारत में व्यापार करने की आज्ञा मांगी थी तब बादशाह जहांगीर ने किस गलतफहमी या दयावश इन गोरे लोगों को सूरत में कोठी बना कर व्यापार करने की आज्ञा दे दी थी। बस यहीं से हिन्दुस्तान के लोगों के बुरे दिनों की शुरुआत हो गई और हिन्दुस्तान के सूरज को ये गोरा ग्रहण लग गया।

सूरत में कोठी बनाकर व्यापार की आज्ञा मांगने वाले छल, कपट, झूठ, दगाबाजी, धूर्तता, घृणित षडयंत्रों के कारण तथा लालच दिखाकर हिन्दुस्तान के स्वामी बन गए। महमूद, नदिरशाह और अब्दाली की लूट को तो सभी जानते थे पर अंग्रेजों ने भी लूटने व राज्य हड़पने में कोई कसर नहीं छोड़ी।

जैसे मुसलमान भारत में आने के साथ एक हाथ में तलवार और दूसरे हाथ में कुरान लेकर आए थे। कुछ ऐसा ही हाल अंग्रेज ईस्ट इण्डिया कम्पनी का था। जिसका एक ही उद्देश्य था कि पूरे हिन्दुस्तान को ईसाई बना दिया जाए। इस विषय में ईस्ट इण्डिया कम्पनी के अध्यक्ष मि. मैगल्स ने इग्लैड की संसद में बड़े गर्व के साथ यह कहा था–''परमात्मा ने हिन्दुस्तान के विशाल साम्राज्य को हमें सौंपा है ताकि हम हिन्दुस्तान के एक हिस्से से दूसरे हिस्से तक ईसा मसीह की विजयी पताका फहराये। हम में से हर एक को अपनी पूरी शक्ति इस काम में लगा देनी चाहिए ताकि सम्पूर्ण हिन्दुस्तान को ईसाई बनाने के इस महान काम में पूरे मुल्क में कही भी ढील न होने पाए।''

इस शब्दावली को किसी भी दृष्टिकोण से देखा या समझा जाए अर्थ सब कुछ स्पष्ट हो जाता है। कुछ इसी भांति के विचार एक अन्य अंग्रेज विद्वान कैनेडी के भी थे – ''हम पर चाहे कितने भी एतराज किये जाए पर एक बात तो साफ है कि जब तक हिन्दुस्तान में हमारा साम्राज्य कायम है तब तक हम यह नहीं भूलना चाहिए कि यहां पर हमारा मुख्य कार्य इस देश में ईसाई मत को ताकत से फैलाना ही है। जब तक कन्याकुमारी से हिमालय तक सारा हिन्दुस्तान ईसाई मत ग्रहण न कर लें हमें इसके प्रचार में लगे रहना है। यह भी ध्यान रहे हिन्दु या मुस्लिम धर्म

की निन्दा न करने लगे।"

कमिश्नर और कावन भी यही काम कर रहे थे। ईसाई मत का प्रचार और विरोधियों को दण्ड देकर आंतकित करना। भारत के सभी अंग्रेज अधिकारी पूरी ताकत से हिन्दुस्तानियों के अभिमान-आन-बान-शान को खण्डित करने के लिए पूरी तरह से जुटे थे।

पूरे लुधियाना जिले में मिशनरी स्कूलों की बाढ़ आ गई। इन स्कूलों को कम्पनी सरकार पूरी आर्थिक सहायता भी दे रही थी ताकि इन स्कूलों में ईसाईमत का प्रचार होता रहे। स्थानीय भाषाओं के स्कूलों को बन्द किया जा रहा था। नामधारी लहर के अन्तर्गत मिशनरी स्कूलों में अंग्रेजी भाषा की पढ़ाई का पूरजोर विरोध हो रहा था। इस काम के लिए सतगुरु राम सिंह जी के नेतृत्व में कम्पनी सरकार का प्रत्येक स्तर पर बहिष्कार की योजना को अमली रूप दिया जा रहा था। ये बहिष्कार कार्यक्रम योजनाबद्ध ढंग से किया जा रहा था।

बहिष्कार के कारण जहां साधारण पंजाबियों को आत्मिक बल मिला वहीं सभी प्रकार के सरकारी ढोंग, लालच के विरुद्व पूरी ताकत से खड़े होने की हिम्मत भी मिल रही थी और सरकार के लिए यही हिम्मत खतरनाक साबित हो रही थी। जो सरकार सत्ता झूठ, लालच, साजिशों पर खड़ी थी उसे सदव्यवहार, सिद्वान्तों के प्रति निष्ठा कहां अच्छी लग सकती थी?

सरकारी अदालतों के विरुद्व नामधारी सम्प्रदाय में पंचायती प्रबन्ध को स्वीकारा जा रहा था। जो भी निर्णय ये पंचायतें करती थी वह सभी पक्षों को सहर्ष स्वीकार होता था। किसी प्रकार की कोई किन्तु परन्तु नहीं। अंग्रेजों को कहीं भी, कभी भी, किसी भी स्थिति में यह स्वीकार्य नहीं था कि पंजाब या भारत के किसी भी भाग में उनकी सता के विरुद्व कोई आवाज उठा सके। प्रारम्भ से ही अंग्रेज अधिकारियों की नामधारी लहर और उसके नेता पर कड़ी गिद्व दृष्टि थी। अभी 1857 के गदर के जख्म पूरी तरह से भरे नहीं थे। उस पर पंजाब की यह शान्तिपूर्ण बहिष्कार की बगावत की हवा जो कभी भी खतरनाक तूफान का रूप ले सकती थी। हालांकि अमृतसर, रायकोट के कसाई वध के आरोपों के पीछे सतगुरु राम सिंह जी का कोई स्पष्ट हाथ होना सिद्व नहीं हो सका था पर अंग्रेज अधिकारी सतगुरु जी से पूरी तरह भंयकित थे। उनके हृदय में किसी अनहोनी घटना या उपद्रव की आंशका सदैव बनी हुई थी। कुछ लोग धीरे-धीरे अंग्रेजी जुल्म की बातें कर रहे थे। कुछ लोग अंग्रेज-सिख युद्वों में अंग्रेजों द्वारा किये गये अत्याचार की बातें कर रहे थे।

उधर सतगुरु जी अकाल बुंगे में विचार मग्न थे। वे जानते थे कि शासन से रहम की आशा रखनी व्यर्थ की बात है। जब आनन्दपुर में मुगलों ने घेरा डाला था तब पहाड़ी राजाओं की सेना भी उनके साथ थी। पहाड़ी राजाओं के कसमें खाने के बाद व हालात को समझते हुए गुरु जी ने आनन्दपुर का किला छोड़ दिया। तब शत्रु सेना ने सिरसा नदी के किनारे गुरु जी पर पीछे से आक्रमण कर दिया जिस कारण गुरु जी का परिवार बिखर गया और फिर परिवार पर अत्याचारों का भारी दौर चला। ऐसा दौर कि उसे लिखते हुए कलम भी कांप उठती है। चमकौर की कच्ची गढ़ी में ऐसा युद्व हुआ जिसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती। एक ओर लाखों की मुगल सेना और दूसरी ओर कच्ची गढ़ी में सिर्फ 43 सिक्ख। सिक्ख कौम को बहादुरी का ही नाम है।

कच्ची गढ़ी में गुरु जी समेत 40 सिख और बाहर सागर की भांति गुर्राती शत्रु सेना थी। गुरु जी के सामने दोनों साहबजादों ने वीरगति पाई। गुरु जी ये सब परकोटे से देख रहे थे। जिस दिन गुरु जी ने चमकौर की गढ़ी छोडी थी उस दिन गुरु जी का 39वां जन्मदिन था। उसी रात वे माछीवाडे के जंगलों में भटकते रहे। जन्मदिवस से महत्वपूर्ण वह उद्देश्य था जिसके लिए गुरु जी ने कृपाण उठाई थी। अपने इसी उद्देश्य के लिए गुरु गोबिन्द सिंह जी ने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा न अपना, न सिखों का मनोबल गिरने दिया।

X X X

इसी तरह अगले महीने बंसत पचंमी को सतगुरु जी का भी जन्मदिवस आने वाला था मालूम नहीं तब सतगुरु जी कहां और किस हाल में होंगे। सतगुरु जी का उद्देश्य महान ही नहीं बहुमुखी भी था। 1857 की क्रांति में हथियारों का प्रयोग वह काम नहीं कर सका जो सतगुरु जी की अहिंसक सोच और विचारधारा ने बड़ी हद तक कर दिखाया। तब भी पहाड़ी हिन्दू राजा गुरु गोबिन्द सिंह जी के विरुद्व थे अब भी सिखों की रियासतें सतगुरु जी के कार्यक्रम के विरुद्व सीना अड़ा कर खड़ी हो गई थीं। इन सभी सिख रियासतों के पूर्वज कभी देशभक्त नहीं रहे। बल्कि वे सदैव अपनी स्वार्थपूर्ति में गददी की सुरक्षा में प्रयासरत रहे।

उधर लुधियाना में कमिश्नर के कार्यालय से कोई सवार निकला और कोटला की ओर सरपट दौड़ता जाता। दूसरी और पटियाला राजा का कोई संदेश लेकर कोई सवार कमिश्नर के कार्यालय की तरफ दौड़ रहा था। लुधियाना से कमिश्नर का आदेश लेकर कोई घुड़सवार भैणी गांव की तरफ दौड़ रहा था। दूसरी और भैणी गांव से कर्नल बेली का आदेश लेकर घुड़सवार कमिश्नर कार्यालय की

ओर भाग रहा था।

कमिश्नर के कार्यालय में चहल कदमी बढ़ी हुई थी। कोटला में सजा का काम पूरा हो चुका था और कुछ लोगों को जेल भी भेज दिया गया था।

कमिश्नर के आदेश पर शहीद सिंहों के घरों व सम्पति की कुर्की के आदेश बनाए जा रहे थे। ऐसा आभास हो रहा था कि आज की रात में ही सब कुछ करना अभीष्ट है। कमिश्नर को ये बताया गया कि भैणी गांव के डेरे में 200 के करीब नर-नारी एकत्र है। इनमें से कुछ ऐसे थे जिनका कोई और ठिकाना नहीं था और जो यहीं सेवा करते और सदाव्रत लंगर में अपनी उदरपूर्ति करते थे। कुछ माघी के मेले पर भैणी आए थे और यहीं रह गये थे। पर इन सभी लोगों से किसी प्रकार के उपद्रव की कोई आंशका नहीं थी। ये सभी यहां भक्तिवश सतगुरु जी के दर्शन करने आए थे या माता जस्सा जी को श्रृद्वासुमन अर्पित करने आए थे। इन सभी को एहसास था कि आज की रात कोटला की सजा के बाद सतगुरु जी के साथ अवश्य कोई अनहोनी होने की आंशका है। एक तरह का भय उन सभी के मन में व्याप्त था।

सिख राजाओं से देशभक्ति या देश की आजादी के दीवानों की किसी भी प्रकार की सहायता करना दिवास्वप्न ही हो सकता है। गोरी सरकार से मलेरकोटला की भांति किसी भयानक दण्ड की उम्मीद ही हो सकती है। जिस तरह 57 की क्रान्ति के नायक दिल्ली के सम्राट बहादुरशाह जफर को रंगून में निर्वासित कर दिया था शायद उसी भांति सतगुरु जी को देश से बाहर निर्वासित कर दिया जाए या महारानी जिन्दा की भांति कैदी बनाकर दूर किसी कारागार में डाल दिया जाए।

सरकार को भैणी गांव में सिखों की कवायद करने के झूठे समाचार मिलते रहे। इन समाचारों में पंजाब सरकार के कान खड़े कर दिये। चाहे ये समाचार झूठे ही थे पर सरकार चौकन्नी रहना चाहती थी और कोई भी अवसर हाथ से जाने नहीं देना चाहती थी। साहनेवाल में भी गोरखों की टुकड़ी को सावधान किया गया।

कर्नल बेली ने 25 से अधिक सैनिकों तथा पुलिस के साथ भैणी के गुरुद्वारे को घेर लिया। कर्नल को समाचार मिला था कि सतगुरु जी को प्रमुख सूबों के साथ गिरफ्तार करके पुलिस गार्ड और गुलाब सिंह के नेतृत्व में लुधियाना भेज दिया जाए।

कर्नल बेली ने भैणी पहुंचकर आसपास के गांवों के लम्बरदारों को भी बुला लिया। गुरुद्वारे में उपस्थित सभी लोगों को गुरुद्वारे से बाहर लाया गया। देखते ही देखते कर्नल बेली ने गोरखों की सहायता से सारा गुरुद्वारा खाली करवा लिया।

केवल सतगुरु जी के 90 वर्षीय पिता, उनके भाई बुद्ध सिंह, पुत्री नन्दा और दुकान का प्रबन्धक चलाने वाले वरियाम सिंह, कुछ अशक्त व्यक्ति व औरतें तथा कुछ गाय, भैसें रहने दिये। जनवरी मास की काली रात में गोरी सरकार की ये काली करतूत सुबह ही पता चली।

गुरुद्वारे से 170 के करीब कूकों को पैदल ही 15-20 मील दूर लुधियाना में कमिश्नर के कार्यालय लाया गया। इन सभी को सुबह तक कार्यालय में रखा गया।

भैणी गांव से कार्यालय तक आने में 6 घण्टे से अधिक का समय लगा। इनमें से 122 लोगों को कमिश्नर ने सख्त चेतावनी दी कि अगर इनमें से किसी को भी भैणी गांव में देखा गया तो जेल में डाल दिया जाएगा।

जो लोग घर बार बेचकर गुरुद्वारे आ गये थे और जिनके पास कोई ओर ठिकाना नहीं था उन 50 लोगों को लुधियाना कार्यालय में ही रखा गया। इन सभी को अपनी जमानतें देने को कहा गया। जमानतें न देने पर इनको दो-दो साल की कैद सुनाई गई। कमिश्नर को इन लोगों से किसी भी तरह की वारदात का अन्देशा बना हुआ था। ये सभी अपने नेता/गुरु के प्रति पूरी तरह से वफ़ादार थे।

दो दिन तक भैणी गुरुद्वारे की तलाशी होती रही। डेरे की खुदाई भी की गई क्योंकि हथियारों के दबे होने का अनुमान था। तलाशी में कोई गुप्त कागज नहीं मिला सरकार को यह भी अनुमान था कि नेपाल, हैदराबाद या कश्मीर से सम्बंधित गुप्त कागज मिलेंगे पर ऐसा हुआ नहीं। कुछ सोने चांदी के जेवर व 1500 की नकदी के साथ कुछ कुल्हाडियां मिली। इसके अतिरिक्त कुछ बहुमूल्य पोशाकें भी मिली जिन्हें कमिश्नर कार्यालय भेज दिया गया।

कमिश्नर के आदेश पर थानेदार उमराव अली के नेतृत्व में 20 पुलिसवालों की एक चौकी गुरुद्वारे के बाहर बिठा दी गई ताकि आने जाने वालों पर निगरानी रखी जा सके, उनकी चौकसी की जा सके।

उधर लम्बरदारों ने कर्नल बेली को सतगुरु जी के खिलाफ खूब भड़काया। इस पर फिर डेरे की खुदाई के आदेश लिये गये। एस.पी. जैक्सन ने फिर खुदाई करवाई पर कुछ भी नहीं मिला। अब न डेरे के भीतर कोई जा सकता था और बाहर जाने वालों की तलाशी ली जाती। आने वाले को गिरफ्तार करके पूरी पूछताछ की जाती। लुधियाना के कमिश्नर फोरसाइथ ने पंजाब सरकार की स्वीकृति से निम्न आदेश दिये -

1) भैणी में पुलिस चौकी स्थाई रूप से रहे।

2) सन्देहास्पद व्यक्ति की निगरानी रखी जाए और उसकी जानकारी पाकर उसकी जमानत ली जाए।

3) कूकों के किसी भी तरह के दीवान (जमा होने) पर पाबन्दी लगा दी जाए। क्योंकि ये संगठन सरकार विरोधी माना गया है।

4) कूकों के गुप्त विभागों की खोजबीन और छापे मारे जाए।

5) जब तक कूकों की विस्फोटक गतिविधियां समाप्त नहीं हो जाती तब तक लुधियाना में सेना का प्रबन्ध रखा जाए। जो किसी भी स्थिति के लिए तैयार रहें।

6) मलेर कोटला में 100 सिपाही प्रत्येक वक्त तैयार रखे जाएं।

7) सभी कूकों केन्द्रों की निगरानी रखी जाए और समय समय पर इसकी सूचना दी जाए।

सिख रियासतों के चापलूस राजाओं ने जो किया सो किया। इस अवसर पर प्रमुख सरदार भी अवसर चूकना नहीं चाहते थे। सरकार की चापलूसी का यह सुनहरी अवसर हाथ में आया था इसे जाने देना नहीं चाहते थे।

इन प्रमुख सरदारों, जागीरदारों तथा धनी व्यक्तियों ने कूकों व सतगुरु जी के विरुद्व प्रस्ताव पास करवा के पंजाब सरकार को भेजा। जिसमें लिखा था सभी भांति के सिख सरदार, जागीरदार ये सर्वसम्मति से प्रस्ताव पास करते है कि उनका कूकों से कोई सम्बन्ध नहीं है। हम इस बात से प्रसन्न है कि सरकार ने समय रहते बागियों के विरुद्व सही और कारगर कदम उठाया है। बुराई को प्रारम्भ में ही दबा दिया जाए। सरकार द्वारा उठाए गये उपायों का हम समर्थन करते हैं।

इस पत्र के नीचे पंजाब के सभी प्रमुख सन्धावालिए तथा मजीठिया सरदारों, जागीरदारों के हस्ताक्षर थे। वाह री भारत भूमि। देश की स्वतंत्रता के लिए उठी आवाज के विरुद्व विदेशी शासकों की हां में हां मिलाने के लिए सभी इकत्र हो गए। गुलामी की शराब कितनी मनमोहक व बेसुध करने वाली थी। सभी को अपनी विरासत भूल गई थी। बस याद रही तो विदेशी शासकों की चापलूसी और अपनी धनसम्पदा की चिन्ता।

लुधियाना जाते सतगुरु जी को याद आ रहा था जब सूबा साहिब सिंह नेपाल के राणा जंग बहादुर को मिलने नेपाल गया था तो साहिब सिंह ने रास्ते में किसानों, कमेरों, कुटीर उद्योग की जो दुर्दशा देखी थी, उसे बयान करते हुए सूबा साहिब सिंह रो पड़ा था। उसने बताया था कि कैसे अंग्रेज गर्वनर जनरल वारेन हैस्टिंगज ने अवध की बेगमों से उनके जेवरात लूटे थे।

सूबा साहिब सिंह को बंगाल के कई किसान नेपाल भारत सीमा पर मिले थे जो अंग्रेजी जुल्म के कारण यहां आ बसे थे। वे बता रहे थे कि कम्पनी सरकार ने भारतीय किसानों के मुकाबले गोरे किसानों को सरकार की ओर से नील की खेती के लिए कर्ज दिया जाता था जबकि भारतीय किसानों से लगान वसूली के लिए टुकडियां भेज कर लगान की वसूली की जाती थी और इन टुकडियों का खर्च भी इन किसानों से वसूल किया जाता था। कम्पनी सरकार ने नील के कारखाने लगाने की और ध्यान दिया।

पहला कारखाना 1813 ईस्वी में लगाया गया जो रेलवे स्टेशन से एक किलोमीटर दूर ही था। 1850 तक नील के भाव इतने बढ़ गये कि वहां चीनी के कराखानों की जगह नील के कारखाने लगने लगे। नील के 21 कारखानों में करीब चार हजार कामगार काम करते थे। सरकार द्वारा नील की खेती न करने वाले किसानों पर मुकदमे चलाकर उन्हें सजा दी जाती थी।

कम्पनी सरकार ने लगान में 50 से 70 प्रतिशत की वृद्धि कर दी। इसके विरुद्ध ''लगान न दो'' का आन्दोलन भी चला जिसे कम्पनी सरकार ने गोलियां चलाकर दबा दिया। अकाल पड़ने पर भी सरकार ने लगान में माफी नहीं दी। पीड़ित किसानों की सम्पति कुर्क की जाती रही।

कम्पनी सरकार ने हिन्दु मुस्लिम के बीच साम्प्रादयिक दीवारें खड़ी कर दी जिस कारण कई बार हिन्दु-मुस्लिम दंगे भी हुए।

सूबा साहिब सिंह नेपाल में राणा जंग बहादुर से मिला पर कोई सकारात्मक उत्तर नहीं मिला। असल में राणा अंग्रेजों के विरुद्ध किसी भी तरह के कार्यक्रम में शामिल नहीं होना चाहता था।

नेपाली गोरखों की बड़ी संख्या कम्पनी सरकार में नौकर थी और गोरखों की वफादारी को राणा खोना नहीं चाहता था। क्योंकि कम्पनी और किसी से अधिक गोरखों पर अधिक विश्वास करती थी। शायद इसलिए भैणी में भी गोरखा पुलिस भेजी गई थी। अंग्रेज अधिकारी ये कतई मानने को तैयार नहीं थे कि नामधारी अन्दोलन, राजनीतिक नहीं है। हालांकि ये ऊपर से धार्मिक आन्दोलन ही था। सतगुरु जी के विषय में सभी अधिकारी एकमत थे कि उनका धैर्य, गम्भीरता अपने अनुयायियों से किसी भी क्षण कुछ भी करवा सकती है।

ये सतगुरु जी का स्पष्ट प्रभाव दृष्टिगोचर हो रहा था जब फांसी पाने वाले सिख सिंह जैसे दहाड़ते हुए ये कहते थे कि 9 मास फिर किसी मां की कोख से जन्म लेकर पैदा होंगे और फिर तुझसे बदला लेंगे।

नामधारी संगठन की सक्रियता को देखकर ऊपर से नीचे तक सभी अंग्रेज हैरान थे। वे तो समझते थे कि अब सिखों की ओर से प्रतिकार करने वाला कोई नहीं रहा। भंयकर लड़ाईयों के कारण सिख सम्प्रदाय बुरी तरह से टूट चुका होगा। उनके विरुद्ध अब कौन सिर उठा सकेगा।

अंग्रेजी अधिकारियों का ये भी मानना था कि इस आन्दोलन का नेता साधु संतों की भांति नहीं रहता। जब कभी वह दौरे पर निकलता है तो उसके साथ विश्वासपात्र सहायकों की काफी संख्या होती है।

उनके सभी प्रमुख सहायक या सूबे, हिम्मती, साहसी, बुद्धिमान और पूरी तरह सेहतमन्द थे। कोई भी अधिकारी इतनी हिम्मत नहीं कर सकता था कि सतगुरु जी पर खुली अदालत में मुकदमा चलाए।

सरकार को जब नामधारी डाक प्रबंध का पता चला तो उसके पैरों तले से जमीन खिसक गई। संदेश पहुंचाने की नामधारियों की ये मौलिक कल्पना कभी भी खतरनाक रूप ले सकती थी। मलेरकोटला के विद्रोह की घटना को पंजाब सरकार हाथ में आया एक सुनहरी अवसर मान रही थी। यही समय था जब सतगुरु जी के विरुद्ध सख्त व ठोस कार्यवाही की जा सकती थी।

आनन-फानन में उच्च अधिकारियों की मीटिंग में ये फैसला किया गया कि हाथ में आए अवसर का सदुपयोग करके विस्फोट के नेता राम सिंह को देश निर्वासित करके देश से दूर भेज दिया जाए क्योंकि जब तक कूका बागियों का यह नेता पंजाब में रहेगा पंजाब में कुछ न कुछ होता रहेगा। तुरन्त लुधियाना के कमिश्नर को इस सम्बंध में आदेश भेज दिया गया। कमिश्नर ने डी आई जी कर्नल बेली को आदेश दिया कि सेना व पुलिस की सहायता से गुरु राम सिंह और उसके प्रमुख सूबों को भैणी से बंदी बना कर लुधियाना लाया जाए। अगर कूकों की ओर से किसी मुकाबले की आंशका हो तो साहनेवाल से गोरखों की एक कम्पनी मंगवा ली जाए।

उधर पंजाब सरकार ने अपनी कार्यवाही की सूचना भारत सरकार के सचिव को भेज दी। पंजाब के गर्वनर ने सतगुरु जी की गिरफ्तारी के लिए बातचीत करके अम्बाला फौजी डिविजन के जनरल टायलर को आदेश दिया कि तुरन्त ही भैणी गांव पहुंचे। यदि सभी व्यक्ति पकड़े गए तो उन्हें लुधियाना से इलाहाबाद के किले में भेज दिया जाएगा। क्योंकि गर्वनर साहब उन्हें पंजाब में रखना ठीक नहीं समझते। इन्हें इलाहबाद से आगे कही भेजा जाएगा। इस पर बाद में विचार किया जाएगा।

कानून की रखवाली कम्पनी सरकार ने गिरफ्तारी वारन्ट के बिना ही ये सब कार्यवाही अंजाम दी।

वाइसराय को पत्र लिखकर इन समस्त व्यक्तियों के विरुद्ध 1818 के रैगुलेशन की धारा तीन के अनुसार वारन्ट जारी करने का अनुरोध किया गया।

सतगुरु जी ने प्रत्येक स्थिति में अधिकारियों को सहयोग दिया। कावन के बुलाने पर सतगुरु जी मलौद गए। वहां कावन ने सतगुरु जी से पूछताछ की। उन पर इस उपद्रव में शामिल होने का आरोप लगाया गया। सतगुरु जी ने इस पूरी घटना में अपना हाथ होने से पूरी तरह इंकार कर दिया। पर सतगुरु जी के स्पष्टिकरण से अंग्रेज अधिकारी संतुष्ट नहीं हुए। वापसी में सतगुरु जी ने तोपों के चलने की आवाजें सुनी। सतगुरु जी मौन चलते रहे और परमपिता का आभार मानते रहे। क्योंकि पूरी सृष्टि में उस परमात्मा की इच्छा के बिना पत्ता नहीं हिल सकता। 'करन करावन आपे आप। मानुस के कुछ नाहीं हाथ।'

सतगुरु जी महसूस कर रहे थे कि बहुत जल्दी ही कुछ अनचाहा होने जा रहा है। सतगुरु जी के भैणी पहुंचने पर वहां पहले से ही उपस्थित इंसपेक्टर शाहवली खां और गुलाब सिंह ने कमिश्नर का वह आदेश सुनाया कि वे तत्काल लुधियाना उपस्थित हों। सतगुरु जी इसी तरह की अनहोनी का आभास कर रहे थे। कोटला के इस अनचाहे विस्फोट का परिणाम इससे बढ़कर क्या हो सकता है। इसी कारण उनकी स्वतंत्रता, उनकी मातृभूमि, सबसे उन्हें दूर कर दिया जाएगा। कमिश्नर फोरसाइथ से तुरन्त आदेश पाकर कर्नल बेली लेफिटनेंट ग्रीन के नेतृत्व में 12 नम्बर रसाले के 25 सवार तथा पुलिस के कुछ सिपाही लेकर मलौद से चल पड़ा। रास्ते में सूचना मिली की इंसपेक्टर शाहवली खां और गुलाब सिंह गार्द के पहरे में चार प्रमुख सूबों के साथ सतगुरु जी को लेकर लुधियाना चल पड़े हैं।

सतगुरु जी 17 जनवरी की रात एक बजे लुधियाना पहुंचे। कमिश्नर फोरसाइथ ने सतगुरु जी से फिर वहीं प्रश्न पूछे। पहला सवाल था कि

"ये सब आपकी जानकारी में हुआ है।"

सतगुरु जी ने इस बात से इंकार कर दिया।

"क्या कसाईवध आपकी इच्छा या सहमति से किया गया"

सतगुरु जी ने इसके लिए भी इंकार किया।

"आप अपने लोगों को कम्पनी सरकार के विरुद्ध भड़का रहे हैं?"

सतगुरु जी ने इस बात से इंकार करते हुए कहा कि मैं उन लोगों को सत्याधारित जीवन जीने की राह बताता हूं।

"आप ने अपनी डाक व्यवस्था बनाई है।"

"ये डाक व्यवस्था बहुत पुरानी है। पुरातन काल में इसी तरह की डाक व्यवस्था का चलन रहा है। हमने कुछ नया नहीं किया।" सतगुरु जी का उत्तर था।

ये सरकार के विरुद्ध है। कमिश्नर ने पूछा?

ये आप मानते हैं, हम नहीं मानते।" सतगुरु जी का उत्तर था।

"आप जानते है इस सब का परिणाम क्या होगा।"

सतगुरु जी ने मुस्कराते हुए उत्तर दिया। "इस सब का परिणाम तुम भी जानते हो और मैं भी जानता हूं।"

"सत्ता तुम्हारे हाथ में है जैसे चाहे कर लो" सतगुरु जी ने कहा।

"आप जानते हैं, सरकार के विरुद्ध बगावत का क्या अंजाम होता है।"

हां हम जानते है।" सतगुरु जी का उत्तर था।

"सत्य की बात करना, सत्य बोलने का परिणाम अमृतसर और लुधियाना में फांसी दे कर दिखा चुके हो। लेकिन क्या इससे सत्य के मार्ग पर चलने वाले पीछे हट जाएंगे। ऐसा कदापि नहीं होगा।"

"अभी तुम्हें इलाहबाद भेजा जा रहा है। बाद में तय होगा कि देश से बाहर कहां भेजा जाएं।" कमिश्नर ने कहा।

"जब हमने इस मार्ग पर पैर रखा था तब ऐसे परिणामों की परवाह नहीं की थी। परवाह की होती तो ये मार्ग नहीं चुनते अपनी खेती बाड़ी करते या दुकान चलाते।" ये सुनकर कमिश्नर चुप रहा!

"तुमने कारखाने लगाकर हथकरघा उद्योग को पूरी तरह से तबाह कर दिया है। तुम्हें तो अपना माल ऊँचे दामों में बेचकर मुनाफा कमा कर इंग्लैड में भेजना था।" सतगुरु जी कमिश्नर से कहा।

"ये झूठ है! हम इण्डिया की तरक्की कर रहे हैं। यहां के अनपढ़ लोगों को काम दे रहे है, मजदूरी दे रहे है, हमने सड़कें बनाई रेल गाड़ियां चलवाई। क्या यह हिन्दुस्तानियों की तरक्की नहीं है।" कमिश्नर ने सतगुरु जी से कहा -

"तुम इसे तरक्की कह सकते हो। तुमने रेलवे चलाई तो बन्दरगाहों से कच्चा माल शहरों में लाने के लिए और कारखानों का तैयार माल बन्दरगाहों तक ले जाना ही मुख्य उददे्श्य है। तुम हमारे देश का धन अपने देश पंहुचा रहे हो। गरीब और गरीब हो रहा है और तुम धनवान" सतगुरु जी ने उत्तर दिया।

सतगुरु जी अगर पंजाब में रहते तो अंग्रेज सरकार जो चाहती थी वह निर्विध्न नहीं कर सकती थी।

सरकारी आदेश पर स्थानीय स्कूलों को नाममात्र की जो सरकारी मदद दी जाती थी वह भी बंद कर दी गई। 1857 के गदर के बाद इंग्लैड की रानी विक्टोरिया को एक ज्ञापन दिया गया कि देश के सभी सरकारी स्कूलों में बाइबल पढ़ाई जाए। लुधियाना के मिशनरी स्कूलों ने इस बात का नेतृत्व किया। इन मिशनरी स्कूलों के पादरी पढ़े लिखे भी थे और स्कूलों का प्रबन्ध भी अच्छा था। ग्राट एंड ऐड का सिलसिला विधिवत शुरु किया गया।

इंगलैड की संसद में इस तरह के अधिक अनुदान पर जोर दिया गया। सरकारी स्कूलों में पढ़े लिखे लोगों को सरकारी नौकरी मिलने लगी। इस कारण सरकार को गुलाम लोगों का नया वर्ग मिल गया जो सरकार के गुणगान करने में अपना हित समझने लगे थे।

उधर लार्ड मैकाले को संसद का ला मेम्बर बनाया गया तो लार्ड मैकाले ने संसद में यह घोषणा की कि राज्य प्रबन्ध और अदालतों की भाषा अंग्रेजी होगी और केवल अंग्रेजी पढ़ा लिखा व्यक्ति ही सरकारी नौकरी कर सकता है। इसी के साथ शहरों व गांवों में घड़ाघड़ सरकारी मिशनरी स्कूल खोले जाने लगे।

सरकारी मिशनरी स्कूलों के चलन के पीछे अंग्रेजों का एक ही मकसद था कि भारतीयों को अपनी सभ्यता और संस्कृति से अलग कर दिया जाए। कुर्ता पजामें या
धोती के बदले पेंट कमीज का प्रयोग किया जाने लगा। इसी के साथ इन लोगों द्वारा अपने गौरवमयी इतिहास और पुरखों के अभियान को भूला दिया जाने लगा।

जो अंग्रेज चाहते थे वही होने लगा। अभी तक सिखों का एक वर्ग अंग्रेजों की चापलूसी करने में लग गया। प्रसिद्ध सिख दयाल सिंह मजीठिया ने अपनी अमीरी और प्रभुता को बनाए रखने के लिए अमृतसर के खालसा स्कूल/कॉलेज वाली जगह पर गिरजाघर बनाकर अंग्रेजी आकाओं को उपहार स्वरूप दिया। अब यह अमीर सिख अमृतसर के श्री हरिमन्दिर की जगह गिरजाघर की ओर ललचाई दृष्टि से देखने लगे।

अपनी मातृभाषा के प्रति लगाव का मुख्य कारण यही था कि सतगुरु जी लोगों को अपने गौरवशाली इतिहास और अस्मिता के साथ जोड़े रखना चाहते थे। ये सब अपनी मातृभाषा में ही सम्भव हो सकता था। विदेशी भाषा में ये सब सम्भव नहीं था। मातृभाषा अपनी लोक संस्कृति की संवाहिका होती है जो नदी के पानी की भांति प्रवाहित होती रहती है।

लुधियाना में सुरक्षा कारणों की पूरी जांच पड़ताल करने के बाद भारी गार्द

के पहरे में सतगुरु जी को प्रमुख सूबों के साथ रेलगाड़ी में बिठाकर इलाहबाद के किले में भेज दिया गया। हैरानी वाली बात यह है कि पूरे प्रकरण में सतगुरु जी व प्रमुख सूबों की गिरफ्तारी बिना किसी वारन्ट के की गई।

इलाहाबाद में ही सतगुरु जी को मजिस्ट्रेट के सम्मुख पेश किया गया। पंजाब सरकार के लिए सतगुरु जी के विरुद्व किसी भी भांति की कोई गिरफ्तारी सम्भव नहीं हो पाएगी। न ही खुला मुकदमा सम्भव था।

लुधियाना रेलवे स्टेशन को पूरी छावनी बना दिया गया था। एक हैरानी की बात यह भी थी कि अंग्रेजों को भारतीयों पर जरा सा भी विश्वास नहीं था तभी तो लुधियाना से युरोपीय तथा गोरखा सैनिकों की निगरानी में सतगुरु जी को भेजा गया। इलाहाबाद के किले में भी भारतीय सैनिकों की तैनाती हटाकर उनके स्थान पर गोरखा व युरोपीय सैनिकों की तैनाती कर दी गई। इलाहबाद किले की सुरक्षा के प्रबन्ध और पुख्ता किये गये ताकि किसी तरह के उपद्रव या अनहोनी की आंशका न रहे।

हालांकि सतगुरु जी तो प्रत्येक अवस्था में ईश्वरीय आज्ञा को सर्वोपरि मानते थे। उन्होंने अंग्रेजी सरकार द्वारा अपने अनुयायियों को इतनी जघन्य सजा देने का किसी भी स्थिति में विरोध या प्रतिकार नहीं किया। सतगुरु जी को इलाहाबाद भेजने के बाद उनके सेवकों ने भी कोई प्रतिकार नहीं किया। इतिहास में आता है कि जब श्री गुरु हरगोबिन्द साहिब को ग्वालियर के किले में नजरबंद किया गया था जो उस समय तो पंजाब से उनके सिख भेष बदलकर ग्वालियर आया करते थे। मुगल शासन भी कोई कम शक्तिशाली तथा कम भयानक नहीं था। पर जब सिखों ने जान हथेली पर रख ली तब मृत्यु से क्या डरना, मृत्यु इन सिखों से डर मानती है।

इलहाबाद के किले में आपके प्रमुख सहयोगी आपके साथ थे। ये बात भी अंग्रेजी शासन को हजम नहीं हो रही थी। सतगुरु जी समझ रहे थे कि इलाहाबाद का किला उनकी सजा का एक पड़ाव ही था। अभी सरकार इससे आगे क्या कदम उठाती है इसकी भनक किसी को नहीं थी। अंग्रेजी शासन से न्याय की उम्मीद करना तो बेमानी ही था। वह रणजीत सिंह के साथ कई सम्मानजनक समझौते कर चुकी थी पर वह किसी भी समझोते पर कायम नहीं रही।

धूर्त्त षड़यत्रों व चालबाजियों से एशिया के सबसे बड़े स्वतंत्र राज्य का मटियामेट कर दिया तथा एशिया की सबसे बहादुर कौम सिखों को बुरी तरह से जातियों, उपजातियों तथा आस्थाओं में बांट कर उन्हें एक दूसरे का शत्रु बना कर

एक दूसरे के सामने खड़ा कर दिया।

सरकार साहिब सिंह को सबसे अधिक कुशल, गोपनीय डाक व्यवस्था चलाने वाला, राजनीतिक लक्ष्य को पूरा करने वाला सतगुरु जी का उत्तराधिकारी तथा अधिक खतरनाक समझती थी। उसके पंजाब रहने पर समुदाय में पुनः जीवनदान हो सकता है। सूबा लक्खा सिंह को भी कम खतरनाक नहीं माना जाता था। सरकार का मानना था कि सभी विस्फोटों के पीछे और कोटला आक्रमण के पीछे उसी का हाथ था। सरकार के खिलाफ सम्प्रदाय को भड़काने का काम भी यही व्यक्ति करता था।

उधर पटियाला के राजा ने पंजाब सरकार के सचिव को पत्र लिखा– ''कई प्रमाणों से ये प्रमाणित होता है कि राम सिंह का वास्तविक उद्देश्य राज्य को छीनना था। उसने बड़ी चालाकी और धूर्तता से ये विचार अपने अनपढ़ और अन्ध ाविश्वासी अनुयायियों के दिमागों में भर दिया था कि उसका धर्म फैल जाएगा तथा जल्दी ही सरकार उसके हाथ में होगी। वह सदैव इस बात के लिए उनमें जोश भरता था। उसके अनुयायी अन्धविश्वास और धर्माग्रह से भरे हैं कि उनकी बात सत्य साबित होगी। उसी ने गौ हत्या में कसाईयों को मारने के घृणित कार्य के लिए उकसाया।

अगर कूकों का मलौद व कोटला के हमलों में जरा भी सफलता मिल जाती तो वे इससे बड़े हमले करते। दोनों अधिकारियों ने इन बागियों के विरुद्ध उचित कदम उठाकर उन्हें सजा देने में देर नहीं की। इससे बुराई आरम्भ में में ही दबा दी गई। ''वाह रे महाराजा की विचारधारा।''

कमिश्नर कार्यालय से भैणी गांव तक जो सड़कें सदैव गुलजार रहा करती थीं। आने जाने की भीड़ लगी रहती थी आज वहीं सड़कें वीरान बनी कुछ अनहोनी की गवाही दे रही है। जहां गुरवाणी गायन की आवाजें आती थी अब वहां चुप्पी छाई हुई थी। गोरी सरकार के साथ 5-7 घुडसवारों की शहर में गश्त जारी थी। 4 से ज्यादा व्यक्तियों के जमा होने पर पाबन्दी थी जिस पर सख्ती से अमल करवाने के लिए सिपाहियों की गश्त जारी थी।

जब सतगुरु जी को लुधियाना स्टेशन से इलाहाबाद के लिए आपके प्रमुख सूबों व सहायकों के साथ भेजा जा रहा था तब सारा लुधियाना स्टेशन खाली करवा लिया था और स्टेशन को पुलिस छावनी बना दिया था। इनमें योरपीन अधिकारियों तथा गोरखा पुलिस की अधिकता ही थी। अब गोरखों के अतिरिक्त गोरी सरकार को किसी अन्य पर विश्वास हीं नहीं था। सतगुरु जी के सिखों के घरों में अफसोस

का वातावरण था। अब न जाने कब सतगुरु जी के दर्शन होगे। होंगे भी या नहीं होंगे। क्या ये जीवन यूं ही व्यर्थ चला जाएगा।

वहीं दूसरी ओर चापलूस और पराधीनता की नींद सोने वालों के घरों में रौनक थी। प्रसन्नता का वातावरण था। गोरी सरकार को चुनोती देने वाला अब पंजाब से दूर चला गया है। इसी के साथ पंजाब में उसका चलाया आन्दोलन भी ठप्प हो जाएगा। भैणी गांव में पुलिस चौकी बिठा दी गई है। कौन अब वैसी हिम्मत करेगा या करने के विषय में विचार करेगा। उनके प्रमुख सूबे जिनको सरकार खतरनाक समझती थी, उन सभी को सतगुरु जी के साथ इलाहबाद भेज दिया गया। बाकी गिरफ्तारियां अभी चल रही थीं।

रानी विक्टोरिया की ओर से पंजाब सरकार के सभी सिख राजाओं को सहायता करने के लिए प्रशंसा पत्र लिखे और ये भी विश्वास दोहराया कि ये उपरोक्त सिख राजा भविष्य में भी सरकार की सहायता करते रहेंगे। पटियाला को इस सहायता पर विशेष मैडल दिया गया और विशेष स्वामीभक्त का दर्जा दिया गया। कमिश्नर फोरसाइथ ने कावन के साथ सलाह कर के उन सभी कूकों के घरों की कुर्की के आदेश पारित कर दिये। इन सभी के सम्बन्धियों को थाने बुलाकर सबकी जमानतें ली गई। जिनसे जमानतों के पैसे वसूल नहीं हुए उन्हें जेल की हवा खानी पड़ी।

अधिकारियों ने इस समय किसी बीमार या बूढ़े को भी नहीं बख्शा। हुक्म की तामील करने के लिए कोई रहमदिली नहीं दिखाई गई। बल्कि इसके लिए सख्ती का इस्तेमाल किया गया। सरकार ने इस समय इन कूकों के दूर के रिश्तेदारों को भी नहीं छोड़ा। इतना होने के बाद भी किसी कूके सिख ने सरकार से रहम नहीं मांगा।

सभी कूके इस हालात में भी परमात्मा का धन्यवाद ही करते रहे। और सरकारी जुल्म सहते रहे। कूका केन्द्रों की निगरानी होती रही। ज्यादातर केन्द्रों को बन्द ही करवा दिया गया ताकि यहां किसी भी भांति की सरकार विरोधी गतिविधि ा की कोई सम्भावना ही न बन सके।

सिपाही गुरनाम सिंह रात के समय घर आया और जूते व कपड़े उतार कर रात के कपड़े पहन रहा था और रसोई में आकर चूल्हे के आगे बैठ गया। उसका लड़का व लड़की पहले से ही वहां बैठे थे पत्नी ने सरसों का साग और मक्के की रोटी बनाई थी। ये दोनों उसको तथा उसके पिता को विशेष तौर पर प्रिय थी तथा इसीलिए पत्नी को आदेश था कि सर्दियों में सरसों का साग और मक्का की रोटी

सप्ताह में एक-दो दिन में जरूर बनाई जाए।

"कल बसंत पंचमी है" पत्नी ने मक्के की रोटी थाली में रखते हुए कहा। सिपाही गुरनाम सिंह ने कोई उत्तर नहीं दिया। उसका दिमाग घूम गया। बसन्त पंचमी के दिन भैणी गांव में कितनी रौनक होती थी। सभी ओर से श्रद्धालु सतगुरु राम सिंह जी के दर्शन करने भैणी गांव पहुचंते थे। बसन्त पंचमी को सतगुरु राम सिंह का आगमन दिवस होता है। हर श्रृद्धालु इस दिन अपने गुरु को माथा टेकने और गुरु दर्शन को अवश्य आता था। सभी गुरुवाणी का कीर्तन सुनते। सारा दिन लंगर चलता। आपसी मेल मिलाप भी चलता। आज भैणी में रौनक नहीं थी। पुलिस की सरकारी चौकी भैणी डेरे की निगरानी कर रही थी।

पंजाब सरकार की ओर से पटियाला, नाभा, जीन्द, कपूरथला के राजाओं को धन्यवाद पत्र के साथ उन्हें सरकार के वफादार होने का तमगा भी दिया। इसी के साथ पंजाब के सभी प्रमुख सिख जागीरदारों ने भी सरकार की वफादारी में एकमत से कमिशनर और कावन के पक्ष में पत्र लिखे।

अमृतसर के सभी वर्गों के सिखों, जागीरदारों ने पत्र लिख कर पंजाब सरकार को भेजा। इस सबकी अध्यक्षता सरकारी पत्रकार और स्वामीभक्त दयाल सिंह मजीठिये ने की। जो गोरी सरकार के आने के साथ ही उसकी चाटुकारिता में जुट गया था। इस पत्र पर दयाल सिंह मजीठिया के अतिरिक्त बख्शीश सिंह, ठाकर सिंह सन्धावालिये, भगवान सिंह मजीठिया, जवाहर, जफरवाल, मंगल सिंह रामगढ़िया, अजीत सिंह अटारी वाले।

ये सभी रईस और जागीरदार नहीं चाहते थे कि साधारण घर में जन्मा यह व्यक्ति प्रसिद्ध की इतनी ऊँची चोटी पर जा पहुंचे और उसके पीछे श्रृद्धालुओं की इतनी लम्बी भीड़ खड़ी हो जाए। दूसरी बात ये भी थी कि सतगुरु राम सिंह जी जागीरदार प्रणाली के विरुद्व थे। आप ऊँच नीच को मिटा रहे थे और यही गुरु नानक देव जी का उपदेश भी था।

दूसरा पत्र विशन सिंह कलासिया की तरफ से भेजा गया। इसमें कमिश्नर व कावन के काम की प्रशंसा की गई थी।

एक पत्र करनाल के रईसों की ओर से लिखा गया। इस पर करनाल के नवाब शमशेर अली खान के अलावा मोहम्मद अली खान, मेहर इलाही खान, अकरम खान, नवाब कमरुद्दीन खान, लाला नन्द लाल, नारायण दास, लाला मक्खन लाल, शिव दयाल, चारों म्यूनिसिपल कमेटी के सदस्य थे। मीर अलीखान जागीरदार, द्वारका दास साहूकार, जुगल किशोर कानूनगो, सैयद हशमत अली खान,

अमीर अली खान, मोहम्मद हुसैन जागीरदार, सैयद वजीर अली खान, इनायत अली खान, भोला नाथ महाजन के हस्ताक्षर थे।

एक पत्र जगाधरी तहसील की ओर से भेजा गया। जिसमें 6 सिख रईसों, 2 मुसलमाल रईस तथा 66 हिन्दू रईसों के हस्ताक्षर थे। एक पत्र रियासत बूड़ियां के जीवन सिंह आनरेटी मजिस्ट्रेंट के अलावा सरदार गुरबख्श सिंह, रईस हरदित सिंह जागीरदार के साथ 12 हिन्दू रईसों के हस्ताक्षर थे।

एक पत्र मछरोली रियासत के प्रताप सिंह मछरोली के अतिरिक्त इन्द्र सिंह लाडवा कला, जम सिंह चंगोली, सन्तोष सिंह मछरोली, फतेह सिंह जागीरदार, सन्त सिंह जागीरदार, कृपाल सिंह रईस, कृपाल सिंह, ईश्वर सिंह, लहना सिंह जागीरदार द्वारा भेजा गया।

जिला अम्बाला की ओर से राजा भगवान सिंह मनीमाजरा के अलावा राजा हीरा सिंह, खीवन सिंह मलोहा, फतेह सिंह जागीरदार, काकामल महाजन, काला सिंह, देवा सिंह रईस, मन्नू लाल चौधरी, मनीमाजरा के अतिरिक्त 17 अन्य लोगों के हस्ताक्षर थे।

जिला होशियार पुर के 140 जैलदार, लम्बरदारों के अतिरिक्त राजा हमीहुल्ला खान, अमीर चन्द महाजन, शिव प्रसाद जागीरदार आदि के हस्ताक्षर थे।

इस काम में आनन्दपुर साहब के सोढ़ी, बेदी कैसे पीछे रह सकते थे। वे तो प्रारम्भ से ही सतगुरु राम सिंह जी के तथा उनके कार्यक्रमों के विरुद्व थे। गोरी सरकार के अधिकारियों का समर्थन करते हुए 40 जैलदारों, लम्बरदारों, सोढ़ियो, बेदियों के हस्ताक्षर थे।

उधर सिपाही गुरनाम सिंह ने खाना समाप्त करके पत्नी व लड़के को पास बुलाकर कहा- ''हमें अभी कहीं जाना है।''

''जल्दी ही वापिस आ जाएंगे।''

''चादरें लेकर मुंह लपेट लो।''

कहां जाना है-

यह मत पूछो- वह जो आले में दीये रखे हैं उन्हें उठा लो सरसों का तेल साथ ले लो। कोटला के मैदान में जाना है। पत्नी ने सुना पर कुछ बोली नहीं। बेटे को साथ लेकर वह गुरनाम सिंह के पीछे चल पड़ी। तीनों तेज कदमों से कोटला मैदान की ओर चल पड़े।

कोटला मैदान में पहुंचकर गुरनाम सिंह ने देखा जहां कूका सिखों को तोपों से उड़ाया गया था। गुरनाम सिंह ने थोड़ा सा मुंह नंगा किया और दीये वहीं रखकर

उनमें तेल डाला और दीये जला दिये। दोनों हाथ जोड़कर उस स्थान को नमन किया और वहां की माटी को हाथ में लेकर मस्तक पर लगाई और तीनों वापिस चल पड़े। अभी भी शहीदों की हड्डियां इधर उधर बिखरी पड़ी थी।

गुरनाम सिंह ने देखा कि जहां बिशन सिंह की शहदात हुई थी वहां पहले से एक दीया टिमटमा रहा था। दीये के सम्मुख सिर झुका कर भारी कदमों से गुरनाम सिंह घर की तरफ लौट रहा था। पत्नी और बच्चा उसके पीछे चल रहे थे।

'एक दिन यहां बड़ा तीर्थ बनेगा। यहां मेले लगा करेंगे। लोग यहां आकर मन्नतें मांगा करेंगे'-बेटे को समझाते हुए सिपाही गुरनाम सिंह ने कहा।

गुरनाम सिंह की पत्नी व बेटा कुछ नहीं बोले और थोड़ी देर में वह घर के भीतर आ गये।

''मिट जाते जो मातृ भूमि पर बन जाते इतिहास।
मस्तक उनकी धूल लगाने झुक जाता आकाश।।''

WARRANT OF GURU RAM SINGH

No. 46

To

THE CHIEF COMMISSIONER OF BRITISH BURMAH.

WHEREAS the Governor General in Council, for good and sufficient reasons, has seen fit to determine that Ram Singh

shall be placed under personal restraint in British Burmah, you are hereby required and commanded, in pursuance of that determination, to receive the person abovenamed into your custody, and to deal with him in conformity to the orders of the Governor General in Council, and the provisions of Regulation III. of 1818.

By Order of the Governor General in Council,

9/3/72

Secy. to the Govt. of India, in the Home Dept.

FORT WILLIAM;
The 9 March 1872.
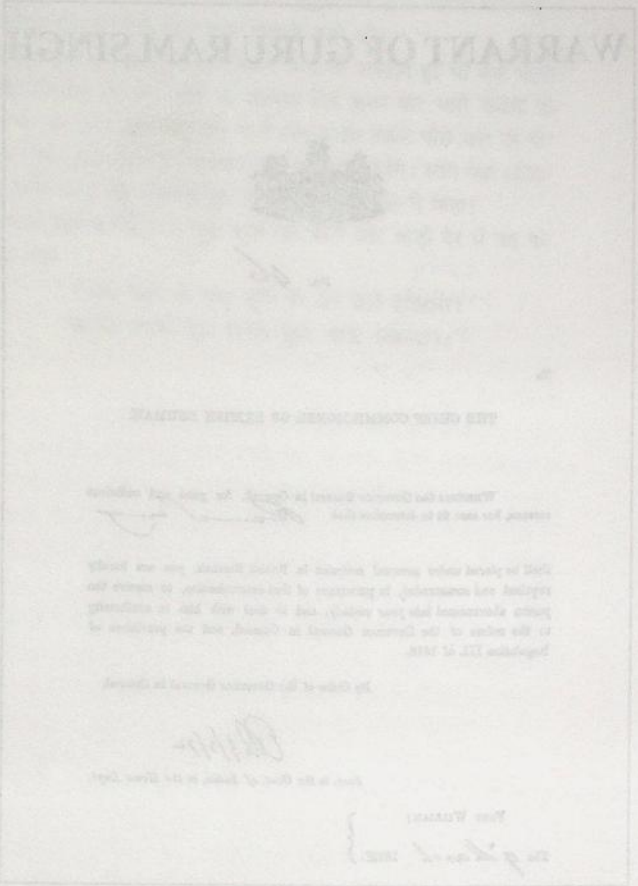
लेखक परिचय

सुरजीत सिंह जोबन

पिता - स्व. ज्ञानी अमर सिंह जोबन, स्वतंत्रता सेनानी

स्नातकोत्तर : हिन्दी व राजनीति शास्त्र

पिछले 40 सालों से सक्रिय लेखन

हिन्दी व पंजाबी पत्रकारिता का लम्बा अनुभव

अनेकों संस्थाओं द्वारा सम्मानित

धार्मिक, साहित्यिक, सामाजिक व शैक्षिक संस्थाओं में भागीदारी
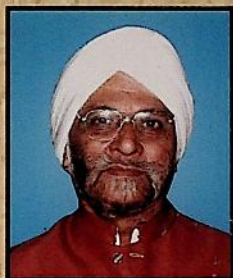
प्रकाशित पुस्तकें

रामगढ़िया शिरोमणी

महाबलिदानी गुरु तेग बहादुर

युगद्रष्टा गुरु गोबिंद सिंह

उर्मिला (खण्डकाव्य)

संत कवि गुरु गोबिंद सिंह

जपुजी साहिब - सुनिए दुख पाप का नास

युगनायक सतगुरु राम सिंह

दिल्ली विजेता महाराजा जस्सा सिंह रामगढ़िया

मासिक पत्रिका कैपिटल रिपोर्टर का 1980 से संपादन व स्वतंत्र लेखन

पता : 313/4 डी, (11-ए) इन्द्रलोक कालोनी, दिल्ली-110035

संपर्क : 09310330013